सत्यमेव जयते

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

अक्तूबर–दिसम्बर, 2019

आध्यात्मिक पर्यटन अंक

बोधि वृक्ष

सत्यमेव जयते

वर्ष 5 • अंक–18 अक्टूबर–दिसम्बर, 2019

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

संरक्षक

श्री योगेन्द्र त्रिपाठी

सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता

श्री ज्ञान भूषण

आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

सम्पादक

श्रीमती संतोष सिल्पोकर

संयुक्त निदेशक, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रबंध–संपादक

श्री मोहन सिंह

कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय

अन्य सहयोगी

श्री राज कुमार

निजी सचिव

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें

संपादक,

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,

7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग,

36, जनपथ, नई दिल्ली – 110011. दूरभाष : 011–23724255

ई–मेल– editor.atulybharat@gmail.com

सूचनाओं के प्रचार हेतु निःशुल्क वितरण

इस अंक में...

वर्ष 5 • अंक–18 अक्टूबर–दिसम्बर, 2019

05
संपादक की कलम से

18
विरासत और आध्यात्म का शहर : कटक

07
आध्यात्मिक पर्यटन : एक अवलोकन

25
पिन्डोरी धाम

13
नीति या रणनीति

32
रामटेक का गढ़ मंदिर

38
कलियार शरीफ

54
मानसरोवर यात्रा

43
एक कॉस्मोपोलिटन शहर

75
एक भारत, श्रेष्ठ भारत

80
दुमदार जी की दुम
(एक व्यंग्य कथा)

47
किन्नर कैलाश

85
कविताएं

86
पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियां

परामर्शदाता व प्रधान संपादक
ज्ञान भूषण, आई.ई.एस.
आर्थिक सलाहकार
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान सम्पादक की कलम से...

'अतुल्य भारत' का 18वां अंक आध्यात्मिक पर्यटन विशेषांक के रूप में आपके सामने हैं। आध्यात्मिक–पर्यटन को मोटे तौर पर हम तीर्थ यात्रा भी कह सकते हैं। यद्यपि तीर्थ यात्रा करना विश्व में कोई नई बात नहीं है। हाल के वर्षों में इसे आध्यात्मिक–पर्यटन का नाम सम्भवतः इसलिए भी दिया गया है क्योंकि अब तीर्थयात्री केवल उस विशेष स्थान तक ही सीमित नहीं रहते बल्कि उसके आस पास रूचि के अन्य स्थानों पर भी जाने लगे हैं। इसी कड़ी में अब यह देखने में आया है कि तीर्थयात्री उस स्थान पर बेहतर सुविधाओं की आशा करते हैं, जिनमें अच्छे होटल्स तथा रेस्तरां के साथ साथ परिवहन के साधनों की बेहतर मौजूदगी भी शामिल है। "आध्यात्मिक पर्यटन" के बारे में श्री अश्वनी काचरू ने विस्तार से जानकारी दी है। इन सब बातों का डॉ. निमित चौधरी ने अपने लेख "पर्यटन : नीति या रणनीति? में उल्लेख किया है।

ऐसे ही आध्यात्मिक पर्यटन के कुछ शहरों और स्थानों के बारे में इस अंक में जानकारी दी जा रही है। श्री अबिनाश दास ने अपने आलेख "विरासत और आध्यात्म का शहर : कटक" के माध्यम से ओडिशा के शहर कटक के बारे में बताया है। इसके अतिरिक्त, पंजाब राज्य के गुरदास पुर में स्थित एक कम ज्ञात, पर महत्वपूर्ण आध्यात्मिक गंतव्य "पिण्डोरी धाम" के बारे में डॉ. विनोद कुमार ने पाठकों को सूचित किया है। श्री क्षेत्रपाल शर्मा ने महाराष्ट्र के नागपुर में प्रकृति की गोद में स्थित ऐतिहासिक और आध्यात्मिक गंतव्य "रामटेक" का उल्लेख किया है। इसी प्रकार, श्री मोहन सिंह ने हिमालय की तलहटी में हरिद्वार से कुछ ही किलोमीटर दूर स्थित एक आध्यात्मिक गंतव्य, "पीरन् कलियार" के बारे में सुधि पाठकों को जानकारी दी है। एक आध्यात्मिक शहर के तौर पर देश में वाराणसी का अपना एक अलग ही स्थान है। वाराणसी की कुछ अलग विशेषताएं भी हैं जिन्हें लेखकद्वय श्री सुमन कुमार तथा सत्येन्द्र प्रजापति ने अपने आलेख" एक कॉस्मोपोलिटन शहर" में रेखांकित किया है।

आध्यात्मिक पर्यटन में केवल मंदिर–मस्जिद ही नहीं, बल्कि पर्वतों की यात्राएं भी शामिल होती हैं। इस कड़ी में दो विशेष लेख शामिल किए गए हैं। एक है श्री पवन चौहान द्वारा हिमालय के

दुर्गम क्षेत्र में की गई ''किन्नर–कैलाश'' यात्रा। दूसरी है, श्री विनीत सोनी की ''मानसरोवर यात्रा''। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि 'मानसरोवर की यात्रा' कोई आसान पर्यटन नहीं है। पिछले अंक में भी आप इसका कुछ भाग पढ़ चुके हैं। इस दूसरी किश्त में श्री सोनी ने इस अविस्मरणीय यात्रा में अपने अनुभवों को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। यह लेख न केवल रूचिकर लगेगा बल्कि उन यात्रियों के लिए एक मार्गदर्शन भी प्रस्तुत करेगा, जो निकट भविष्य में ''मानसरोवर यात्रा'' करने के इच्छुक हैं। इनके अलावा, डॉ. विश्वरंजन ने पर्यटन मंत्रालय द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम ''एक भारत–श्रेष्ठ भारत'' का उल्लेख किया है। अब की बार श्री सुशान्त लीना, डॉ. विश्वरंजन और सत्येन्द्र प्रजापति की कविताओं को स्थान दिया गया है। सुशान्त सुप्रिय का एक व्यंग लेख ''दुमदार जी की दुम'' भी पाठकों को पसंद आएगा। हमेशा की तरह, पर्यटन मंत्रालय की गतिविधियां और समाचार भी प्रस्तुत किए गए हैं।

पर्यटन मंत्रालय भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सतत प्रयास कर रहा है और ''अतुल्य भारत'' पत्रिका निश्चित रूप से अपना योगदान दे रही है। इसके माध्यम से मंत्रालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा को दर्शाने का अवसर दिया जा रहा है। हम सभी लेखकों के सहयोग तथा गणमान्य व्यक्तियों के प्रोत्साहन के लिए उनका आभार व्यक्त करते हैं।

अतुल्य भारत पत्रिका को प्रोत्साहित करने के लिए हम माननीय पर्यटन मंत्री जी के आभारी हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन में हम आदरणीय सचिव (पर्यटन) महोदय का भी आभार व्यक्त करते हैं जो देश में पर्यटन के संवर्धन तथा प्रोत्साहन के लिए हमें सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं।

अंत में, सभी लेखकों तथा पाठकों का धन्यवाद करता हूं जो इस पत्रिका में निरंतर अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं। आपके विचारों तथा प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

(ज्ञान भूषण)

प्रधान संपादक

आध्यात्मिक पर्यटन

आध्यात्मिक पर्यटन : एक अवलोकन

– अश्वनी काचरू

मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त किसी न किसी सर्वोच्च शक्ति पर भरोसा करता है ऐसा विचार सिर्फ किसी एक विशेष पंथ या सम्प्रदाय में ही नहीं अपितु सभी धर्मों में भी पाया जाता है। मनुष्य का विश्वास है कि कोई न कोई ऐसी शक्ति जरूर है, जो इस सृष्टि का संचालन करती है। हमारा देश भारत उन देशो में से एक है जहां पर विश्व के अनेक धर्मों के लोग निवास करते हैं। इतना ही नहीं, सभी को अपने धर्म, परम्परा, वेश–भूषा के अनुसार रहने की पूरी स्वतंत्रता भी है, जिसको धार्मिक विचारों द्वारा अपनाई गई धर्मनिरपेक्ष परम्परा या विचारों की आजादी कहा जा सकता है। इसीलिए भारत देश महान है।

यही आस्था लम्बें समय से ही एक स्थल से दूसरें स्थलों अथवा देशों में जाने का एक विलक्षण माध्यम रही है। किसी धार्मिक स्थल की यात्रा तीर्थयात्रा कहा जाता था लेकिन अब यह मात्र एक यात्रा नहीं रही बल्कि पर्यटन का एक पर्याय बन गई है। प्राचीन काल से ही तीर्थयात्राएं करने की परम्परा देखने में आती है जिसे हम पर्यटन का सबसें पुराना स्वरूप कह सकते हैं। विश्व के विभिन्न भागों मे धर्म या अध्यात्म पर आधारित पर्यटन अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जैसे कि यूरोप में लूर्डेस (फ्रांस), फातिमा (सउदी अरब), मेडजूगोर्जे, बोस्निया–हर्जेगोविना, सउदी अरब में मक्का एवं भारत में कुम्भ, सबरीमलै, तिरूपति बालाजी, अमरनाथ आदि, ऐसे धार्मिक स्थल हैं जहां के आयोजनों में देश और विदेशों से लाखों की संख्या में लोग यात्रा करते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य होता है कि अपने देवत्य एवं पवित्र स्थलों पर जा कर व्यक्तिगत रूप में अध्यात्मिक शान्ति प्राप्त कर सकें।

*सहायक प्रवक्ता, होटल प्रबंध संस्थान,गुरदासपुर(पंजाब)

पुराणकारों ने पवित्र स्थलों के तीन कारण बतायें:

1. आश्चर्यजनक विशेषताएं।
2. किसी जलाशय की अनोखी प्रवृत्ति।
3. किसी ऋषि–मुनि आदि का निवास स्थान।

लूर्डेस (फ्रांस

हिन्दू धर्म में तीर्थ के रूपः

हिन्दू शास्त्रों में तीर्थो को तीन भागों में बांटा गया हैं–

1. जंगम

2. स्वावर

3. मानस

उपरोक्त तीन भागों में युगों के अनुसार पुराणों में तीर्थ कृतयुग में पुष्कर, त्रेता युग में नेमिषारण्य, द्वापर युग में कुरूक्षेत्र एवं कलियुग में गंगा को तीर्थ माना हैं।

भारतीय ग्रंथों में तीर्थ शब्द का शाब्दिक अर्थ नदी पार करने वाले मार्ग से माना जाता रहा है। अक्सर ऐसे स्थानों पर नदियां भी होती हैं और कुछ स्थानों पर दो अथवा अधिक नदियों का मिलन भी होता है, जिसे हम प्रायः संगम के नाम से सम्बोधित करते हैं। लेकिन आज के संदर्भ में, सामान्य तौर पर इसका अर्थ है किसी विशेष स्थान पर किसी देवी–देवता से संबंधित त्यौहार, मेला–उत्सव का आयोजन, या फिर संतों, महापुरूषों के प्रवचनों/उपदेशों के आयोजन आदि भी माना गया है।

तीर्थयात्री बनाम आध्यात्मिक पर्यटनः

जैकोव्स्की (2000) के अनुसार सभी अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की 35% यात्रा का उद्देश्य स्पष्ट रूप से धार्मिक होता है। इसके अलावा भी अधिकांश लोगों की यात्रा में कोई न कोई धार्मिक स्थल शामिल हो ही जाता है।

वुकोनिक(1996) के अनुसार अधिकांश धर्मो में, उद्देश्य कुछ भी हो, यात्रा करने की आवश्यकता होती है। किसी पवित्र स्थान पर आकर हम कहीं न कहीं, अपनी आस्था को सुदृढ़ करने का प्रयास करते हैं।

कोलमैन (2000) पर्यटन एवं तीर्थयात्रा के मध्य अन्तर को स्पष्ट करते हैं। पर्यटन को एक अवकाश गतिविधि के रूप में परिभाषित किया जाता है, जबकि तीर्थयात्रा एक पवित्र आस्था की यात्रा है। पर्यटन क्षेत्र के लिए तीर्थयात्रियों को साधारण पर्यटक ही माना जाता है, क्योंकि एक साधारण समर्पित व्यक्ति के रूप में भी उनकी आवश्यकताएं समान होते हुए भी सीमित ही रहती हैं।

अवधारणा शोध के आधार पर प्रस्तुत यह लेख में पुस्तकालयों में उपलब्ध साहित्य एवं विश्वकोष आदि में उपलब्ध सूचनाओं के स्रोतों के आधार पर तैयार किया गया है। इस लेख को तैयार करने में डॉ. विनोद कुमार, पुस्तकालयाध्यक्ष, होटल प्रबंध संस्थान, गुरदासपुर, पंजाब का योगदान भी सराहनीय है।

जेस्कोवेस्की (2000) आजकल धार्मिक पर्यटन को यात्रा के लिए एक आम प्रेरणा के रूप में मानते हैं। उनका अनुमान है कि पूरे विश्व में प्रति वर्ष लगभग 24 करोड़ (ईसाई, मुस्लिम और हिंदु धमावलमबियों सहित और अन्य) मतावलम्बी मुख्यतः अपने अपने धर्म में आस्था के कारण ही ऐसी यात्राएं करते हैं।

हॉर्नर और स्वारोबोक (1999) बताते हैं कि धार्मिक पयर्टन, पर्यटन के सबसे पुराने रूपों में से एक है और यह निस्संदेह ईसाई धर्म से बहुत पहले से मौजूद था। मिस्रवासियों, यूनानियों

और यहूदियों ने धार्मिक यात्राओं के माध्यम से अपनी भक्ति व्यक्त की। वही धार्मिक कारणों से ऐसी यात्राएं अफ्रीका और एशिया में भी मौजूद थीं। जोरास्ट्रियन, रनसीमन, (1987) जो भावनाएं प्रचीन समय में तीर्थयात्राओं को प्रेरित करती थी वह आजकल कम प्रभाव के साथ प्रेरित करती है।

जबकि वियूकोनिस (1998) के अनुसार, पर्यटन अनुसंधान के क्षेत्र में आध्यात्म एक बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र हो सकता है।

लॉयड (1998) यह मानते हैं कि आधुनिक युग में पर्यटन के विकास में आध्यात्मिकता का होना भी पर्यटन में वृद्धि का एक संयोग मात्र है।

राधिका कपूर (2018) ने भारत में धार्मिक पर्यटन का परिप्रेक्ष्य, भारत में धार्मिक पर्यटन का विकास, धार्मिक पर्यटन की विशेषताएं और धार्मिक पर्यटन के विकास में अनुभव किए जानें वाले मुद्दों पर ध्यान दिया हैं। उनके अनुसार, पूरे देश में न केवल धनी व्यक्तियों बल्कि कम आय वर्ग और समाज के आर्थिक रूप से कमजोर तबकों के लोग भी धार्मिक पर्यटन का आनंद लेते हैं।

इस शोध के दौरान दोनों लेखकों ने पाया कि ऐसे भी बहुत से विशेष धर्म स्थान देखे गए जहां पर, वहां के प्रबंधन द्वारा यात्रियों के ठहरने आदि के लिए (उदाहरण के तौर पर) धर्मशाला अथवा यात्री विश्राम गृहों जैसी कुछ साधारण सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाती है। ऐसे स्थानों के आसपास कुछ अमीर लोग या कोई ट्रस्ट/समिति भी धर्मशाला उपलब्ध कराते हैं। इन स्थानों पर आने वाले पर्यटक यात्री आसपास के विश्राम गृहों, कैफे या दुकानों का ही उपयोग करते रहे हैं।

भारत, एक एकल देश के रूप में, दुनिया के सभी धर्मों के लिए असंख्य तीर्थ स्थलों का दावा कर सकता है। देश की धर्मनिरपेक्ष प्रकृति के कारण यहां सभी धर्मों के लिए तीर्थस्थल बहुतायत में मौजूद हैं। पर्यटन के रूप में तीर्थयात्रा सभी धर्मों के सापेक्ष में भारत में बहुत लोकप्रिय है। इन सब के बावजूद, यह भी एक तथ्य है कि आजकल अधिकतर लोग स्वयं को धर्मनिरपेक्ष मानते हैं।

परन्तु अब परिस्थितियां बदलती जा रही हैं। तीर्थो पर जाने वाले यात्री, अब इसे तीर्थ नहीं मानते, उनके लिए अब आस्था का स्थान मात्र बन गए हैं। इसीलिए अब वह उस स्थान पर एक दो दिन रुकने के लिए अच्छी सुविधाओं की आशा करने लगे हैं। वह उम्मीद करते हैं कि आसपास अच्छे होटल, रेस्तरां और आवागमन के बेहतर साधन हों। उनकी इन्हीं जरूरतों को देखते हुए अब कुछेक धार्मिक स्थानों पर 4 या 5 स्टार होटल्स तक बन गए है। उनके ठहरने के स्थान से धार्मिक स्थल तक टैक्सियां उपलब्ध रहती है। ऐसी अवसंरचनाओं का विकास कुछेक ऐसे स्थानों पर भी देखा गयाहै, जहां महीने दो महीने में साधु–संतों के प्रवचनों/ सतसंगों आदि का आयोजन किया जाता है।

एक मोटे अनुमान के अनुसार भारत सहित पूरे विश्व में आध्यात्मिक अथवा धार्मिक पर्यटन पर जाने वाले लोगों के बारे में आंकड़े सहेजने की प्रथा नहीं है। इसके लिए कुछ विशिष्ट स्थलों पर अपने यजमान पर्यटकों की संख्या आदि के अस्पष्ट अनुमान लगाए गए हैं।

भारत को शामिल करते हुए दक्षिण पूर्वी एशिया में पर्यटकों पर किए गए एक अध्ययन के अनुसार धार्मिक स्थलों पर आए पर्यटकों को निम्नप्रकार समूहों में बांटा गया है:

तीर्थ स्थलों पर जाने वाले पर्यटक समूह	समूह के सदस्य	कुल संख्या	प्रतिशत
एकल रूप से जाने वाले पर्यटक	एक पुरुष अथवा महिला (ऐसे पर्यटकों में अधिकतर यूरोप या पूर्वी एशियाई देशों के वासी होते हैं)	01	20%
केवल दो पर्यटक	प्रायः पति–पत्नी	02	20%
मित्रों के साथ ग्रुप में जाने वाले पर्यटक	प्रायः छात्र। इनके अलावा, निजी/सार्वजनिक क्षेत्र के कार्मिक/किसी वरिष्ठ नागरिक क्लब के सदस्य आदि।	8–10	30%
एक परिवार के ग्रुप पर्यटक	पति–पत्नी, दो/ तीन बच्चे और बुजुर्ग माता पिता	6–7	25%
एक बड़े परिवार के साथ जाने वाले पर्यटक	दो तीन भाईयों के परिवार के साथ बुजुर्ग माता पिता कभी कभी बूआ या मौसा–मौसी अथवा पड़ौसी भी ।	15–20	05%
* इनमें परिवार/माता–पिता के साथ आए 05 वर्ष तक की आयु के बच्चों को शामिल नहीं किया गया है।			

इसी प्रकार धार्मिक स्थलों पर आए पर्यटकों को निम्नलिखित आयुवर्ग में बांटा गया है :

तीर्थ स्थलों पर आए आयुवर्ग के पर्यटक	प्रतिशत
25 वर्ष तक	20%
26 – 40 वर्ष	30%
41 – 60 वर्ष	30%
61 – 70 वर्ष	15%
71 वर्ष से अधिक	05%

भारत में सबसे प्रसिद्ध स्थलों में से एक वाराणसी का प्राचीन शहर है। भारत में अन्य आध्यात्मिक स्थानों में हिमालय में केदारनाथ और बद्रीनाथ, पुरी में जगन्नाथ मंदिर, हिमालय की तलहटी में ऋषिकेश और हरिद्वार उत्तर प्रदेश में प्रयागराज, दक्षिण में रामेश्वरम और बिहार में बौद्ध गया शामिल हैं।

भारत में आध्यात्मिक पर्यटकों का सबसे बड़ा जमावड़ा घूमने के आधार पर चार अलग–अलग शहरों में से एक में आयोजित होने वाले कुंभ मेले के दौरान होता है। इनके अलावा, 51 ''शक्तिपीठ'', जहां देवियों की पूजा की जाती है, भी महत्वपूर्ण स्थान हैं। इनमें भी दो प्रमुख स्थान कालीघाट (पश्चिम बंगाल) और कामाख्या (असम) कहीं अधिक लोकप्रिय हैं। दक्षिण भारत में तिरुपति बालाजी का मंदिर एक ऐसा स्थान है जहां देश–विदेश से, सबसे अधिक आध्यात्मिक पर्यटक आते हैं। इसके बाद दूसरा स्थान है जम्मू एवं कश्मीर के कटरा में स्थित वैष्णो देवी। यह

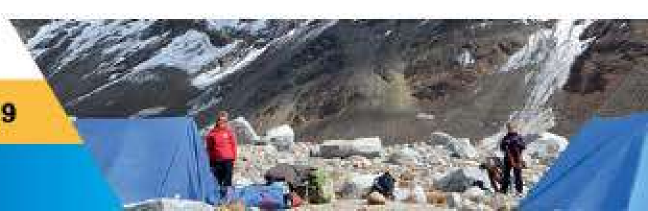

श्री तिरूपति बाला जी मन्दिर

एक शक्तिपीठ मंदिर है। किसी को भी इस बात पर आश्चर्य हो सकता है कि उपरोक्त दोनों ही स्थानों पर पूरे वर्ष 24 घंटे सातों दिन दर्शनार्थी पर्यटक पहूंचते हैं।

विनोद एवं अश्वनी (2013) ने पता लगाया कि आध्यात्मिक अथवा धार्मिक एवं तीर्थ पर्यटन का इस प्रकार से विकास करना चाहिए कि यह एक दिन हमारे देश की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार बन सके। हम अपने देश के घरेलु पर्यटन को चीन की तरह बढाकर आय के मुख्य स्रोत पैदा कर सकते हैं। वर्तमान आकडों के आधार पर हमारे देश का पर्यटन क्षेत्र वर्ष 2018 में देश के सकल घरेलु उत्पाद (GDP) में 9.2% का योगदान रखता हैं तथा कुल रोजगार के 8.1% अवसर का इसी क्षेत्र से रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार, आध्यात्मिक पर्यटन से भविष्य में आय एवं रोजगार में 15 से 20 प्रतिशत तक वृद्धि की जा सकती है।

निष्कर्ष :

आध्यात्मिक अथवा तीर्थ पर्यटन एक ही सिक्कें के दो पहलू है, तीर्थयात्रा को पर्यटन से अलग करके आध्यात्मिक पर्यटन की अवधारणा को स्वीकार करना मुश्किल काम है, क्योंकि धार्मिक व्यक्तियों का समूह ही तीर्थ एवं अन्य धार्मिक स्थलों की यात्रा करता है। आध्यात्मिकता के आधार पर हम देश की संस्कृति एवं भाई–चारे को एक मंच पर लानें में मुख्य भूमिका अदा कर सकतें हैं क्योंकि सभी धर्मों का उद्देश्य एक ही होता है – आपसी भाईचारा। यह भाईचारा केवल तीर्थ एवं धार्मिक पर्यटन स्थलों को विकसित करके ही प्राप्त किया जा सकता हैं।

हरिमंदिर साहिब, अमृतसर

आज के आधुनिक युग में मानव आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के कारण अवसाद एवं मानसिक रोगों से घिर गया है। शान्ति एवं शकुन के कुछ क्षणों के लिए वह ऐसे किसी तीर्थ स्थल और साथ उसके आसपास के अन्य स्थनों पर जाकर पुनः ऊर्जा की अनुभूति करना चाहता है। अब जब करतारपुर गुरूद्वारे के दर्शन करने के लिए कोरिडोर खोल दिया गया है तब ऐसे में गुरदासपुर में पर्यटन में आश्चर्यजनक वृद्धि होने की सम्भावना है क्योंकि ऐसे पर्यटक स्थानीय धार्मिक स्थलों के दर्शन करने के लिए भी अपने कार्यक्रम बनाते हैं।

सुझाव :

1– तीर्थ पर्यटन के क्षेत्रों को चिन्हित कर उनका जीर्णोद्धार कर उन्हें वैश्विक पर्यटन मानकों के आधार पर विकसित किया जाना चाहिए। इससे घरेलु पर्यटकों के साथ–साथ विश्व के पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकेगा।

2– जीर्णशीर्ण हुए धार्मिक क्षेत्रों में पुनः मूलभूत सुविधाएं प्रदान कर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए उनकी विशेषताओं आदि का प्रचार किया जा सकता है।

3– उपेक्षित तीर्थ स्थलों के उन्नयन हेतु सरकार अपने बजट से कुछ धनराशि आवंटित कर ऐसे तीर्थ स्थलों का विकास कर सकती है।

4– तीर्थ–स्थलों पर यातायात एवं यात्रियों के ठहरने आदि की पूर्ण व्यवस्था का दायित्व सम्बन्धित राज्य सरकार अथवा उसके द्वारा बनाए गए ट्रस्ट आदि का होना चाहिए ताकि ऐसे पर्यटकों को उचित मूल्यों पर सुविधाएं मिल सकें क्योंकि यह देखने में आता है कि ऐसे स्थानों पर निजी क्षेत्र के सुविधा प्रदाता सेवाओं के लिए मानमाने और कहीं–कहीं तो बाजार से से दो–तीन गुनी असामान्य दरें वसूलते हैं।

5– तीर्थ यात्रियों की सुरक्षा–व्यवस्था एवं प्राथमिक स्वास्थ्य व्यवस्था आदि की तैयारी किसी भी उत्सव से पूर्व ही पूर्ण कर ली जानी चाहिए।

6– पास–पोर्ट एवं कर व्यवस्था को आसान एवं सुगम बनाया जाए। जिससे कि पर्यटक सुगमता से यात्रा कर सकें। तीर्थ स्थानों पर स्थित होटलों/विश्रामगृहों आदि को करों में कुछ छूट के साथ वहां ठहरने वाले पर्यटकों को भी कुछ रियायतें दी जानी चाहिए।

7– तीर्थ – स्थलों पर सतत विकास एवं पर्यटन स्थल की वहनीय क्षमता के आधार पर ही पर्यटकों के आगमन, रहने एवं ठहरने की व्यवस्था की अनुमति प्रदान करनी चाहिए।

पर्यटन

नीति या रणनीति?

– प्रो निमित चौधरी

भारत की नई पर्यटन नीति भी अब लगभग 17 साल पुरानी हो गयी है। इसे वर्ष 2002 में अपनाया गया था। इसके पश्चात 2015 में पर्यटन नीति का एक प्रारूप सार्वजनिक टिप्पणी के लिए उपलब्ध कराया गया था। हालांकि इसे अभी तक स्वीकार नहीं किया गया है। किन्तु अब इस बड़े प्रश्न पर गहन विचार किए जाने की आवश्यकता है कि क्या आज पर्यटन नीति का होना ही पर्याप्त है? कहीं हमें नीति की जगह पर्यटन रणनीति की आवश्यकता तो नहीं? क्या दोनों में कोई फर्क है? पहले तो यह समझना जरूरी है कि दोनों में क्या अंतर है ? जी हां, दोनों में बहुत फर्क है। आज जब सारी दुनिया पर्यटन के लिए रणनीति बनाने में व्यस्त है तो हम अभी भी नीति पर केंद्रित है। आज अधिकांश पर्यटन गंतव्यों की अपनी सामरिक योजना होती है। अभी भी अधिकांश भारतीय राज्य अपनी पर्यटन नीति बनाने में व्यस्त हैं, बिना यह जाने– समझे कि ऐसी नीति से वे क्या हासिल कर पाएंगे। क्योंकि दूसरी ओर दूसरे गंतव्यों ने भी नीति बनाई है, इसलिए (भेड़ चाल में) हमें भी बनानी है। अगर हम नज़र घुमा के देखें तो पता चलेगा की कई छोटे देशों ने, प्रान्तों ने, शहरों ने और गांवों ने पर्यटन के उन्नयन के लिए सफल सामरिक रणनीतियां बनाई हैं।

रणनीति एक बड़ा खेल है ?

पूर्व में पर्यटन ताश के पेशेंस (patience) खेल जैसा था। इसे कोई भी व्यक्ति अकेला खेल सकता था। बहुत तन्मयता से खेल सकता था, बहुत देर तक खेल सकता था और बार–बार खेल सकता था। हर बार अपने पिछले प्रदर्शन को बेहतर करने के लिए खेल सकता था। बार–बार खेलने से सफलता के कुछ सूत्रों में वह सिद्धहस्त हो जाता है। उसका चाल–चलन कार्यकलाप बस अनुभव–जनित **thumb rule** अर्थात जो किसी स्थिति के लिए कड़ाई से सटीक या विश्वसनीय होने का इरादा नहीं करता है, पर आधारित होता है। कुछ देशों को या क्षेत्रों को ऐसा लगा की पर्यटन उनकी अर्थव्यवस्थाओं के लिए लाभकारी है तो उन्होंने उसे बढ़ावा देना शुरू किया। समय के साथ अपनी बनाई नीतियों से सहारे उन्होंने अपने प्रदर्शन को बेहतर करने का प्रयास किया। कभी सफल हुए और कभी नहीं, लेकिन जो भी हुआ, उससे वह अपने तक ही सीमित रहे। लेकिन आज पर्यटन रम्मी (Rummy) के खेल जैसा हो गया है। इसमें कई खिलाड़ी शामिल हैं। हर एक की अपनी समझ है, हर एक की अपनी चाल है। वह दूसरे खिलाडियों की चाल से भी अनभिज्ञ हैं। एक खिलाड़ी चाल चलता है और तुरंत ही दूसरा उसकी काट कर उसके प्रभाव को

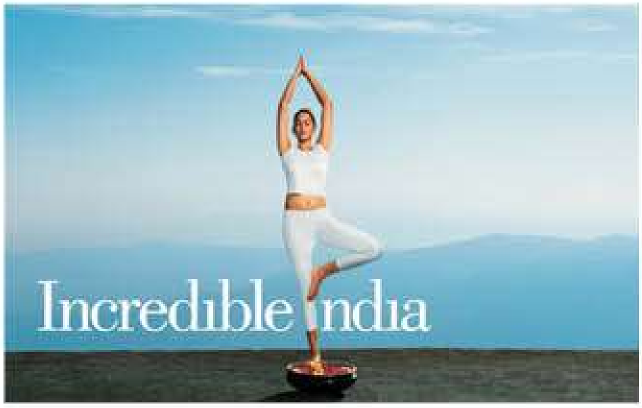

*विभागाध्यक्ष, पर्यटन एवं आतिथ्य प्रबंधन विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

निष्क्रिय करने के लिए अपनी चाल चलता है। प्रत्येक खिलाड़ी हर–पल हर–क्षण वह अपने लाभ को अधिकतम और अपने नुकसान को कम करने के लिए प्रयासरत रहता है।

आज पर्यटन अति प्रतिस्पर्धी है। दुनिया भर के अनेक देश ही नहीं, देशों में स्थित गंतव्य भी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए एक–दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। ऐसे में दूसरे आपकी हर चाल का मूल्यांकन करेंगे और आपके प्रतिद्वंदी वैकल्पिक योजना ले कर आ जाएंगे। आप इन्हें रणनीतियां कह सकते हैं। कालांतर में प्रत्येक गंतव्य एक सतत स्पर्धात्मक लाभ (**Sustainable competitive advantage**) की स्थिति चाहेगा। प्रतिस्पर्धी आपके बाज़ार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाना चाहेगा और आप चाहेंगे की आपकी लाभ की स्थिति बरकरार रहे। इस खेल में कभी न कभी प्रतिस्पर्धी आपके बाज़ार में सेंध लगाने में सफल हो ही जाएगा और आपको अपने लाभ को ज्यों का त्यों बनाये रखने के लिए एक नई रचनात्मक चाल ढूंढनी पड़ेगी। जब हमने इ–वीजा का प्रावध् ाान किया तो इंडोनेशिया ने 169 देशों के यात्रियों को वीजा–मुक्त कर दिया। हमें तब कुछ और ज्यादा करना पड़ा था।

पूर्व में, अन्य गंतव्य क्या कर रहे हैं, इससे बेखबर, गंतव्य प्रबंधन शीर्ष वह करता था जिसे वह समझता था कि उनके लिए यही अच्छा है। पर्यटन फले–फूले इसके लिए सरकारें यह समझती थीं कि कुछ सार्वजनिक भागीदारी आवश्यक है। अतः पर्यटन के विकास के लिए तथा सार्वजनिक निवेश के लिए कुछ बुनियादी कायदे बना लिए जाते हैं। चूंकि यह एक आधारभूत परिकल्पना है कि पर्यटन समाज के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है, अतः इसमें संसाधनों का परिनियोजन करना होगा। यहां ध्यान देने की खास बात यह है कि संसाधन सीमित हैं, इसलिए उनका सविवेक इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इसके लिए नियम–कानून–नीति की आवश्यकता होती है। इन सीमित संसाधनों का प्रयोग कहां किया जायेगा, कहां नहीं होगा, कैसे उनका प्रयोग होगा इत्यादि। यह पर्यटन नीति के मुख्य अवयव हैं।

किन्तु, प्रतिस्पर्धा की मार झेल रहे गंतव्यों को अब महसूस हो रहा है कि उन्हें सिर्फ पर्यटन नीति ही नहीं, अपितु प्रतिस्पर्धियों की चालों से पार पाने के लिए रणनीतियों की भी ज़रूरत है। रणनीति से तात्पर्य है कि एक निर्धारित लक्ष्य हो और उसको प्राप्त करने की एक सोची–समझी कार्ययोजना हो। अतः गंतव्य एक खास तरह से अपने प्रतिस्पर्धियों की चालों का, अपने बाज़ारों की ज़रूरतों और अपने यहां आगंतुक पर्यटक मेहमानों की अपेक्षा का सामना करेगा। वह एक ख़ास तरह से अपने संसाधनों का प्रयोग करेगा और सचेतन अन्य तरीकों पर इन संसाधनों को व्यय नहीं करेगा। चिन्हित गतिविधियों को भी प्राथमिकताओं के आधार पर ही संसाधन उपलब्ध करवाए जाएंगे। उदाहरणार्थ, हरिद्वार अध्यात्मिक पर्यटन के लिए जाना जाता है तो वह क्रूज और बीच–पार्टी जैसी गतिविधियों पर संसाधन व्यय करने से बचेगा। दूसरी तरफ गोवा के पर्यटक अलग तरह के हैं तो वह उनकी मौज–मस्ती के लिए सभी संसाधन जुटाएगा। ऐसे में धार्मिक तथा सांस्कृतिक प्रवृत्ति वाले पर्यटकों के लिए गोवा में बहुत ही सीमित संभावनाएं हैं।

रणनीति और नीति में अंतर

आइये इस चर्चा की शुरुआत नीति व रणनीति में अंतर को समझ कर करते हैं। पहली बात तो

यह कि दोनों एक नहीं हैं। हम साधारणतः इन दोनों शब्दों का अदल–बदल के (अंतर्विनिमयता के साथ) प्रयोग कर लेते हैं, जो गलत है। दूसरी समस्या, यह निर्धारित किया जाए कि पहले क्या आएगा – नीति या रणनीति? कौन किस में समाहित है? नीति से रणनीति बनेगी या रणनीति से नीति?

सर्वप्रथम तो यह समझना चाहिए कि 'स्थान' 'गंतव्य' से बड़ी परिकल्पना है। स्थान गंतव्य तब ही बनता है जब लोग वहां जाना या पहुंचना चाहें। कई बार पर्यटक किसी गंतव्य पर नहीं पहुंचना चाहते हैं। यह किसी स्थान की विशेष मांग के आधार पर हो सकता है। उदाहरणार्थ, यह मांग औद्योगिक निवेश (चीन), उच्च शिक्षा (ऑस्ट्रेलिया), अध्यात्म (भारत) या सिर्फ अपने पैसे रखने/ जमा करने के लिए जैसे कि बैंकिंग (एंडोरा/ स्विट्ज़रलैंड) के लिए भी हो सकती है। आप इन्हें कारोबारी पर्यटक या अन्य किसी नाम से भी पुकार सकते हैं क्योंकि ऐसे लोग वहां मुख्यतः अपने विशेष उद्देश्य के लिए आते हैं और साथ ही पर्यटकों के लिए उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग कर, भुगतान करते हैं।

अक्सर किसी राष्ट्र, राज्य का या शहर का शीर्ष नेतृत्व वहां के सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए विभिन्न प्रकार के व्यापारिक निवेश हेतु हितधारकों को आकर्षित करने का प्रयास करता है। पर्यटन उनमें से सिर्फ एक व्यावसायिक क्षेत्र हैं – देश के लिए राजस्व अर्जित करने का एक तरीका मात्र है। परिपेक्ष्य यह है कि किसी भी जगह का पर्यटन ब्रांड वहां के स्थान ब्रांड का एक उप–समुच्चय है।

अतः प्रश्न यह है कि किसी स्थान (राष्ट्र/ राज्य/शहर/गांव) को कैसे आकर्षक एवं प्रतिस्पर्धी बनाया जाए। इसके लिए एक रणनीति की आवश्यकता है। उस रणनीति को आकर देने के लिए आंतरिक हितधारकों की सहूलियत के लिए कई नीतियां बनानी पड़ेंगी जिन में से पर्यटन

होर्नबिल उत्सव

पर निर्देशित विकास एक नीति हो सकती है। फिर उस नीति के तहत उस गंतव्य की एक पर्यटन रणनीति गढ़नी पड़ेगी। अंततः सम्मत लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु हमारे पास गंतव्य की स्पर्धात्मक लाभ स्थिति (Competitive advantage), मेहमानों का यकीन तथा पर्यटन बाज़ार में हमारी इच्छित भागीदारी के लिए एक कार्य योजना चाहिए। यह एक बहुत सोची–विचारी, अवसर और चुनौतियों के प्रतिकूल गंतव्य की सामर्थ्य क्षमता और कमजोरियों के आकलन के पश्चात सम्मिलित तथा एकीकृत योजना होनी चाहिए। इस पूरे श्रम का मूल उद्देश्य किसी स्थान को आगंतुकों के लिए एक पसंदीदा गंतव्य के रूप में उभारना है। इसमें प्रतिस्पर्धी गंतव्यों की चुनौतियों का सामना करने के लिए उचित चालों का तरकश बनाना सम्मिलित है।

रणनीतियां बहिर्मुखी (outwardly) होती हैं जबकि नीतियां अंतर्मुखी (inwardly) होती हैं। रणनीतियां ग्राहकों तथा प्रतिस्पर्धियों से निबटने के लिए होती हैं। दूसरे तरफ नीतियां आंतरिक निर्णयों एवं गतिविधियों को दिशा देने के लिए होती हैं। हम एक उदाहरण लेते हैं। न्यूज़ीलैण्ड अपने आप को एक बेदाग़ प्राकृतिक गंतव्य के रूप में स्थापित करना चाहता है। यह उसकी सामरिक निर्धारित स्थिति (strategic position) है। अतः उसने घोषित किया “New Zealand– 100% pure”. अब इसके अनुरूप उसके नीतियां होंगी जिनसे वह सैकड़ों टूर संचालकों (operators) तथा अन्य हितधारकों को दिशा देता हैं कि कैसे वे पर्यावरण अनुकूल आचरण करें। किस प्रकार के पर्यटन उत्पाद हों? किस तरह के कौशल का विकास किया जाए? इस संबंध में किस तरह का विधान हो, कैसी कर व्यवस्था हो, क्या दंडनीय हो, किस कृत्य को प्रोत्साहित किया जाए? गंतव्य के सभी हितधारकों को किस प्रकार एक साथ लेकर बेदाग़ प्राकृतिक सौंदर्य और अनुभव प्रदान करने की दिशा में बढ़ा जाए?

दूसरा अंतर

दूसरा बड़ा अंतर यह है कि रणनीति एक कार्य योजना है जबकि नीति एक कार्य सिद्धांत है। दोनों का आपसी संबंध थोड़ा जटिल है। नीति हितधारकों को उपयुक्त निर्णय लेने में मदद करती है। नीति निर्धारण सामरिक योजना का एक हिस्सा होता है। नीतियां रणनीति कार्यान्वयन और सामरिक लक्ष्य प्राप्त करने में मदद करती हैं। अक्सर अस्पष्ट लक्ष्य निर्धारित कर लिए जाते हैं और बिना किसी रणनीति के नीति निर्धारित कर दी जाती है। जैसा मैंने पूर्व में कहा पहले पर्यटन प्रबंधन "पेशेंस" खेलने जैसा था। दुर्जेय प्रतिस्पर्धियों के साथ रम्मी खेलने के लिए हमें रणनीतियां चाहिए होंगी। उदाहरण के लिए, गंतव्य नेतृत्व यह चाह सकता है कि आगंतुकों से अर्जित आय स्थानीय अर्थव्यवस्था में ही रहे ताकि उसका लाभ स्थानीय नागरिकों को मिले। इसके लिए यह रणनीति हो सकती है कि गंतव्य बेक–पैकर्स को आकर्षित करें जो स्थानीय सस्ते लॉज, धर्मशाला, होम–स्टे आदि में रहना पसंद करते हैं। अतः होम स्टे और B&B को प्रोत्साहित करने के लिए एक कर–अवकाश (करों में छूट प्रदान करने) की नीति हो सकती है, या फिर निचले स्तर पर इन होम–स्टे और B&B के लिए क्षमता निर्माण (Capacity building) की नीति लाई जा सकती है। इनको प्रोत्साहित करने के लिए होम–स्टे और B&B को प्राथमिकता क्षेत्र मानकर बैंकों की ऋण नीति में भी शामिल किया जा सकता है। एक बात और समझनी ज़रूरी है। सम्पूर्ण देश की एक विकास रणनीति हो सकती

है। देश की भी एक जगह की तरह आकांक्षाएं हो सकती है, स्वयं के लिए एक नज़रिया हो सकता है। देश की विकास रणनीति में पर्यटन के लिए एक विशिष्ट भूमिका हो सकती है। देश के विकास की परिकल्पना को पूरा करने के लिए विभिन्न नीतियां जैसे कि आर्थिक नीति, पर्यावरण नीति, श्रम नीति इत्यादि, निर्धारित करनी होंगी – जो पर्यटन को सीमित करेंगी, बांधेंगी। इन्हीं सीमाओं के अंतर्गत गंतव्य को अपनी पर्यटन रणनीति को आकार देना होगा। इन्हीं सीमाओं में गंतव्य की ठोस छवि बनानी होगी तथा ग्राहकों की कल्पनाओं में स्थित होना होगा। गंतव्य नेतृत्व को आगमन, प्राप्तियां, पर्यटन प्रतिफल, विकास आदि के लक्ष्य निर्धारित करने होंगे तथा उन्हें हासिल करने की योजनाए बनानी होंगी। अतः सबसे पहले देश की तरक्की और विकास की रणनीति निर्धारित करनी होगी। उसे फलीभूत करने के लिए विभिन्न नीतियां बनानी होंगी। इस वृहत् नीतिगत संरचना के अंतर्गत ही पर्यटन रणनीति बनेगी। इस रणनीति के अंतर्गत ही पर्यटन लक्ष्यों को प्राप्त करने की पर्यटन नीतियां आकार लेंगी जो समय–समय पर पर्यटन के सैकड़ों हितधारकों के लिए सन्दर्भ बिंदु होंगी। हितधारकों को आभास होना चाहिए कि क्या उत्पाद और गतिविधियां उन्हें स्वीकार्य है, इनमें से कौन से गंतव्य के ब्रांड को मजबूती देंगे। गंतव्य पर क्या किया जाना चाहिए और क्या किया जा सकता है मूलतः गंतव्य के लक्ष्यों के विवरण (vision statement) पर अवधारित होगा। इसी वृहद् नीतिगत संरचना के दायरे में राज्यों, शहरों, और ग्रामों– जैसी भू राजनीतिक इकाइयों को अपनी–अपनी पर्यटन रणनीति बनानी चाहिए। वस्तुतः रणनीति एक अमली योजना है जिसे कार्यान्वित किया जा सके। रणनीति उस प्राधिकरण को ही बनानी चाहिए जिसके पास उसके क्रियान्वयन का अधिकार हो। अतः उस सीमा तक ही बनानी चाहिए जहां तक उसे प्राधिकृत रूप से अमल में ला सकें। दरअसल भारत जैसे बड़े देश में राज्यों और अन्य छोटे गंतव्यों को अपनी पर्यटन रणनीति बनाने और क्रियान्वित करने का अधिकार हो तथा ऐसी व्यापक नीति के तदनुरूप ही नीतिगत संरचना भी होनी चाहिए।

अंत में...

रणनीति की एक और विशेषता है– वह समय सीमित होती है। रणनीति एक निर्धारित समय में लक्ष्यों को प्राप्त करने की गत्यात्मक कार्य–योजना है। इसके विपरीत 'नीति' स्थिर और एकरूप होती है। कैसे इकाइयां और व्यक्ति अपने आप को और अपनी गतिविधियों को गंतव्यों के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लगा सकें, यह नीति निर्धारित करती हैं।

अब समय आ गया है की हम भारतवर्ष के लिए भी तय अवधि की पर्यटन रणनीतियां बनाएं। केवल पर्यटन नीति का होना अब शायद काफी नहीं।

डा. निमित चौधरी, पर्यटन और आतिथ्य प्रबंधन विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (केंद्रीय विश्वविद्यालय), नई दिल्ली, में आचार्य एवं विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। वह गंतव्य प्रबंधन एवं विपणन, पर्यटन में उद्यमिता, आदि पर शोध एवं शिक्षण करते हैं। उनसे nchowdhary@jmi.ac.in ij@jmi.ac.in पर संपर्क किया जा सकता है। लेख में व्यक्त विचार लेखक के निजी विचार हैं।

विरासत और आध्यात्म का शहर : कटक

–अबिनाश दाश

"कटक" शब्द का अर्थ है सेना की छावनी। कटक ओड़िशा राज्य का एक नगर और व्यावयासिक राजधानी भी है। कटक का इतिहास इसके नाम को सही ठहराता है। कटक शहर की शुरुआत एक सैन्य छावनी के रूप में हुई थी और इसकी अभेद्य स्थिति के कारण ही इसे ओडिशा राज्य की राजधानी में विकसित किया गया था। अनंग भीमदेव के शिलालेखों में मूल शहर को अभिनव–बरनासी–कटक कहा गया है। जैसे वाराणसी शहर, वरूणा और असि के बीच में स्थित है। कटक महानदी और कठजोड़ी नदियों के बीच स्थित है और इसलिए इसे अभिनव बरनासी नाम दिया गया। कटक पांच गांवों में से एक शहर के रूप में विकसित हुआ। चौडवार कटक, बरनासी कटक, सारंगगढ़ कटक, विरजा कटक और अमरावती कटक। प्राचीन काल में, कटक को भूमि मार्गों और जलमार्गों से जोड़ा गया था, जो चेल्सीटो, पलूर और ताम्रलिप्ति जैसे प्रसिद्ध मध्ययुगीन बंदरगाहों के साथ थे। 12 वीं शताब्दी में चोडगंगा ने कलिंगनगर से अपनी राजधानी कटक में स्थानांतरित कर दी थी क्योंकि यह अधिक केन्द्र में था। प्रसिद्ध बाराबती किले का निर्माण 1229 में किया गया था। प्रसिद्ध गंगा शासक अनंग भीम देव के गढ़ में, गंगावंश के बाद उत्कल का क्षेत्र गजपति के हाथों में चला गया जिन्होंने, कटक को राज्य की राजधानी बनाया। अबुल फजल की पुस्तक "आइन–ए–अकबरी" में उल्लेख मिलता है कि मुकुंद देव के समय में कटक एक समृद्ध राजधानी थी। मुगलों ने कटक को उत्कल की राजधानी बनाए रखा और मुगल गवर्नर इसी शहर में रहते थे।

*पुस्तकालयाध्यक्ष, होटल प्रबंधन संस्थान, भुवनेश्वर

कटक ओड़िशा का एक प्राचीन नगर है, जो रौप्य नगर (Silver City) के नाम से भी जाना जाता है। इसका इतिहास एक हजार वर्ष से भी ज्यादा पुराना है। करीब नौ शताब्दियों तक कटक उत्कल (आज के ओड़िशा) की राजधानी रहा और आज भी यहां की व्यावयायिक राजधानी के रूप में जाना जाता है। केशरी वंश के समय यहां बने सैनिक शिविर के नाम पर इस शहर का नाम कटक रखा गया था। यहां के किले, मंदिर और संग्रहालय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। कटक वर्तमान ओड़िशा की मध्ययुगीन राजधानी था, जिसे पद्मावती भी कहते थे। यह नगर महानदी और उसकी सहायक नदी काठजोड़ी के बीच में बना है। कटक को उड़ीसा की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में भी जाना जाता है। कटक में सदियों से सभी धार्मिक समुदायों के लोग सौहार्द से रहते हैं। यहां दशहरा, होली और दीवाली से लेकर ईद और क्रिसमस तक के सभी त्योहार समान रूप से मनाए जाते हैं।

मंदिरों के अलावा, कटक शहर में अन्य धर्मों से संबंधित कुछ पुरानी संरचनाएं हैं। यहां पवित्र ऐतिहासिक सिख तीर्थ – गुरुद्वारा दातुन साहिब है। यहां पहले सिख गुरु श्री गुरु नानक देव ने पुरी के रास्ते में 15 वीं शताब्दी में आए थे। यह माना जाता है कि गुरूनानक देव ने दातुन के रूप में टहनियों का उपयोग किए जाने वाला "सहाड़ा" पेड़ लगाया था। उसके बाद एक वृक्ष अब भी यहां पनपता है, इसलिए इसका नाम दातन साहिब है।

समय बीतने के दौरान कटक में कई मुस्लिम स्मारक बनाए गए हैं। क़दम–ए–रसूल, शुज़ादीन खान द्वारा निर्मित एक सुंदर स्मारक है। इसमें एक गोलाकार पत्थर में उकेरे गए पैगंबर मोहम्मद के पदचिह्न हैं। बाहर का गुंबद एक सुनहरे शिखर से सुशोभित है। शाही मस्जिद बाराबती किले के अंदर स्थित है। कटक शहर की स्थापना केशरी राजवंश के सम्राट नृपकेशरी ने सन 989 ई. में की थी। सन 1002 ई. में सम्राट मर्कट केशरी ने शहर को बाढ़ से रक्षा करने के लिए पत्थर की दीवार बनाई थी। करीब एक हजार वर्षों तक कटक ओड़िशा की राजधानी रहा। गंग वंशी तथा सूर्य वंशी साम्राज्य की राजधानी भी कटक रहा है। ओड़िशा के आखिरी हिन्दु राजा मुकुंददेव के उपरांत कटक शहर पहले इस्लामी और बाद में शाहजहां के शासन काल में मुगल सल्तनत के अधीन रहा, जहाँ इसे एक उच्च स्तरीय प्रांत की मान्यता मिली थी।

1750 तक कलिंग पर मराठों का आधिपत्य होने के बाद कटक भी उनके अधीन आ गया। इसके उपरांत सन 1803 ई. में कटक अंग्रेजों के अधीन आया। 1826 में इसे ओड़िशा की राजधानी बनाया गया। देश के स्वाधीन होने के उपरांत सन 1948 में ओड़िशा की राजधानी कटक से भुवनेश्वर में स्थानांतरित कर दी गई।

बारीबाती किले का द्वार

बाराबती किले का राजा मुकुंद देव ने सन 1560–1568 में निर्माण करवाया था। सन 1568 से 1603 तक यह किला अफ़ग़ानियों, मुगलों और मराठा के राजाओं के अधीन था उसके बाद सन 1803 में अंग्रेजों ने इस क़िले को मराठों से छीन लिया।

मुख्य पर्यटन स्थल

बीरीबती किला – यह कटक का सबसे प्रमुख पर्यटक स्थल है। महानदी के किनारे बना यह किला खूबसूरती से तराशे गए दरवाजों और नौ मंजिला महल के लिए प्रसिद्ध है। इसका निर्माण गंग वंश ने 14वीं शताब्दी में करवाया था। युद्ध के समय नदी के दोनों किनारों पर बने नाले किले इस किले की रक्षा करते थे। वर्तमान में इस किले के साथ एक अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम है। पांच एकड़ में फैले इस स्टेडियम में तीस हजार लोग बैठ सकते हैं। यहां खेल प्रतियोगिताओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अयोजन होता रहता है।

कटक चंडी मंदिर – पुराने शहर के केंद्र में स्थित चंडी मंदिर कटक की देवी मां चंडी को समर्पित है। चंडी मंदिर महानदी नदी के तट के निकट स्थित है। देवी को लोकप्रिय रूप से माँ कटका चण्डी कहा जाता है, बाराबती किले के परिसर के भीतर स्थित चंडी मंदिर कटक के सबसे पुराने मंदिरों में से एक माना जाता है। यह अपनी वार्षिक दुर्गा पूजा और काली पूजा के लिए प्रसिद्ध है। माँ कटक चंडी मंदिर में दुर्गा पूजा उत्सव प्रमुख हैं, जो अश्विन कृष्ण अष्टमी के अंधेरे पखवाड़े से शुरू होकर अश्विन शुक्ल नवमी और विजयदशमी तक 16 दिनों तक चलता है।

कटक चंडी मंदिर

परमहंसनाथ मंदिर – भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर कटक के बाहरी हिस्स्से में स्थित है। यह मंदिर सोमवंशी राजवंश ने बनवाया था। यहां एक बहुत बड़ा छिद्र है जहां से स्वयं पानी निकलता है। यह विशाल छिद्र इस मंदिर की मुख्य विशेषता है। इसे "अनंत गर्व" कहा जाता है। 15वीं शताब्दी के मध्य में लकड़ी के चंदवा संभवतः कुछ समय के लिए जोड़ा गया है। मंदिर में मां पार्वती, कार्तिकेय और गणेश के मंदिर भी हैं। मंदिर की उत्तरी दीवार पर एक बड़ा बैल का चित्र और एक राम–अभिमुख चित्र पाए जाते हैं। मंदिर की बाहरी दीवारों पर विष्णु के दो चित्र देखे जा सकते हैं।

परमहंसनाथ मंदिर

धवलेश्वर मंदिर – भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर कटक के बाहरी हिस्स्से में स्थित है। यह मंदिर सोमवंशी राजवंश ने बनवाया था।

अगर आप कटक में समुद्री लहरों का मजा लेना चाहते हैं, तो धबलेश्वर तट जाना कतई ना भूले, जो कटक से सिर्फ चार कि.मी. दूर है। धबलेश्वर एक शानदार द्वीप है जो महानदी नदी के किनारे पर स्थित है। इस तट की सुंदरता, यहां का शांत वातावरण और यहां का निर्मल जल है। यह स्थान पर्यटकों के बीच उत्साह और

रोमांच के एक सुंदर और सौम्य वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। इस स्थान पर धाबरेश्वर वॉटर स्पोर्ट सेंटर एक अन्य आकर्षक स्थल है। यहां ज्यादातर विदेश के सैलानी ही आते रहते है।

नौवाणिज्य संग्रहालय– महानदी के किनारे ओड़िशा की प्राचीन नौवाणिज्य विरासत को दिखाता नौवाणिज्य संग्रहालय कटक का एक प्रमुख पर्यटन केन्द्र है। बालियात्रा मैदान के निकट बने इस संग्रहालय को देखने लोगों की काफी भीड़ जमा होती है। यहां श्रीलंका, इंड़ोनेशिया आदि देशों के साथ कलिंग (ओड़िशा) के प्राचीन सामुद्रिक संबंधों का सुन्दर विवरण देखने को मिलता है।

नेताजी का जन्मस्थान संग्रहालय– नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जन्मस्थान में उनके इतिहास और उनकी विरासत को दिखाता हुआ एक सुन्दर

संग्रहालय बना है, जो सुभाष के नेताजी बनने तक के सफर को दर्शाता है।

आनन्द भवन संग्रहालय– ओड़िशा के वीरपुत्र बीजू पट्टनायक के जन्मस्थान आनन्द भवन को अब एक संग्रहालय में बदल दिया गया है। बीरीबाती दुर्ग के किनारे स्थित यह संग्रहालय बीजू पट्टनायक के गौरवमय व्यक्तित्व को दर्शाता है।

कदम–ई–रसूल– वैसे तो भारत में ऐसी बहुत सी मस्जिदें हैं, जिनकी अद्भुत वास्तुकला पर्यटकों को आश्चिर्यचकित कर देती है। लेकिन कटक स्थित कदम–ई–रसूल मस्जिद इन सबसे एकदम अलग है। एक गुम्बद के नीचे एक गोल पत्थर पर पैगंबर मोहम्मद के पद चिह्न अंकित किए गए हैं। हिंदू तथा मुस्लिम दोनों ही इस स्थान का आदर करते हैं। इनके गुंबद और कमरे बहुत ही आकर्षक हैं। यहां नौबतखाना भी है। इसका निर्माण 18वीं शताब्दी में किया गया था। इस धार्मिक स्थान का निर्माण मुसलमानों की धार्मिक आस्था को ध्यान में रखकर करवाया था। मस्जिद के मुख्य परिसर के भीतर तीन खूबसूरत मस्जिदें हैं।

कदम ई रसूल

नदी किनारे दीवार– 11 वीं शताब्दी में राजा मर्कट केशरी ने नदी पर पत्थर की दीवार बनवाई थी। इस दीवार के कारण यह शहर बाढ़ों के कहर से बचा रह सका। इसी वजह से इस शहर को राजधानी बनाया गया था। यह तत्कालीन इंजीनियरिंग का बेहतरीन नमूना है। यह दिखाती है कि उस समय तकनीक कितनी उन्नत थी।

नदी किनारे दीवार

लालबाग महल– काठजोड़ी के किनारे बना यह महल कटक के गौरवमय इतिहास का साक्षी रहा है। बीरीबाती दुर्ग के बाद यह शासन का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। 17वीं सदी में बना यह महल कई प्रमुख राजाओं का निवास स्थान रहा है। 1942 से 1960 तक यह ओड़िशा के राज्यपाल का निवास भी रहा है।

सलीपुर ब्रांच संग्रहालय– ब्रांच संग्रहालय की स्थापना 1979 में की गई थी। इस संग्रहालय में मूर्तियों, शस्त्रों, टैराकोटा का प्रदर्शन किया गया है। इनके अलावा यहां वाद्य यंत्र और कागज तथा ताड़ पत्र पर लिखी पांडुलिपियां भी देखी जा सकती हैं। समय: सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक, सोमवार और सार्वजनिक अवकाश के दिन बंद रहता है।

रेवेंशा विश्वविद्यालय – रेवेंशा विश्वविद्यालय ओड़िशा का सबसे पुराना शिक्षानुष्ठान है। सन 1868 में बनाए गये इस कालेज को सन 2006 ई. में विश्वविद्यालय की मान्यता मिली। इन सबके अलावा चुडंगगड़ दुर्ग, मधुसूदन संग्रहालय, स्वराज आश्रम, कनिका राजवाटी आदि इसके महत्वपूर्ण पर्यटन स्थान हैं। इस महान संस्थान का इतिहास, बोलने के तरीके में, आधुनिक उड़ीसा का इतिहास है। यह राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीयता को बढ़ावा देने वाले विचारों का उद्गम था, सामाजिक लामबंदी को बढ़ावा देना और स्वतंत्रता संग्राम को बढ़ावा देना। इस संस्थान का भव्य हॉल इतिहास का एक थियेटर था: 1 अप्रैल 1919 को एक अलग प्रांत के रूप में उड़ीसा की घोषणा यहीं की गई थी। इसके बाद यह राज्य की पहली विधान सभा तक बना रहा और आजादी के बाद भी इसे राज्य की नई राजधानी भुवनेश्वर में स्थानांतरित कर दिया गया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान इस संस्था के छात्रों ने राष्ट्रवाद के प्रतीक के रूप में यूनियन जैक को उतारा था। केवल उत्कल विश्वविद्यालय ही नहीं बल्कि उड़ीसा राज्य संग्रहालय और मधुसूदन लॉ कॉलेज भी इस संस्थान की उपज हैं जो बाद के स्तर पर अपनी स्वतंत्र स्थिति प्राप्त करते हैं।

पुस्तकालय, आर्ट गैलरी और सभागार – कटक विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों का स्थान रहा है और कई उल्लेखनीय लेखक और कवि यहां रहते और काम करते थे। कटक में कई पुराने पुस्तकालय हैं। जिनमें रेनशॉ यूनिवर्सिटी में 'कणिका लाइब्रेरी' की पहली पुस्तकालय लाइब्रेरी, बिश्वनाथ पंडित सेंट्रल लाइब्रेरी, ओडिशा उर्दू लाइब्रेरी, मधुसूदन लाइब्रेरी, 'पीके पढिहारी पाठागार', 'बकुल लाइब्रेरी', 'बीरेन मित्रा लाइब्रेरी' आदि सीएमसी साहिद भवन आज भी देखे जा सकते हैं।

ओडिया फिल्म उद्योग – कटक में ओडिया फिल्म उद्योग का आधार है। उड़िया फिल्म उद्योग को लोकप्रिय रूप से ओलीवुड के रूप में जाना जाता है, यह नाम उड़िया और हॉलीवुड शब्दों का प्रतिरूप है। 1976 में राज्य सरकार ने कटक में उड़ीसा फिल्म विकास निगम की स्थापना की।

मूवी थिएटर – कटक को ओड़िया रंगमंच तथा फिल्म उद्योग के जन्मभूमि भी कह सकते हैं। 1926 में चामड़िया सिनेमा कंपनी नामक एक मोबाइल सिनेमा हॉल ने सिनेमा दिखाना शुरू किया था। इसके बाद अन्नपूर्णा थियेटर अस्तित्व में आया। आज शहर में 10 सिनेमा हॉल मौजूद हैं।

कटक की सांस्कृतिक एकता में यहां के मेले और त्यौहारों का अपनी एक अलग ही खूबी है। 'बालियात्रा', जिसे स्थानीय ओड़िया भाषा में "बोइत बन्दाण" कहा जाता है, यहां का एक प्रमुख और प्रसिद्ध महोत्सव है। 'बालियात्रा' का शाब्दिक अर्थ है 'बालि की यात्रा'। इन यात्राओं का उद्देश्य व्यापार तथा सांस्कृतिक प्रसार होता था। जिन विशाल नावों से वे यात्रा करते थे उन्हें 'बोइत' कहते थे। प्राचीन नौवाणिज्य परंपरा को दर्शाता यह समारोह आठ दिन तक चलता है, जिसमें रोज लाखों की भीड़ जमा रहती है। यह उत्सव कटक नगर में महानदी के किनारे गडगडिया घाट पर मनाया जाता है। यह उत्सव उस दिन की स्मृति में मनाया जाता है जब प्राचीन काल में ओडिशा के नाविक बाली, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो और श्री लंका आदि सुदूर प्रदेशों की यात्रा के लिए प्रस्थान करते थे। यह यात्रा कार्तिक पूर्णिमा से शुरू होती है। बालियात्रा उत्कल के नौवाणिज्य का स्वर्णिम स्मारक है। यह कटक का सबसे परिचित उत्सव है। इसके अलावा दूर्गापूजा, दीपावली, होली, रमजान, ईद आदि विविध उत्सव मनाया जाता है। धर्म के बंधन से दूर सभी एक साथ त्योहार में रंग जाते हैं।

कैसे पहूंचे :–

वायु मार्गः निकटतम नजदीकी हवाई अड्डा भुवनेश्वर का बीजू पटनायक हवाई अड्डा (30 कि.मी.) है।

रेल मार्गः कटक दिल्ली, कोलकता, मुंबई, चेन्नई जैसे प्रमुख शहरों से जुड़ा है।

सड़क मार्गः कटक भुवनेश्वर, चेन्नई और कोलकता जैसे बड़े नगरों से सीधे ही जुड़ा है।

कहां ठहरें :–

कटक में ठहरने की अच्छी व्यवस्था है। यहां सितारा होटल के साथ ही बजट होटल, गैस्ट हाउस उपलब्ध हैं।

गुरदासपुर : अध्यात्मिक पर्यटन क्षेत्र

पिन्डोरी धाम

–विनोद कुमार

''जहां बसे सियारा जी, तहां बसे भगवान।।
जहां बसें भगवान वह, स्वर्ग पिण्ड़ोरी धाम।।''

पंजाब शब्द की उत्पत्ति एक इंडो–ईरानी शब्द ''पुंज'' से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ पांच और ''आब'' का अर्थ जल होता है। इस प्रकार यह पांच नदियों अर्थात सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और जेहलम की स्थली है, जो इस राज्य की भूमि को उपजाऊ बनाकर पंजाब को समृद्ध बनाती हैं। यहां कि सांस्कृतिक विरासत, लोहड़ी, बैशाखी के साथ ही दूसरे त्यौहारों पर लगने वाले मेले, खान–पान एवं मेहमाननवाजी इसको ओर अन्य प्रदेशों से भिन्नता प्रदान करती हैं। पंजाब में मेले एवं अन्य सांस्कृतिक एवं धार्मिक आयोजनो पर ढोल एवं अन्य वाद्य यन्त्रों पर भंगड़ा एवं गिद्दा जैसे सामुहिक नृत्यों आदि की अपनी एक अलग ही परम्परा है।

पंजाब गुरूओं के साथ साथ पीरों और फकीरों की पवित्र भूमि है। यहां के प्रमुख धार्मिक स्थलों में दरबार साहिब स्वर्ण मंदिर, आनन्द पुर साहिब, गुरूद्वारा बाठ साहिब, अंकलेश्वर धाम, गुरूद्वारा दमदमा साहिब, गुरूद्वारा कंडा साहिब, देवी तला मन्दिर, मुक्तेश्वर मंदिर, आदि धार्मिक स्थल है जहां ऐसे धार्मिक आयोजनों पर प्रवचन और लंगर लगानें की परम्परा पाई जाती हैं। इन स्थानों की यात्रा करने वाले लोग धार्मिक स्थलों पर तीर्थयात्री और परिवहन, वाहन, होटल आदि के सेवा प्रदाताओं की नजर में 'टूरिस्ट' ही कहलाते हैं।

पंजाब में वर्ष 2018–19 में लगभग 4,57,96,030 पर्यटक आए थे। इस संख्या में 4,45,95,061 घरेलु तथा 12,00,969 विदेशी पर्यटकों का आगमन हुआ। पर्यटन मंत्रालय की सूचना के अनुसार, वर्ष 2009 से लेकर 2018 तक के आकड़ों पर नजर डालें तो पंजाब में आने वाले पर्यटकों की संख्या में लगभग 8.35 प्रतिशत की दर से वृद्धि हुई है, जिसमें घरेलु पर्यटकों की संख्या बहुत अधिक है।

तीर्थ शब्द का सामान्य अर्थ पवित्र स्थल जिसका सम्बन्ध किसी देवी–देवता, चमत्कारिक महान घटना, महापुरूषों के उपदेशों एवं पवित्र नदियों के संगम आदि से है। प्रति वर्ष लाखों की संख्या में लोग ऐसे धार्मिक स्थानों की यात्रा करते हैं और इन सब के बावजूद यह भी तथ्य है कि आजकल बहुत से लोग गर्व से खुद को धर्मनिरपेक्ष बताते हैं। इस प्रकार, दूसरे शब्दों में वह खुद को तीर्थयात्री नहीं बल्कि 'टूरिस्ट' कहलाना ही चाहते हैं।

इसी पंजाब राज्य का एक शहर है, गुरदासपुर। कुछ वर्षो पहले तक, पंजाब से बाहर, बहुत ही कम लोगों को इस शहर के बारे में पता था कि। मजे की बात यह है कि हिन्दी फिल्मों की बहुत बड़ी हस्ती देव आनंद, उनके भाई चेतन आनंद (निर्देशक) और विजय आनंद, हॉकी खिलाड़ी सुरजीत सिंह रंधावा और प्रभजोत सिंह, भारत के जाने माने तबला वादक एवं संगीतकार

*पुस्तकाध्यक्ष, होटल प्रबन्ध संस्थान, गुरदासपुर (पंजाब)

अल्ला रक्खा उनके पुत्र जाकिर हुसैन, एयर चीफ मार्शल दिलबाग सिंह, चंडीगढ़ के रॉक गार्डन के सृजक नेक चंद सैनी, शिव कुमार बटालवी (पंजाबी लेखक) जैसी मशहूर हस्तियां गुरदासपुर से ही थे। फिर भी गुरदासपुर आम भारतीयों में 'अन्नोटिस्ड' ही रहा। वर्ष 1998 में फिल्म अभिनेता विनोद खन्ना के सांसद बनने के बाद इस शहर की तरफ लोगों का ध्यान गया।

पुराणों में पवित्र स्थल होने के तीन कारण बताए गए हैं:

1. आश्चर्यजनक विशेषताएं।
2. किसी जलाशय की अनोखी प्रवृत्ति।
3. किसी ऋषि–मुनि आदि का निवास स्थान।

हिन्दू धर्म शास्त्रों में तीर्थों को तीन भागों में बांटा गया हैं–

1. जंगम, 2. स्वावर और 3. मानस

युगों के अनुसार पुराणों में तीर्थ कृतयुग में पुष्कर,त्रेता युग में नेमिषारण्य, द्वापर युग में कुरूक्षेत्र एवं कलियुग में गंगा को तीर्थ माना हैं।

शोध का मुख्य उद्देश्य:

- पिण्डोरी धाम के प्रमुख क्षेत्रों का विवरण एवं उनका उल्लेख।
- पिण्डोरी धाम का पर्यटन के क्षेत्र में महत्व एवं वर्तमान परिदृश्य।

गुरदासपुर जिले की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

गुरदासपुर के पूर्ण इतिहास के बारे में, हिस्ट्री सोसाईटी के प्रधान व प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो. राजकुमार शर्मा ने दैनिक जागरण को दिए एक साक्षत्कार में बताया कि गुरदासपुर को संत गुरिया जी ने बसाया था। प्रो. शर्मा के अनुसार, एक गाथा के मुताबिक गुरिया जी का जन्म 16वीं शताब्दी के अंत में महाराष्ट्र के घने जंगल में हुआ था। गुरिया जी अपने परिवार एवं श्रृद्धालुओ के साथ भगवान श्रीराम की नगरी अयोध्या आए थे और फिर वहां से गुरदासपुर से उत्तर की ओर स्थित ऐतिहासिक गांव पनियाड़ में आ बसे थे। उनके पिता का नाम गोपी जी महाराज था। प्रो. शर्मा ने बताया कि गुरिया जी कौशल गोत्र के बहुत पढ़े लिखें व संत स्वभाव के सांवल ब्राहमण थे। 1865 के बंदोबस्त में इस बात का वर्णन मिलता है कि महंत गुरिया जी ने सांघी गोत्र से जाटों से वर्तमान गुरदासपुर की कृषि योग्य भूमि खरीदी थी और इसका नाम अपने नाम पर गुरदासपुर रख दिया। गुरिया जी के दो लड़के थे – नवल राय एवं पाला जी। महंत नवल राय के लड़के साहिब दीप चंद अपने समय के प्रसिद्ध व्यक्ति हुए है।

गुरिया जी के वंशज उनके गद्दीनशीन बने और बड़ी सरकार कहलाए दूसरे परिवार को छोटी सरकार कहा जाता है बडी सरकार का निवास स्थान रंग महल था ओर छोटी सरकार का संबंध झूलन महल से है।

यह लेख संकल्पनात्मक शोध लेख पुस्तकालयों में प्राप्त साहित्य, विश्वकोष आदि में उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। कुछ सूचनाए सम–सामायिक पत्र–पत्रिकाओं एवं दैनिक समाचार–पत्रों जैसें कि हिन्दुस्तान टाइम्स, ट्रिब्यून, अमर उजाला, दैनिक भास्कर एवं दैनिक जागरण, पंजाब केसरी के दैनिक एवं साप्ताहिक अंको में प्रकाशित सामग्री और कुछ सूचनाएं पिण्डोरी धाम स्थल की समय – समय यात्रा कर वहां पर उपलब्ध साहित्य तथा चित्रों से प्राप्त की गई हैं।

पिण्ड़ोरी धाम के पवित्र स्थलों का अवलोकन एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः

''महात्मनाय चरितं श्रोजव्यं नित्समेवहि''
''नितप्रति सन्तान के चरित सुनहूं गुनहूं मन लाय''

गुरदासपुर में वैष्णव सम्प्रदाय की दो प्रमुख गद्दीयां मानी जाती है जिसमें एक ध्यानपुर की गद्दी और दूसरी पिण्ड़ोरी धाम की गद्दी प्रमुख रूप से प्रसिद्ध हैं। गुरदासपुर से दस कि.मी. दूर पूर्व में पंजाब नरेश महाराज शेरसिंह के खण्डित किले के समीप एक किला दिखाई देता है इसकी पुरानी किलेनुमा चार दीवारी देख कर ऐसा लगता है कि मानो यह किसी प्राचीन राज्य के स्मृति–चिन्ह हों, जबकि यह एक योगीराज की यज्ञशाला एवं तपोभूमि का स्थान है।

पिण्ड़ोरीधाम का मुख्य द्वार

श्री गोविन्द गोसदन

वर्तमान स्वामी वैष्णवाचार्य श्री रघुबीर दास जी महाराज

श्री नारायण जी महाराज को विष पिलाने की एक पेंटिंग

इस विशाल भवन के दाहिनी ओर श्री महेशदासजी महाराज का समाधि स्थल एवं मंदिर है जिन्होंने श्री बाबा योगीराज श्री भगवान जी महाराज के परलोक सिधारनें के उपरान्त आचार्य पद ग्रहण करने से मना कर दिया था और अपना समस्त जीवन प्रभु– भजन, तप और जनसेवा में व्यतीत कर दिया था। उनकी समाधि के पास ही उनकी कुतिया की मूर्ति है। जिसके बारे में कहा जाता है कि वह मुगल बादशाह जहांगीर के सामने सवा मन अफीम खा गई थी। इस पर भी उसे कुछ नही हुआ और वह फिर भी वह दुम हिलाती रही, मानो और खानें की इच्छा प्रकट कर रही हों। यह श्री महेशदासजी महाराज का ही प्रताप था। इस कथा के बारे में वहां के स्थानीय निवासी श्री प्रदीप सिंह जी ने बताया कि उनके पूर्वज पिण्ड़ोरी धाम के विषय में बतातें थे कि इस क्षेत्र के आसपास के कुछ किसान अफीम की खेती भी करते थे। एक बार खबर मिली कि बादशाह जहांगीर पठानकोट से लाहौर जाते हुए गुरदासपुर आ रहे थे। हड़बड़ी में किसानों

ने अपनी अफीम पिण्ड़ोरी में मन्दिर के बाहर छुपा दी। मुगल सैनिक बादशाह को पिण्ड़ोरी ले आए। लेकिन उनके छापा मारने से पहले ही वह कुतिया सारी अफीम खा गई। बादशाह के सैनिकों को वहां कुछ नहीं मिला था।

कुछेक पुस्तकों में ऐसे भी उल्लेख मिले है कि एक बार पूरे देश में अकाल पड़ा था। लेकिन महाराज जी के तप और प्रार्थना करने पर इस क्षेत्र में अगली फसल में गेहुं के बहुत बड़े–बड़े दाने उत्पन्न हुए जो वजन में आम तौर पर होने वाली फसल से आठ–दस गुणा अधिक थे। यह महाराज जी के तप एवं योग का ही प्रताप था।

योगीराज श्री भगवान जी महाराज समाधि से पहले श्री महेश जी महाराज की समाधि है। कहा जाता है कि श्री योगीराज श्री महेश को अतियोग्य मानते थे और उन्होंने श्री महेश महाराज को कहा था कि जो भी यात्री पिण्ड़ोरी धाम में आएगा, मेरे दर्शनों के पहले वह तुम्हारी समाधि के दर्शन करेगा, तभी उसकी यात्रा सफल होगी।

पवित्र सरोवर का मुख्य द्वार

अब धाम के अन्दर के दर्शन के दाहिनी ओर घुड़साल की दीवार के साथ ज्योति स्वरूप की समाधि है। उनकी समाधि से थोड़ा हटकर, यहां एक बैल की पत्थर की मूर्ति हैं जिसके बारे में बताया जाता है कि उस समय में वह बैल दरबार

श्री महेशदास जी महाराज का पवित्र स्थल

पवित्र सरोवर में शिव मंदिर के दर्शन करते स्थानिय पर्यटक

सरोवर के किनारे खड़े लेखक

श्री पिण्डोरी धाम के तपस्वियों के लिए दूर–दूर के गांवों में भिक्षा लेने जाता था और भिक्षा में प्राप्त आटा, चावल या अन्य खाद्य सामग्री अपनी पीठ पर लदवा कर लौट आया करता था।

इसके समीप ही उसी समय का बना हुआ एक और भवन हैं जिसमें योग्य गुरू के योग्य शिष्य श्री नारायण जी की समाधि है। श्री नारायण जी महाराज की ख्याति तथा तपोबल की परीक्षा लेने के लिए जहांगीर ने इन्हें विष के सात प्याले पिलाए, परन्तु श्री गुरुदेव जी की कृपा से आपको कुछ भी नही हुआ। बताया जाता है कि श्री आचार्य द्वारा वैष्णव सम्प्रदायों की निधार्रित 52 (बावन) गद्दीयों में दरबार पिण्डोरी धाम भी श्री भगवान नारायण जी की परम सिद्ध गद्दी है।

इसके आगे नारायणी ड्योढ़ी हैं, फिर एक विशाल आंगन है इसके एक ओर एक बड़े दरवाजे से होकर प्राचीन आश्रम में पहुंचते हैं जो एक मस्जिद के समान दिखाई देता है। लेकिन यह मस्जिद नही है। यह श्री रघुनाथ जी महाराज का समाधि स्थल है जिसको बादशाह जहांगीर ने बनवाया था। उसने बहुत सी भूमि तथा एक लाख जागीर पिण्डोरी के नाम कर दी थी।

इस मंदिर के पास एक गुफा है जिसमें श्री महाराज तप करते थें। उनके परिनिर्वाण के पश्चात जहांगीर ने ही इस गुफा का भी निर्माण करवाया था

मुख्य परिसर के बाहर, लेकिन मुख्य मंदिर में जाने से पहले ही बायीं ओर लगभग पांच एकड़ में सरोवर है। अब इसे अनेक देवी देवताओं की विभिन्न मूर्तियों से सजाया गया है और धाम की ओर से इन अच्छी प्रकाश व्यवस्था की गई है। सरोवर के आस पास एक बड़ा क्षेत्र हरियाली से भरपूर है। संध्या आरती के बाद लोग इस खुले सरोवर पर घूमने का आनंद उठाते हैं। इसके साथ ही संतों के आवास बने हैं।

बाहरी ओर एक ओर संस्कृत महाविद्धालय है। इसी परिसर में यात्रियों के विश्राम और ठहरने के लिए विश्राम गृह है जिसमें लंगर की भी व्यवस्था है।

''जहां बसे सियारा जी, तहां बसे भगवान।।

जहां बसें भगवान वह, स्वर्ग पिण्ड़ोरी धाम।।''

पिण्ड़ोरी धाम में एक सप्ताह तक चलनें वाले बैशाखी के मेले का भी आयोजन किया जाता है जो कि आस–पास के निवासियों के लिए एक आकर्षण का मुख्य केन्द्र है। इस अवसर पर मेले में आने वाले पर्यटकों की संख्या बढ़ जाती है, तथा लोग अपनें परिवार सहित मेले में आकर पिण्ड़ोरी धाम में स्थित पवित्र सरोवर में स्नान कर मुख्य मंदिर में योगीराज भगवान के दर्शन कर धर्म लाभ उठाते हैं।

पिण्डोरी धाम पवित्र सरोवर में स्थित भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारो का चित्रण

पिण्ड़ोरी धाम के सद्गुरूओं का वर्णनः प्रथम परमाचार्य स्वामी श्री योगिराज भगवान महराज, दूसरे श्री आचार्य स्वामी योगिराज श्री नारायण जी महाराज, सद्गरू श्री योगीराज बाबा महेश दास जी महाराज, तीसरे श्री आचार्य स्वामी योगिराज सद्गुरू श्री आनन्दघन जी महाराज, चौथे श्री आचार्य स्वामी सद्गुरू श्री हरिराम जी, पांचवें श्री आचार्य स्वामी सद्गुरू सुखनिधान, छठवें श्री आचार्य स्वामी सद्गुरू श्री रामदास महाराज, सातवें श्री आचार्य स्वामी सद्गुरू श्री रामकृष्ण दास महाराज, आठवें श्री आचार्य स्वामी सद्गुरू श्री केशव दास महाराज, नौवें श्री आचार्य स्वामी सद्गुरू श्री नरोत्तम दास महाराज, दशवें श्री आचार्य स्वामी सद्गुरू श्री गंगा दास महाराज, ग्यारहवें श्री आचार्य स्वामी सद्गुरू श्री राधिका दास महाराज, बारहवें श्री आचार्य स्वामी सद्गुरू श्री ब्रहम दास महाराज, तेहरवें श्री आचार्य स्वामी सद्गुरू श्री राम दास महाराज, चौदहवें श्री आचार्य स्वामी सद्गुरू श्री गोविन्द दास महाराज, तथा

सरोवर का मनोरम दृश्य

वर्तमान में गद्दी आसीन पन्द्रहवें स्वामी वैष्णवाचार्य श्री रघुबीर दास जी महाराज जी के गद्दी आसीन होने के उपरान्त पिण्ड़ोरी धाम में स्थित मंदिरों एवं सरोवर तथा अन्य पार्किगं स्थल तथा पार्क का सौन्दर्यकरण तथा वर्तमान स्वरूप प्रदान करनें के निरन्तर प्रयासरत रहतें है। वर्तमान में कथा स्थल का निर्माण, गीता भवन का निर्माण करवाकर पिण्ड़ोरी धाम को आर्कषण का केन्द्र बनाया है। समय– समय पर धार्मिक आयोजन, कथा तथा यज्ञ आदि का सफल आयोजन कराते हैं, इस अवसर पर देश – विदेशों से पर्यटक पहुच कर धर्मलाभ उठाते हैं तथा स्वामी जी के आर्शीवाद एवं उपदेशों से लाभान्वित होते हैं।

दरबार पिण्डोरी धाम केवल एक धर्म स्थान ही नही है अपितु यह वैष्णव सम्प्रदाय का एक बहुत बड़ा मठ और हिन्दु धर्ममावलम्बियों का एक ऐतिहासिक स्मृति–स्थल भी है।

आप भी जब कभी गुरदासपुरके पिण्डोरी धाम की एक बार यात्रा जरूर करें।

*** सभी चित्र डॉ. विनोद कुमार से साभार**

महाराष्ट्र

रामटेक का गढ़ मंदिर

–क्षेत्रपाल शर्मा

गुजरात राज्य की पूर्वी सीमा से आरम्भ होकर, पूर्व की ओर छत्तीसगढ़ तक फैली हुई सतपुड़ा पर्वतमाला में के दक्षिणी पठार के बीच महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश की सीमा पर प्राचीन नाग नदी के किनारे (जो अब लोप हो गयी है) बसा हुआ है, नागपुर। यह स्थान महाराष्ट्र की दूसरी राजधानी और गोंडवाना राजाओं का प्रमुख स्थान भी रहा है। नागपुर शहर से करीब 50 कि.मी. दूर हरे–भरे सघन वन और ऊंची पहाड़ियों से गिरते झरनों के पास बसा रामटेक, बरबस ही पर्यटकों का मन मोह लेता हैं।

हम कामठी होते हुए बस से कान्हा नदी पार कर लगभग एक घंटे में रामटेक बस स्टैंड पहुंचे और वहां से ऑटो रिक्शा में ₹20 प्रति सवारी देकर हम प्रातः बेला में ही गढ़ मंदिर पहुंच गए।

पहाड़ी कुछ ऐसी है कि यह है तीन तरफ से पानी से घिरी हुई और सघन हरे वनों से आच्छादित है और जब हम पहुंचे तो आकाश काले बादलों से पूरी तरह आच्छादित था और थोड़ी देर बाद ही हल्की हल्की बारिश होने लगी थी। मंदिर के तीन प्रमुख द्वार पार करके अगस्त मुनि का मंदिर बायीं तरफ सामने लक्ष्मण जी का मंदिर और उसके बाद श्रीराम जी का मंदिर है।

मंदिर की ऊंचाई 345 मीटर है। यह 350 फीट लंबी और अद्वितीय ॐ आकार की संरचना के लिए सबसे प्रसिद्ध है। यहां भगवान राम के 'पादुकाओं' की पूजा की जाती है।

***सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली*

गढ़ मंदिर पर लंगूरों के बहुत जत्थे के जत्थे बैठे थे। दिन के 11 बजे तक इतने बड़े प्रांगण में कुल मिलाकर विभिन्न जगहों पर शायद 50 आदमी रहे होंगे जिनमें अधिकांश सेना के जवान नजर आए। आज भी वही सादा धोती–कमीज और सिर पर टोपी लगाए हुए लोग दिखाई दिए जिनमें कुछ बुजुर्ग भी थे, यही मराठा संस्कृति है और नागपुर का वह अपनापन है जो भुलाए नहीं भूलता।

नागपुर रेलवे स्टेशन से बस या टैक्सी से रामटेक पहुंचने में घंटे भर का समय लगता है और उसके आगे रामगिरि की तलहटी तक जाने में भी आधा घंटा लग जाता है जबकि दूरी केवल पांच कि.मी. के आसपास ही है।

सड़क के घुमाव को ऊपर तक चौड़ा किए जाने से, आप अपने वाहन अथवा बस से राम गिरी किले तक जा सकते हैं। रास्ते में बाजारों और संकरी गलियों के बीच में से निकलते हुए, पहाड़ी के ऊपर रामगिरि की चोटी तक ड्राइव की जा सकती है। पहाड़ी पर पैदल भी जा सकते हैं।

रामटेक के बारे में....

हम पहले इस जगह के नाम के विषय में बताते हैं। भगवान राम के जीवन सांसारिक कल्याण में बीता, वह वन–वन भटकते हुए मनुष्यों का जीवन सुरक्षित बनाने के लिए असुरों का संहार करते रहे। वन में भटकते हुए भगवान राम देवी सीता और लक्ष्मणजी के साथ जिन स्थानों से गुजरे

उनमें से कई स्थान आज भी उनकी यात्रा की गवाही देते हैं इनमें से ही एक स्थान है 'रामटेक।'

कहते हैं वनवास के दौरान श्रीराम इस स्थान पर पर चार माह टिके थे अर्थात चार माह व्यतीत किए थे। जैसा कि सभी जानते है 'टिकना' यानी कुछ समय का वास, तो इसीलिए इस जगह का नाम रामटेक पड़ गया। इसके अलावा इसी स्थान पर माता सीता ने पहली रसोई बनाई और सभी स्थानीय ऋषियों को भोजन कराया था। इस स्थान का जिक्र पद्मपुराण में भी मिलता है।

प्राचीन जनश्रुति के अनुसार रामचंद्र जी विश्राम काल में शंबूक नामक दानव ने यज्ञ करते हुए ऋषियों पर आक्रमण किया और श्री राम ने इसी स्थान पर उसका वध किया था।

रामटेक की एक पहाड़ी पर बने इस मंदिर की भव्यता के चलते ही इसे मंदिर की बजाए गढ़ कहा जाता है। लोगों की मान्यता है कि वर्षाकाल में जब यहां बिजली चमकती है तो मंदिर के शिखर पर प्रकाशित होती ज्योति में श्रीराम का रूप दिखाई देता है।

श्रीराम की ऋषि अगत्स्य भेंट

रामटेक में ही मर्यादा पुरुषोत्तम राम महर्षि अगत्स्य से मिले थे। कहा जाता है कि रामटेक में जब श्रीराम ने जगह जगह अस्थियों के ढेर देखे तो जिज्ञासा व्यक्त की और तब ऋषि ने उन्हें बताया कि यह अस्थियां उन ऋषियों की हैं जो यहां पर यज्ञ आराधना एवं अनुष्ठान करते थे। परन्तु दानव उनके यज्ञ में विघ्न डालते हैं और कई बार ऋषियों का वध भी कर देते थे। यह सुनकर प्रभु श्रीराम बहुत व्यथित हुए और उन्होंने इस स्थान को दानवमुक्त कराने का संकल्प लिया था कहा जाता है कि वहीं श्रीराम ने प्रतिज्ञा की थी कि वह उन सभी दानवों का अंत करेंगे जो ऋषियों, मुनियों को प्रताड़ित करते हैं। तत्पश्चात ही ऋषि अगत्स्य से श्रीराम ने शस्त्र ज्ञान प्राप्त किया था।

कुछ विद्वानों का मतानुसार, अगत्स्य ऋषि रावण के चचेरे भाई थे। उन्होंने रामटेक में ही श्रीराम को रावण के अत्याचारों सहित उसके परिवार, शास्त्रज्ञान, शिव के प्रति अगाध भक्ति, लंका नगरी आदि के बारे में उन्हें पहले ही अवगत करा दिया था। इसके बाद अगत्स्य ऋषि ने भगवान राम को ब्रह्मास्त्र भी प्रदान किया। यह वही ब्रह्मास्त्र था जिससे श्रीराम ने रावण का वध किया था।

अगस्त्य मुनि का आश्रम:

रामटेक की तलहटी में बसा है ऋषि अगत्स्य का भव्य आश्रम जिसका संरक्षण पुरातत्व विभाग करता है। यहां त्रेता–युग में निर्मित एक यज्ञशाला है। इसी पवित्र स्थान पर अगस्त्य मुनि ने भगवान श्रीराम का स्वागत किया था।

राज्य सरकार के सहयोग से इस स्थल का पुनरोद्धार कराया गया था, जिसमें इसकी सुन्दरता बढ़ाने के लिए फर्श पर संगमरमर और कुछ दीवारों पर धार्मिक चित्रकारी की गई है। मुख्य द्वार से थोड़ा आगे एक गहरा गर्भगृह है। यह अगस्त्य मुनि की ध्यानगुफा है। अब इस के ऊपर एक लोहे का दरवाजा लगाया गया है। आजकल केवल चुनिंदा संतों को ही गुफा में प्रवेश करने की अनुमति दी जाती है। तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए एक धर्मशाला भी बनाई गई है। इस पूरे तीर्थस्थल की देखभाल और पूजा संचालन आदि का कार्य आश्रमवासी तपस्वियों के एक मंडल द्वारा किया जाता है।

अगस्त्य मुनि की शांत गुफा से थोड़ा आगे चलने पर बहुत से मंदिर हैं। इनमें, सबसे पहला मंदिर लक्ष्मण जी का है। लक्ष्मण जी का मंदिर पहले क्यों है, इस बारे में बताया जाता है कि उन्होंने ही श्री राम और सीता को इस सुन्दर वन की ओर आगमन के लिए प्रेरित किया था। इसके बाद राम और सीता मंदिर है। फिर हनुमान जी, साईं बाबा, गजानन महाराज और रामायण के मंदिर और उसके आगे अनेक देवी–देवताओं के मंदिर हैं।

भगवान विष्णु–वराह का विशाल, दुर्लभ मन्दिरः

घाटी और किले के मध्य विष्णु–वराह मन्दिर है जिसमें कई टन वजनी एक ही विशालकाय चट्टान को तराश कर वराह मंदिर बनाया गया है। कुछ विद्वानों अनुसार इनका निर्माण काल 16वीं सदी बताया गया है।

रामटेक का किला

रामटेक का किला प्राचीन रामगिरी पहाड़ी पर है। रामटेक किले को किला न कह कर गढ़मंदिर कहा जाता है और इसके निर्माण में रेत का किसी भी तरह के प्रयोग नहीं किया गया है। यह जानकर आपको हैरानी जरूर होगी लेकिन यही सत्य है। इसे केवल पत्थरों से, वह भी एक के ऊपर एक पत्थर रखकर बनाया गया है। साथ ही यह भी चौंकाने वाली बात है कि सदियां बीत गई हैं लेकिन इस किले का एक भी पत्थर टस से मस नहीं हुआ। स्थानीय लोग इसे श्रीराम की कृपा मानते हैं। माना जाता है कि 18 वीं शताब्दी में नागपुर के मराठा शासक रघुजी भोंसले ने छिंदवाड़ा के देवगढ़ किले पर उनकी विजय के बाद पुनर्रोद्धार कर वर्तमान मंदिर बनवाया था।

रामटेक मंदिर की संरचना ही नहीं बल्कि इसी परिसर में स्थापित तालाब भी अद्‌भुत है। जानकारों का कहना है कि इस तालाब का जल स्तर हमेशा ही सामान्य बना रहता है और इसका जल न तो कभी कम होता है और न ही कभी ज्यादा। इस तलाब की यह खूबी लोगों को हैरत में डाल देती है।

मंदिर का अद्‌भुत है तालाब

कालिदास का स्थान...

रामटेक ही वह स्थान है जहां पर महाकवि कालिदास ने महाकाव्य मेघदूत की रचना की थी। इसमें रामटेक का जिक्र 'रामगिरि' के रूप में मिलता है। यहां पर 'रामगिरि' से आशय उस स्थान से है जहां पर श्रीराम ने निवास किया था। कालांतर में इसका नाम रामटेक हो गया। इसके ही ठीक सामने कालिदास स्मारक है जिसका निर्माण महाराष्ट्र सरकार ने करवाया है। यह एक गोलघर है। इसे कालिदास की कृतियों पर आधारित रंगीन कलात्मक चित्रकारी और पेंटिंग्स से सजाया गया है। उसके ठीक सामने अर्धचंद्राकार दीर्घा (गैलरी) बनी हुई है जिसमें ऊपर संस्कृत में और नीचे हिंदी भावार्थ सहित संपूर्ण मेघदूत के श्लोक दिए गए हैं।

इस दीर्घा और गोलघर के बीच में एक बहुत ही सुंदर फव्वारा है। इसके ठीक पीछे एकवीरा (माता) मंदिर है और उसके थोडा आगे आमने–सामने दो रंगशालाएं है। यहां उत्सवों पर यहां कालिदास के नाटक भी अभिनीत और मंचित किए जाते हैं।

संस्कृत साहित्य के शीर्षस्थ कवि कालिदास ने अपनी कल्पना की सजीव उड़ान ''मेघदूत'' काव्य की रचना इसी स्थान पर की थी। एक जर्मन विद्व ान ने तो यहां तक कह दिया था कि कहना बडा ही मुश्किल है कि यह कल्पना है या यथार्थ? पत्नी से दुत्कारे हुए एक साधारण व्यक्ति पर जब दैवीय कृ पा होती है तो वह मेघदूत जैसी असाधारण रचना कर पाता है और यही चमत्कार कालिदास ने भी किया जो उनकी कल्पना की सफलतम उड़ान मेघदूत के रूप में संसार के सामने प्रकट हुई है। कवि की वह दृष्टि जिसमें सृष्टि थी। "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" (वाल्मिकी) और गायन्ति देवाकिल गीतिकानी'' (विष्णु पुराण) जैसे उद्‌घोष का शंखनाद करने वाले सार्वजनिक और सर्वकाले कवि कालिदास हुए हैं। आषाढ़ श्रावण में जब आकाश में मेघ अपनी रसमयी छटा बिखेरते हैं तो प्रकृति अपना श्रृंगार करती है और प्रकृति के इस श्रृंगार में ही सृजन की श्रृंखला छिपी हुई है।

आषाढ़ और श्रावण में प्रकृति की सुंदरता में छटा देखते ही बनती है। मेघों की मालाएं पूरे आकाश में चित्रकारी करती हैं और उनके मिलन (कड़क) से जब बिजली कौंधती है तो वह अपनी गर्जना से एक विरही की व्यथा को कई गुना बढ़ा देती है और वह मेघ को अपना संदेश वाहक बनाता है। मेघ को यह भी निर्देश देता है वह किस तरह किस दिशा में जाएगा और उसे किस हालत में उसकी प्रियतमा मिलेगी साथ ही प्रियतमा और अन्य स्त्रियों का इतना सुंदरतम वर्णन अन्यत्र शायद ही कहीं मिलता हो।

छह सदियों से भी पुराना रामटेक मंदिर, अपने साथ जुड़ी पौराणिक कथाओं के लिए प्रसिद्ध है। किंवदंती है कि भगवान राम ने अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ इस स्थान पर विश्राम किया था। यही बैठ कर महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य मेघदूत (''मेघदूतम्'') को कविता में पिरोया गया था। नागपुर से 50 किमी. दूर यह जन्नत सी जगह शहर के शोर से दूर सुकुन प्रदान करती है।

शांतिनाथ जैन मंदिर

रामटेक जैन धर्मावलम्बियों के लिए भी एक प्रसिद्ध पवित्र स्थल है। रामटेक के निकट इसी नाम के गांव के बाहर स्थित प्राचीन स्थल को श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र के नाम से जाना जाता है जिसमें जैन तीर्थंकरों की विभिन्न प्राचीन मूर्तियां हैं।

16वें तीर्थंकर शांतिनाथ की मुख्य मूर्ति के साथ एक पौराणिक कथा जुड़ी हुई है। जैन अनुयायी इस प्राचीन जैन प्रतिमा को चमत्कारी बताते हैं। इसलिए भक्तों द्वारा इस स्थान को आमतौर पर अतिशय रामटेक जी कहा जाता है। वास्तु कला निर्माण में भोंसले राजाओ द्वारा निर्मित देवालय समूह और तलहटी में विशाल परिसर में दिगम्बर जिनालय शिखर समहू, अतिशययुक्त श्री 1008 भगवन शांतिनाथ की पीले पाषाण से निर्मित लगभग तेरह फीट ऊंचाई की खडगासन प्रतिमा (जिसके बारे में बहुत से विद्वानों का मत है कि यह चतुर्थ शताब्दी की है), अनेक वेदियां, पाषाण पर उत्कीर्ण उत्कृष्ट कलाकृतियां आकर्षण का प्रमुख केंद्र हैं। यहां 15 मंदिर स्थापित हैं। माना जाता है कि शांतिनाथ मंदिर में स्थापित भगवंत शांतिनाथ की मूर्ति भक्तों की मनोकामना पूरी करती है।

इस मंदिर के आसपास आठ अन्य मंदिर तथा एक प्राचीन, बहुत ही शानदार और सुंदर मानस्तम्भ भी है। यह तब और लोकप्रिय हो गया जब प्रमुख दिगंबर जैन आचार्य विद्यासागर ने बरसात के चार महीनों में चातुर्मास के दौरान यहां कई बार सत्संग करने आए थे उनकी प्रेरणा से, एक बड़े जैन मंदिर का निर्माण किया गया है।

कैसे पहुंचे :

वायु मार्ग : निकटतक हवाई अड्डा नागपुर है

रेलमार्गः नागपुर से प्रति दिन तीन रेलगाड़ियां रामटेक जाती है। रेलवे स्टेशन से मंदिर की दूरी पांच कि.मी. है।

सड़कः– मध्य और पश्चिमी भारत के मुख्य राजमार्गो से नागपुर जुड़ा है।

खिन्दसी झील

खिन्दसी झील रामटेक के महत्वपूर्ण पर्यटन के आकर्षणों में से एक है। झील में बोटिंग, केलानुमा नाव 'बनाना–बोटिंग', वॉटर स्कूटर, अक्वा जोर्बिंग जैसे साधारण खेल संचालित किए जाते हैं। निकट भविष्य में पैरासेलिंग भी आरम्भ की जा सकती है। इस सुरम्य झील से कुछ पहले पर्यटकों की आवास सुविधा हेतु कई रिसॉर्ट्स

तथा खानपान सुविधा के लिए रेस्तरां उपलब्ध हैं। यह मध्य भारत का सबसे बड़ा नौका विहार केंद्र और प्रति वर्ष आने वाले पर्यटकों के लिए एक मनोरंजन पार्क है।

रामटेक के पास खिन्दसी झील की शांत सुंदरता ने इसे एक आदर्श पिकनिक स्थल का रूप दे दिया है। नागपुर से लगभग 60 कि.मी. दूर स्थित खिन्दसी तक सुविधाजनक सड़क मार्ग होने से अब प्रायः शनिवार और रविवार को झील पर बहुत भीड़ होती है। आप पानी के खेल में भाग ले सकते हैं या नाव की सवारी का आनंद ले सकते हैं। झील के किनारे प्राकृतिक सुंदरता के बीच जिन्दगी के कुछ पल बिता सकते हैं।

खिन्दसी झील में प्रवेश शुल्क : रु.25 प्रति व्यक्ति

नाव की सवारी : मोटर बोट, वॉटर स्कूटर, अक्वा जोर्बिंग के लिए प्रति व्यक्ति रु.100 पैडल बोट के लिए रु.75 प्रति व्यक्ति

समय सुबह 10:00 बजे – शाम 6:30 बजे

महत्वपूर्ण तथ्य

- कुछ विद्वानों के मत में यह महाकवि कालिदास के 'मेघदूत' में वर्णित रामगिरि है। इस विस्तृत पर्वतीय प्रक्षेत्र में कई छोटे–छोटे सरोवर स्थित हैं, जो शायद 'पूर्वमेघ' में उल्लिखित 'जनकतनया स्नान पुण्योदकेषु' में निर्दिष्ट जलाशय हैं।
- रामचंद्र जी का एक सुंदर मंदिर ऊंची पहाड़ी पर बना हुआ है। मंदिर के निकट विशाल वराह की मूर्ति के आकार में कटा हुआ एक शैलखंड है।
- रामटेक को 'सिंदूरगिरि' भी कहते हैं। इसके पूर्व की ओर 'सुरनदी' या 'सूर्यनदी' बहती है।
- इस स्थान पर एक ऊंचा टीला है, जिसे गुप्तकालीन बताया जाता है। चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त ने रामगिरि की यात्रा की थी। इस तथ्य की जानकारी 'रिद्धपुर' के ताम्रपत्र लेख से होती है।
- रामटेक में जैन मन्दिर भी है।
- वर्तमान में इसके जीर्णोद्धार की जरूरत है।

कुल मिलाकर प्रकृति की गोद में बसा है यह स्थल जब कभी नागपुर की ओर आए तो रामटेक जरूर देखें।

अनजाने अध्यात्मिक पर्यटन स्थल

कलियार शरीफ

—मोहन सिंह

भारतीय संस्कृति सदियों से महान अपनी धार्मिक एकता के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध रही है। सामंजस्य की यह भावना भारत के सामाजिक परिवेश का एक महत्वपूर्ण सूत्र है। पीर कालियार, जिसे कालियार शरीफ के नाम से भी जाना जाता है, इसका एक उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। उत्तराखंड के हरिद्वार के दक्षिण में स्थित, पीर कलियार में सूफी संत अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियारी की दरगाह शांति हैं। दरगाह जाने के लिए, कलियार गांव तक पहुँचने में आधे घंटे से ज्यादा का समय नहीं लगता है।

रुड़की शहर के बाहरी इलाके में हजरत मखदूम अलाउद्दीन अली अहमद की दरगाह वास्तव में ही एक देखने लायक स्थान है। यह स्थान सभी धर्मों के बीच एकता का जीवंत उदाहरण है। यहां आने–जाने वाले भक्तों की मनोकामनाएं निश्चित रूप से पूरी होती हैं और शायद इसीलिए देश ही नहीं विदेशों से भी सभी धर्मों के लाखों भक्त प्रति वर्ष यहां दरगाह पर आते हैं। इस्लामिक कैलेंडर के रबीउल महीने के दौरान चांद दिखने के पहले दिन से लेकर पूरे 15 दिन तक यहां बाबा का उर्स मनाया जाता है।

पिरान कालियार शरीफ

13वीं सदी के चिश्ती परम्परा के सूफी संत, अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कालियारी को सरकार साबिर पाक भी कहा जाता है। कलियारी गांव रुड़की से दस किलोमीटर दूर गंग नहर के तट पर स्थित हिन्दुस्तान की सबसे प्रतिष्ठित दरगाहों में से एक है। यह केवल मुस्लिम ही नहीं अपितु जैन, सिख और हिंदु धर्मावलम्बियों के लिए भी एक समान रूप से सम्माननीय स्थान है। इसीलिए यहां प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में श्रृद्ध ालु आते हैं।

अलाउद्दीन अली अहमद साबिर कलियारी

अलाउद्दीन साबिर कलियारी का जन्म मुल्तान जिले के शहर कोहटवाल में 1196 में हुआ था । वह बाबा फरीद की बड़ी बहन, जमीला के बेटे थे। उनके पिता की मृत्यु के बाद उनकी मां उन्हें 1204 में बाबा फरीद के पास मध्य पंजाब के एक शहर पाकपट्टन में बाबा फरीद के पास लाई और उनसे अपने लड़के की देखभाल करने के लिए कहकर, छोड़ गई। बाबा फरीद ने अलाउद्दीन को अपने पास रख लिया और उसे लंगर का प्रभारी बना दिया। कोई छः महीने के बाद अलाउद्दीन की मां उसे देखने आई और उसे बहुत कमजोर पाया। वह अपने भाई को भला बुरा कहकर उन पर गुस्सा करने लगी कि उन्होंने उसके बेटे का ध्यान नहीं रखा। तब बाबा ने बताया कि उसे तो रसोई का प्रभारी बनाया गया था और इसलिए उनके पास भोजन की कोई कमी नहीं थी। जब अलाउद्दीन से पूछा गया तो उसने जवाब दिया, "यह सच है कि मुझे रसोई का प्रभारी बनाया गया है। मगर मुझे कभी नहीं बताया गया कि यहां बनवाए और लोगों को खिलाए जाने वाले खाने को मैं भी खा सकता हूं"। यह सुनकर सभी अवाक रह गए, मगर बाबा समझ गए कि समझदार और ईमान का पक्का है। जब उससे पूछा गया कि इतने दिन तक बिना खाना खाए वह कैसे रहे, तो उसने खुलासा किया कि वह खाली समय में जंगल में जाते और जो भी फल आदि मिलता वही खा लेते। बाबा फरीद से उसे अपना शिष्य बना लिया और साबिर की उपाधि दी गई थी।

1253 ईस्वी में दिल्ली के सुल्तान बलबन के आग्रह पर बाबा फरीद ने उन्हें कालियार शरीफ जाने के लिए कहा। वह जीवन भर कालियार में रहे और 13 वीं रबी अल–अव्वल 690 हिजरी (1291) में यहीं उनका निधन हुआ था। वह 13वीं सदी के चिश्ती परम्परा के महान सूफी कवि और संत हजरत बाबा फरीद के उत्तराधिकारी थे ।

हजरत साबिर अपनी शिक्षाओं और जलाल के लिए जाने जाते थे। उनकी शिक्षाएं रुहानी थी।

पीर कालियार

सदियों से, एक छोटा शहर एक तीर्थ के आसपास विकसित हुआ और पीर कालियार के रूप में जाना जाने लगा।

संत का मकबरा दिल्ली के एक शासक इब्राहिम लोधी ने बनवाया था। यह संरचना अपने नक्काशीदार ग्रिलवर्क के साथ इस्लामिक वास्तुकला को रेखांकित करती है।

जब पाकिस्तान का अस्तित्व नहीं था तब भी सिंध, बलूचिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान से लेकर तमाम मुल्कों के फकीरों और भक्तों का पीर कलियर शरीफ में आना–जाना लगा रहता था। 1947 में भारत का बंटवारा होने के बाद दोनों देशों के बीच सरहदों की दीवार खड़ी हो गई, लेकिन साबिर पाक की इबादत और मोहब्बत करने वालों के कदम नहीं थमे। 1947 के बीच

बंटवारे के बाद भी आज तक साबिर पाक का सालाना उर्स सरहदीं दूरियां मिटाता रहा है। इस दरमियां कई बार दोनों देशों के बीच सरहद पर तलवारें खिंचीं। बावजूद इसके हर बार साबिर पाक की धरती ने रुहानी और इंसानी फासले को मात दी और साल दर साल अन्य देशों के साथ साथ पाकिस्तानी जायरीनों के जत्थों का यहां पहुंचकर सजदा करने का सिलसिला जारी है और इसमें हर साल बढ़ोतरी ही हो रही है।

देश की आजादी से पहले पाक से बिना किसी रोकटोक के यहां जायरीन आते थे। इसके बाद से वीजा लेकर यहां आने लगे। स्थानीय लोगों की मानें तो उन्हें ऐसा कोई मौका याद नहीं है जब उर्स के दौरान पाक के जायरीन यहां न पहुंचे हो। भारत–पाक के बीच कितना भी तनाव रहा हो लेकिन, साबिर पाक से जुड़े दिली रिश्तों पर कभी आंच नहीं आई।

उर्स में पाक जायरीनों की सुविधाओं के लिए विशेष इंतजाम किए जाते हैं। उनकी सुरक्षा व्यवस्था का भी खास ख्याल रखा जाता है। यही कारण है कि जब भी पाक जायरीन यहां से लौटते हैं तो यहां मिले प्यार और आदर से उनकी आंखें नम हो जाती है। यहां सन् 2019 में पाक से 181 जायरीन पहुंचे थे।

पीर कलियर शरीफ धार्मिक एकता की मिशाल कायम करता है। यहां पर हजरत अलाऊद्दीन साबीर साहब की पाक व रूहानी दरगाह है। इस दरगाह का इतिहास काफी पुराना है। सभी धर्मों के श्रृद्धालु भक्त सजदा कर चादर, फूल

और सीरनी (प्रशाद) चढाने के साथ अपनी मन्नतें मागंते हैं। यहां लंगर भी लगाते हैं।

यहां की मुख्य दरगाह हजरत अलाउद्दीन पाक की दरगाह है। प्रवेश के लिए दो मुख्य द्वार हैं तथा इनके बीच में साबिर साहब का मजार है।

यहां श्रृद्धालु चादर व फूल चढ़ाते हैं। मजार की बाहरी दीवार सीमेंट से जालीदार बनी है। ऐसा माना जाता है कि दरगाह पर मुरादें ही पूरी नहीं होती बल्कि ऊपरी रूहानी बलाओं से भी छुटकारा मिलता है। मजार के पास गूलर का एक वृक्ष है जहां लोग अपनी मन्नतें एक पर्चे पर लिख कर धागे से बांधते हैं।

पीछे की ओर मुसाफिरखाना है, यहां जायरीनों के ठहरने की व्यवस्था है। हर बृस्पतिवार को यहां कव्वालियों का आयोजन किया जाता है,जिसमें लोग बढ़चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

साबिर पाक का सालाना उर्स देश–दुनिया में विशेष पहचान रखता है। वैसे तो उर्स फारसी भाषा से लिया गया शब्द है, इसका अर्थ है जश्न। लेकिन यहां उर्स का अर्थ संत साबिर कलियारी की पुण्यतिथि है। मई–जून के महीनों के दौरान, दरगाह पर 15–दिवसीय उर्स मनाया जाता है जो अब तक राष्ट्रीय एकता और सद्‌भाव का प्रतीक होने का गौरव प्राप्त कर चुका है। दरगाह पर सभी धर्मों, जातियों और पंथों से जुड़े लोग आते हैं। उर्स में प्रारंभिक धार्मिक अनुष्ठानों के बाद, कव्वालियों और मुशायरों के साथ उत्सव का माहौल बन जाता है।

जिस तरह किसी शादी से पहले हल्दी और मेहंदी लगाकर समारोह की शुरुआत होती है। ठीक इसी प्रकार रबीउल अव्वल का चांद दिखते ही उर्स का आगाज हो जाता है। इसी दिन साबिर पाक की मजार पर मेहंदी डोरी की रस्म के तौर पर चंदन और मेहंदी पेश की जाती है। इस रस्म की शुरुआत पहले सज्जादानशीं उतबेआलम शेख अब्दुल ने वर्ष 1524 में की थी। तभी से इस रस्म को मनाया जाता रहा है।

उर्स के दौरान, पिछले कुछ वर्षो से यहां एक दिन का शास्त्रीय संगीत समारोह भी आयोजित किया जाने लगा है।

पिरान कलियार कैसे पहूंचे

रेलगाड़ी से:–

निकटतम रेलवे स्टेशन रुड़की (10 कि.मी.) है। यह भारत के लगभग सभी बड़े शहरों से रेल से जुड़ा है।

रुड़की रेलवे स्टेशन से कालियार शरीफ पहुंचने के लिए रु 20/– प्रति व्यक्ति सीट के आधार पर ऑटो मिल जाते है जो आपको दरगाह शरीफ के पास छोड़ देते हैं।

सड़क मार्ग से:–

राष्ट्रीय राजमार्ग पर रुड़की उत्तर भारत के सभी प्रमुख शहरों और अन्य भागों से बस सेवाओं से जुड़ा हुआ है। वहां से बस टैक्सी, ऑटो रिक्शा लेकर पीर कालियार शरीफ तक पहुंचा जा सकता है।

साबिर साहब की दरगाह से अलग कुछ और भी जैसे हजरत इमाम साहब की दरगाह, हजरत किलकिली साहब, नमक वाला पीर, अब्दाल साहब और नौ गजापीर की दरगाहें है। कलियर शरीफ में जियारत के लिए इन दरगाहों का अपना महत्व है। कलियर के बीच से एक साथ निकलने वाली दो नहरें इस स्थान की और शोभा बढ़ा देती है।

पीर कलियार का एक और अनछुआ इतिहास :

हालांकि, भारत में पहली रेलगाड़ी 16 अप्रैल 1853 को बॉम्बे (बोरीबंदर) और ठाणे के बीच 21 मील (34 कि.मी) की लाइन पर चली थी। इसमें 400 लोगों को ले जाने की क्षमता थी। लेकिन उससे दो साल पहले 22 दिसंबर 1851 को रुड़की में रुड़की और पिरान कलियार के बीच एक रेलगाड़ी चलाई गई थी। जिसके लिए भारत का पहला स्टीम इंजन, मैरी लिंड, विशेष रूप से इंग्लैंड से भारत में रेल पर लाया गया था। 1851 में बंगाल सैपर्स द्वारा संचालित 6.2 मील (लगभग 10 कि.मी) की दूरी की रेलवे लाइन का निर्माण रुड़की शहर से पिरान कलियार के ऊपरी गंगा नहर एक्वाडक्ट के निर्माण के लिए इस्तेमाल की जाने वाली मिट्टी को ले जाने के लिए किया गया था। यह रेलगाड़ीनुमा मालगाड़ी केवल मिट्टीऔर दूसरा सामान ढोने के ही काम में लाई जाती थी। इस तरह रुड़की और पिरान कलियर के बीच भारत की पहली रेल चली। हालांकि इसका सार्वजनिक क्षेत्र में उपयोग न होने के कारण देश की पहली रेलवे बंबई से थाणे को ही माना जाता है।

रुड़की कलियार रेलगाड़ी का दुर्लभ चित्र : रेल संग्रहालय से साभार

कलियार शरीफ और इसके आसपास पूरे साल मौसम खुशग्वार और सुहावना रहता है। इसलिए सूती और सादे कपड़े पहने जा सकते हैं।

यहां ठहरने के लिए कई निजी होटल हैं और दरगाह में साबरी गेस्ट हाउस भी उपलब्ध है।सदियों से, एक छोटा शहर तीर्थ के आसपास विकसित हुआ और पिरान कालियार के रूप में जाना जाने लगा।

जब कभी आप पिरान कलियार आएं तो पास ही हरिद्वार भी जा सकते हैं, जिसे भारत का धार्मिक शहर माना जाता है। जब कभी हरिद्वार आएं तो पास ही पिरान कलियार शरीफ भी जा सकते हैं, भारत की आध्यात्मिक दरगाहों में इसकी गिनती होती है ।

वाराणसी

एक कॉस्मोपोलिटन शहर

– सुमन कुमार तथा सत्येन्द्र प्रजापति

इंसान कॉस्मोपोलिटन होते हैं यह तो आपने सुना ही होगा, पर क्या कोई शहर भी कॉजमोपोलिटन हो सकता है इसका अन्दाजा है आपको? चौंकिए नहीं! भारत में भी एक ऐसा कॉजमोपोलिटन शहर। वह भी आज से नहीं ? जी हां, लगभग 5000 साल से! हम बात कर रहे है भारत की सांस्कृतिक राजधानी कहे जाने वाले शहर बनारस की। वह शहर जिसने अडिग आस्तिक जूलिया रॉबर्ट्स से लेकर नास्तिक मॉर्गन फ्रीमैन तक को अपने चौरासी घाटों वाले दिल में जगह दी, वह शहर जिसने अद्वैत दर्शन के शिरोमणि शंकराचार्य का स्वागत किया। वहीं दूसरी तरफ आत्मा को ही नकार देने वाले गौतम बुद्ध के पहले उपदेश को भी सुना, जहां कबीर और तुलसी के राम एक हो जाते है, जहां भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक की चर्चा प्रेमचंद के गोदान से बराबर ही होती है।

कॉस्मोपोलिटन विविध संस्कृति वाला एक बड़ा महानगरीय शहर है। यह शब्द आम तौर पर एक बड़ी संख्या वाले महानगरों पर लागू होता है। कॉस्मोपॉलिटन शहरों में एक मजबूत एकीकृत शहरी संस्कृति हो सकती है जो सुपर संस्कृतियों, उपसंस्कृतियों और पारंपरिक संस्कृतियों की एक विस्तृत विविधता के साथ सह–अस्तित्व में होती हैं।

वह शहर जिसमें संस्कृत के मंत्र और अरबी में नमाज की पुकार लयबद्ध होकर बनारसिया राग अलापती है, जहां मणिकर्णिका घाट पर डोम राजा मेटाफिजिक्स का ज्ञान देते है और गंगा की लहरों पर सवार केवट (मल्लाह) अस्तित्ववाद के दर्शन पर बोल सकते हैं। यह वही शहर है जहां चौरसिया जी के पान का बीड़ा किसी चाँद बाबा के लिए होता है और शरीफ भाई के यहां बनी

अस्सी घाट

*सुमन कुमार (प्रवक्ता–सह–अनुदेशक) तथा सत्येन्द्र प्रजापति (कनिष्ठ अनुवादक),
होटल प्रबंध खानपान प्रौद्योगिकी एवं अनुप्रयुक्त पोषण विज्ञान संस्थान, हैदराबाद, तेलंगाना

घाट पर नौकायान

साड़ी शर्मा जी के बेटी के लिए होती है, यह वही शहर है जहां संकट मोचन मंदिर में पाकिस्तान के गुलाम अली आकर अकबर इलाहाबादी की गजलें गाते हैं, यहां पर गंगा घाट किनारे स्थित बालाजी मंदिर में सूर्योदय के पहले ही उस्ताद बिस्मिल्ला खान की शहनाई के स्वर गूंजने लगते थे। वह बालाजी के प्रांगण में प्रतिदिन शहनाई का रियाज किया करते थे और सुबह सुबह ही उनके मुरीद श्रोता एकत्रित हो जाते थे, बिना टिकट शहनाई के स्वरों का आनंद लेने के लिए। यह बात उन्होंने भी पूरी उम्र अपने दिल में ही रखी और समय से पहुचं जाते थे। क्या–क्या नहीं है बनारस के घाटों पर।

इसके कॉस्मोपोलिटनिजम में यह जानने के लिए आपको यहां एक बार जरूर आना होगा। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी के संसदीय क्षेत्र में आपको सुबह–ए–बनारस के खूबसूरत नजारे को देखने के साथ ही साथ आपको योग करते हुए लोग दिखेंगे और उसके आगे अस्सी घाट पर आप बनारसिया चाय का आनंद ले सकते हैं। दादा चाय वाले के यहां, वह भी कुल्हड़ (पुरवा) में। तब जाकर आपका सफर शुरू होगा बनारस की जीवंत (वाइब्रेंट) सायकॉलजी समझने का।

भारतीय लेखक ए. के. रामानुजन ने अपने एक निबंध "इज देयर ऐन इंडियन वे ऑफ थिंकिंग?" में भारतीयों के सोचने के तरीकों के बारें में बताया था, भले ही भारतीयों के सोचने के तरीका अलग–अलग हो लेकिन शहर बनारस एक ही तरह से सोचता है, बनारस सोचता है अपने अल्हड़पन से, बनारस की सायकॉलजी ही अल्हड़ है जो किसी भी फिलॉसफी की किताब में नहीं मिलेगी। उसके लिए आपको बनारस को जीना पड़ेगा बनारसिया होना पड़ेगा।

अल्हड़पन की मिसाल ये यहां लोग पुलिस वालों को लोग मामा कहके पुकारते है, यहां लोग मूंगफली को बादाम कहते है और अब यह मत पूछिएगा कि अब बादाम को क्या कहते होंगे ? यहां के लड़को को पिज्जा नहीं बल्कि "भुंजा" खाने में ज्यादा स्वाद आता हैं। हाय हुल्लड़ से भरे रैम्प के जमाने में भी यहां के ऑटो रिक्शा

मलाई कुलहड़ का स्वाद लें

और दुकानों में आपको कुमार सानू और उदित नारायण के ही गाने सुनने को मिलेंगे कल की सोचने वाले लोग आपको यहां एक माचिस की डिबिया में पड़ी तीलियों के बराबर ही मिलेंगे।

बनारस आज में जीना जानता है क्योंकि यह पिछले पांच हजार वर्षो से केवल जिंदगी सेलिब्रेट करता आ रहा है त्यौहार की जरूरत कैलेंडर को पड़ती है बनारस के लोगों को नहीं। यहां हर दिन त्यौहार जैसा ही है।

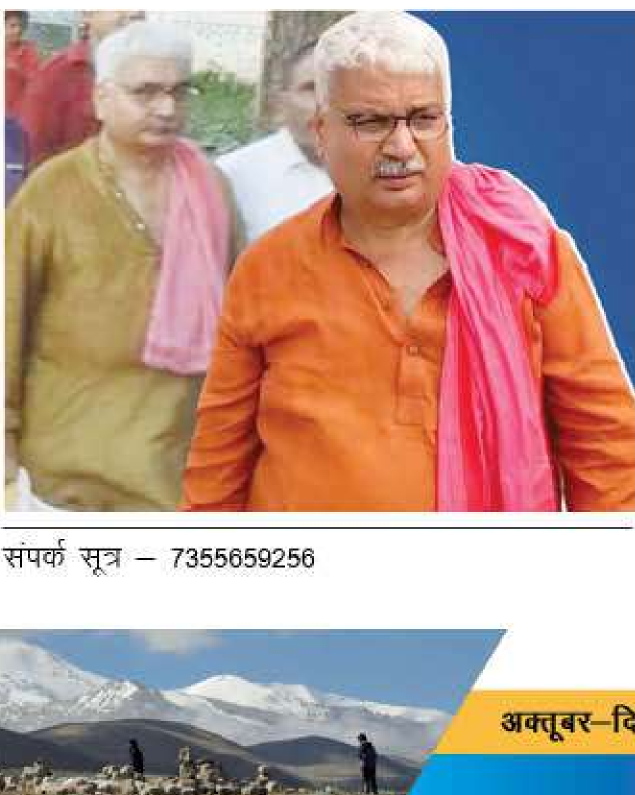

संपर्क सूत्र – 7355659256

यहां के पहनावे में गमछा की अलग पहचान है गर्मी, सर्दी, बरसात सब मौसम में गमछा एक ऑल–राउंडर का काम करता है नेता हो, पुजारी हो या मजदूर गमछा सब के लिए है। अजी इतना ही नहीं, रात को आपके घर में कोई घुस आए और आप उसे पकड़ लें और पता चले कि वह तो चोर है, तो देखिएगा कि उसके पास भी गमछा है। यानि गमछा एक स्टेटस सिंबल है। हालांकि, यह किसी ने बनारस की किसी रूल बुक में नहीं लिखा है यह बस अपना लिया गया है अपने–अपने सुविधा और आदत के अनुसार।

एक बात और जो अधिकतर लोगों ने भी नोट तो की होगी पर विचार नहीं किया होगा। यह काशी के आस–पास कोई आपसे रास्ता मांगे तो ''एक्सक्यूज मी''जरा रास्ता दो, न कहकर 'हर हर महादेव' कहता है और लोग उसे रास्ता दे देते हैं। दो लोगों के बीच किसी बात पर कहासुनी के बाद हाथापाई की नौबत आ जाए तो गलियां न देकर दोनों 'हर हर महादेव' कह कर एक दूसरे पर टूट पड़ेंगे। इतना ही नहीं उनका बीचबचाव

करने वाले भी 'हर हर महादेव' यह क्या हो रहा है कहते हुए उन्हें अलग करते दिखेंगे। साहब किसी के घर बच्चे का जन्म हो तो बधई के साथ 'हर हर महादेव' भी कहेंगे तो दूसरा समझ लेगा कि इसे खुशी हुई है। किसी के निधन पर भी 'हर हर महादेव' से दूसरा उसे दुखी मान लेता है। सुनने में तो यहां तक आता है कि बच्चों को जन्मदिन पर "हैप्पी बर्थडे" न कह कर 'हर–हर महादेव' कहने से ही बच्चे आर्शीवाद लेने को चरण छू लेते हैं। ऐसा शहर शायद ही कहीं मिलेगा।

स्वाद में चटखारे लेकर खाने वाला शहर बनारस, यहां स्ट्रीट फूड में एक से एक नायाब चीज है, जो केवल यही मिलती है, वह भी निखालिस बनारसिया अंदाज में। वह है "मलइयो" कितना अजीब नाम है जैसे किसी को बुलाया जा रहा हो, मलइयो दूध से बना एक खाद्य है जो कई तरह के फ्लेवर में आता है।

इसी तरह यहां का काशी चाट भण्डार अपने टमाटर वाले चाट के लिए विश्व प्रसिद्ध इतना ज्यादा कि आप यहां पर लगी भीड़ को देखकर ही अंदाजा लगा सकते है।

विश्व की प्राचीनतम नगरी आ रहे विदेशी मेहमानों के लिए एक विशेष स्वाद के इंतजाम को कैसे भूल सकते है? जी हां, सिर्फ पानी में छनी इमरती? पानी में छनी इमरती सुन कर लोग चौंक उठते हैं क्योंकि आम तौर पर इमरती, घी या रिफाइंड आयल में छानीध्बनाई जाने वाली मिठाई है, लेकिन प्रवासी भारतीयों के लिए खासतौर पर फैट फ्री और शुगर फ्री। इसकी खासियत यह है कि इमरती का मजा मेहमान कैलोरी बढ़ने की चिंता किए बिना उठा सकते हैं।

इस इमरती को बनाने वाले शरद श्रीवास्तव के मुताबिक आज दुनिया भर में अधिकतर लोग डायबिटीज के बढ़ते प्रकोप के चलते ज्यादा मिठाई खाने से परहेज करते हैं. शरद का कहना है कि ऐसे ही लोगों को ध्यान में रखकर इस इमारती की रेसिपी तैयार की गई है।

शाम को थक कर जब आप सुकूँ तलाशें तो राजघाट पर सूरज डूबता हुआ देखेंगे तो यकीनन यह शाम–ए–अवध से किसी भी सूरत–ए–हाल में कमतर नहीं होगी और सूरज ढलते ही बनारस की बात ही निराली हो जाती है। शाम 7:30 बजे दशाश्वमेध घाट पर गंगा आरती नहीं देखी तो क्या देखा इसे देखने के लिए खुद प्रधानमंत्री आते हैं और उनके साथ आने वाले विदेशी मेहमान जिनमें जापानी प्रधानमंत्री शिंजो आबे भी शामिल हैं।

जो बनारस के अल्हड़पन में कदम रखना चाहें उनके लिए यह है बनारस, जो काशी आकर गंगा में डुबकी लगाकर पुण्य कमाना चाहें, उनके लिए है यह काशी, यहां आकर जो लोग धर्म और शास्त्र के बारे में जानना चाहें उनके लिए है वाराणसी।

असल में बनारस, काशी, वाराणसी यह सब एक ही **D.N.A.** के अलग–अलग क्लोन हैं। जिनके डीएनए का नाम कॉस्मोपोलिटनिजम है, वैसे भी शेक्सपियर ने खूब ही कहा है "व्हाट इज इट इन द नेम"?

यात्रा संस्मरण
आस्था और रोमांच

हिमाचल प्रदेश

किन्नर कैलाश

– पवन चौहान

हिमाचल में यात्राओं का अपना ही रोमांच है लेकिन यह यात्राएं यदि रोमांच के साथ–साथ धार्मिक आस्था से ओत–प्रोत हों तो सोने पर सुहागा जैसी बात हो जाती है। पूरे साल भर अपने उफान में रहने वाली इन यात्राओं में कुछ एक ऐसी यात्राएं हैं जिन्हे तय कर पाना हर किसी के बस की बात नहीं है। इन यात्राओं को वही शख्स पूरा कर सकता है जिसके दिल में गहन आस्था, बुलंद हौंसला, प्रकृति से प्रेम और कुछ कर दिखाने का जज्बा हो तथा जो रोमांच के पलों को जीने की तमन्ना रखता हो। ऐसी ही कठिन धार्मिक यात्राओं में से एक है किन्नर कैलाश यात्रा। वर्ष 2005 में मैंने रिकांगपिओ स्थित हमारे स्कूल के स्टाफ व ITI के लड़कों के साथ यह यात्रा करने का निश्चय किया। यात्रा में आने वाले हर क्षेत्र को जानने के लिहाज से मैंने स्थानीय लड़के विक्की नेगी को अपने साथ ले लिया।

किन्नर कैलाश किन्नौर जिले में तिब्बत सीमा के समीप 6500 मी. की ऊंचाई पर स्थित हिमाचल का सबसे ऊंचा धार्मिक स्थल है। जो हिन्दू धर्मावलम्बियों के लिए विशेष धार्मिक महत्व रखता है। इस पर्वत की विशेषता है कि इस यात्रा में हम एक चोटी पर स्थित 35–40 फीट ऊंचे प्राकृतिक शिवलिंग के दर्शन करते हैं।

हिमाचल प्रदेश के जिला किन्नौर के मुख्यालय रिकांगपियो से लगभग पांच कि.मी. नीचे सतलुज की ओर राष्ट्रीय राजमार्ग 22 पर स्थित पोवारी नामक स्थान से हम इस यात्रा की शुरुआत करते

दिन में कई रंग बदलता किन्नर शिखर

हैं। पोवारी से हमें उस चट्टान की गुफा तक पहुंचना था जहां रात को यात्री ठहरते हैं। यह चट्टान पोवारी से लगभग 12 कि.मी. की दूरी पर किन्नर कैलाश की आधी ऊंचाई पर है। इसके बाद पार्वती कुंड आता है जो गुफा से लगभग डेढ़ कि.मी. दूर है। पार्वती कुंड से किन्नर कैलाश शिवलिंग की दूरी लगभग अढ़ाई कि.मी. है।

पोवारी से हमने उफनती सतलुज नदी को झूलापुल से पार किया। बस! यहीं से ही इस यात्रा का रोमांच शुरु हो जाता है। झूलापुल ने हमें तंगलिंग गांव की सरहद तक पहुंचाया। अब इस स्थान पर पक्के पुल का निर्माण हो चुका है। तंगलिंग गांव किन्नर कैलाश पर्वत श्रृंखला की तलहटी पर बसा एक सुंदर गांव है। सेब, चूली, खुबानी, बादाम, न्योजे आदि फलों से भरपूर इस गांव से होते हुए जब हम थोड़ा ऊपर पहुंचे तो यहीं से सांस फूलने लगी थी। ऊपर जाना मुश्किल सा हो गया। लेकिन अटूट आस्था ने हमारे कदमों को विराम नहीं लगने दिया। तंगलिंग गांव के आगे और कोई गांव या घर नहीं

है। आगे की यात्रा हमें सुनसान जंगल से होकर तय करनी पड़ी। जहां तंगलिंग गांव की सीमा समाप्त होती है वहीं से दूसरी खड़ी पहाड़ी शुरु हो जाती है जिससे होकर हम किन्नर कैलाश पहुंचते हैं। इसी पहाड़ी की तलहटी से होकर एक छोटा सा नाला बहता है जो किन्नर कैलाश की आस–पास की पहाड़ियों से बर्फ पिघलने के कारण वर्ष भर बहता रहता है।

इस नाले से हमने अपने साथ पीने का पानी लिया क्योंकि आगे की इस पहाड़ी की पांच–छः घंटे की कठिन यात्रा के दौरान हमें कहीं भी पानी नसीब नहीं होना था। यह बात हमें हमारे गाइड विकी नेगी ने पहले ही बता दी थी। न्योजे और देवदार के जंगल के बीच से इस खड़ी चढ़ाई को तय करने के उपरांत जब हम पहाड़ी की चोटी पर पहुंचे तो हमें धूप की झाड़ियों का दीदार हुआ जो हमें किसी अफ्रीकन के सिर पर छोटे–छोटे घुंघराले बाल की तरह प्रतीत हो रही थी। इस पूरी पहाड़ी को 'दर्शन पार्क' के नाम से जाना जाता है। इस पहाड़ी से थोड़ा दूसरी तरफ ढलान की ओर जब हमने रुख किया तो हमें भोजपत्र के पेड़ों के छोटे से जंगल के दर्शन हुए। इन्ही भोजपत्र के पेड़ों से निकली कागजनुमा परत पुराने समय में हमारी लेखनी, हमारे संदेशों को सहेजने तथा कर दूर–दूर तक के प्रदेशों तक पहुंचाने का कार्य करती थी।

इस ऊंचाई से जिला मुख्यालय रिकांगपिओ और कल्पा बौने से नजर आ रहे थे। अभी हमारी आधी यात्रा भी तय नहीं हुई थी। अंधेरा हो चुका था और हम अब आगे पत्थर की गुफा तक नहीं पहुंच सकते थे। इसलिए हमने पूरी रात इसी गंजी पहाड़ी पर धूप की झाड़ियों को जलाकर गुजारी। गर्मी के इस मौसम में पूरी रात भर हम ठंड से ठिठुरते रहे।

इस यात्रा के दौरान हमें कुछ बातों का विशेष ख्याल रखना चाहिए।

बेहतर यही रहेगा कि जितने दिन आप अपनी यात्रा में लगाते हैं उतने दिन का खाने का सामान अपने साथ ले जाएं। यहां से आगे ऐसी कोई व्यवस्था नहीं मिलती कि जहां से आप यात्रा के दौरान कोई वस्तु खरीद सकें। दूसरी बात गर्म कपड़े तो आपको अपने साथ रखने ही होंगें। यहां का मौसम पूरे वर्ष भर ठंडा ही रहता है। पानी खत्म होते ही अपनी बोतल को पर्वत से आने वाली धारा से भरते रहें क्योंकि इस बेहद थका देने वाली यात्रा में आपको पानी की हर कदम पर जरुरत महसूस होती रहेगी। बेशक, पिछले तीन–चार वर्षों से यहां पर किन्नर कैलाश कमेटी द्वारा लंगर और चिकित्सा सुविधा के साथ पुलिस हेल्पलाइन की सुविधा भी प्रदान की जा रही है। लेकिन लंगर की व्यवस्था यात्रा के सबसे नीचे अर्थात यात्रा के शुरु में ही होती है, आगे नहीं।

सुबह हम जल्दी ही उठे और साढ़े चार बजे ही हमने आगे की यात्रा आरंभ कर दी थी। जब काफी उजाला हुआ तो हमें उन दुर्लभ जड़ी–बूटियों के दर्शन हुए जो कि बर्फ पिघलने के उपरांत धरती से प्रस्फुटित होती है। गंजी पहाड़ियों पर हमें अजीब सी किस्मों के तरह–तरह के सुदंर व रंग–बिरंगे फूलों की चादर बिछी नजर आई जिसे कोई भी शख्स अपने कैमरे में कैद किए बगैर नहीं रह पाया। इस ऊंचाई और इन्ही खूबसूरत फूलों के बीच हमें उस पवित्र 'ब्रह्म कमल' का भी दीदार हुआ जिसे यहां के लोग इतनी ऊंचाई पर जाकर विशेष तौर पर लाते हैं ताकि वे इस कमल को अपने गांव में लगने वाले मेले के दौरान या

फिर मंदिर में ही अपने देवी–देवता के चरणों में चढ़ा सकें।

नीचे की ओर ढलानदार रास्ता तय करने के बाद हम फिर उसी नाले के पास पहुंच गए थे जिसका पानी हम पिछली पहाड़ी की तलहट्टी से अपने साथ लेकर चले थे। बर्फीले पानी की तेज धार के साथ हमें जुलाई–अगस्त के गर्म महीने में भी नाले के साथ बर्फ जमी नजर आई। आगे की यात्रा के लिए हमने इसी नाले से पानी भरा और फिर से चढ़ाई शुरु कर दी। जिसने हमें उस विशालकाय चट्टान के नीचे बनी उस गुफा के पास पहुंचा दिया, जहां अक्सर यात्री रात्रि विश्राम करते है। गुफा पर पहुंचते ही हमारी किन्नर कैलाश की आधी यात्रा तय हो गई थी। इसी गुफा के साथ और भी तीन–चार छोटी गुफाएं थी जिसमें एक दो गुफाओं पर पुआलों (स्थानीय लोग) ने इस मौसम में अपनी भेड़–बकरियों के साथ डेरा जमाया हुआ था। यहां से जब हमने नीचे पहाड़ी के धरातल पर नजर दौड़ाई तो उठते बादलों के कारण हमने पल में ही खुद को धुंध से घिरा पाया। चारों तरफ बादलों की सुंदर परिकल्पनाएं मन को मोह रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे हम आकाश में विचरण कर रहे हों। इस इलाके को 'गणेश पार्क' कहा जाता है। इससे करीब पाच सौ मीटर आगे पार्वती कुंड है। इस कुंड के बारे में मान्यता है कि इसमें श्रद्धा से सिक्का डाल दिया जाए तो मुराद पूरी होती है। भक्त इस कुंड में पवित्र स्नान करने के बाद करीब 24 घंटे की कठिन राह पार कर किन्नर कैलाश स्थित शिवलिंग के दर्शन करने पहुचते हैं। वापस आते समय भक्त अपने साथ ब्रह्म कमल और औषधीय फूल प्रसाद के रूप में लाते हैं। यदि किस्मत अच्छी हुई तो हमें इस इलाके में उन दुर्लभ जड़ी–बूटियों के दर्शन भी नसीब हो सकते हैं जिनसे कभी–कभी प्रकाश फूटता है।

गुफा से आगे किन्नर कैलाश तक पहुंचने के लिए अभी हमें लगभग छः घंटे की यात्रा और बाकी थी। लेकिन आगे की यह यात्रा पिछले दिन की यात्रा के मुकाबले ज्यादा कठिन और जोखिम भरी थी। आगे का रास्ता हमें बड़ी–बड़ी चट्टानों के बीच में से होकर तय करना था।

थोड़ा सा भी मौसम खराब हुआ नहीं कि हमें अपनी आगे की यात्रा स्थगित करनी पड़ सकती थी। वैसे यहां नाममात्र की बारिश होती है लेकिन यदि थोड़ी सी भी बूंदा–बांदी हुई तो समझो आपकी जान को खतरा है। भूस्खलन के कारण

किन्नर कैलाश परिक्रमा मार्ग

पहाड़ी से पत्थर बरस सकते है। आक्सीजन की कमी तो यहां साफ समझ आ रही थी। दस कदम चलने पर हमारी सांस फूल रही थी। धड़कन धौंकनी की तरह चल रही थी। गुफा के आगे लगभग एक–डेढ़ घंटे की इस कठिन खड़ी डगर पर चलने के उपरांत हम एक चौड़े, विस्तृत व समतल से नजर आने वाले मैदान में थे जो बड़ी–बड़ी चट्टानों से भरा पड़ा था। यह चट्टानें आस–पास की पहाड़ियों से टूट कर इस क्षेत्र में जमा हुई हैं। इन्ही चट्टानों के बीच में से होकर हमें आगे का रास्ता तय करना था। इन बड़ी–बड़ी चट्टानों के बीच से रास्ते का पता हमें वह छोटे–छोटे पत्थर दे रहे थे जो कुछ कदम पर किसी न किसी आगे आने वाली चट्टान पर तीन से पांच तक की संख्या में एक के ऊपर एक रखे हुए थे। यह कार्य हमसे पहले यात्रा पर गए यात्रियों ने अन्य यात्रियों की सुविधा के लिए किया था।

यात्रा का यह हिस्सा हमें और ज्यादा रोमांच से भर रहा था। यह हमें प्रकृति के एक अन्य रुप से रुबरु करवा रहा था। इस स्थान पर पहुंचते–पहुंचते जैसे हमारी हिम्मत ही जवाब देने लग गई थी। लेकिन अगाढ़ श्रद्धा का जोश हमारा हौंसला पस्त नहीं होने दे रहा था। चट्टानों पर छलांगे मार–मार कर आगे का रास्ता नापते हुए हमें इन चट्टानों के बीच एक छोटे से ताल के दर्शन हुए। विकी ने बताया यह 'पार्वती कुंड है। यहां पूजा–अर्चना करने के उपरांत हमारे कदम एक बार फिर किन्नर कैलाश की ओर बढ़ चले थे।

किन्नर कैलाश की परिक्रमा

बता दें कि किन्नर कैलाश के प्रति अपनी आस्था प्रकट करने का एक और जरिया भी है किन्नर कैलाश की परिक्रमा। जो श्रद्धालु इस ऊंचाई पर नहीं चढ़ पाते, वे किन्नर कैलाश की परिक्रमा करते हैं। यदि हम रिकांग पिओ से परिक्रमा आरंभ करें तो यह पंगी, रिब्बा, रिस्पा, जंगी, मूरंग, ठंगी, लम्बर, रंगरिक टुंडमा, लालंती, छितकुल, सांगला, कड़छम से होते हुए रिकांगपिओ में समाप्त होती है। यह परिक्रमा काफी कठिन व मुश्किल भरे रास्तों से होकर गुजरती है। इस परिक्रमा के दौरान हमें यहां की सामाजिक व्यवस्था को देखने तथा किन्नौर की अनुठी संस्कृति, तथा मेले आदि से रुबरु होने का मौका मिलता है। पहले इस परिक्रमा को पूर्ण करने में छह–सात दिन लग जाते थे। लेकिन अब इस पैदल यात्रा के रास्ते में कई स्थानों पर पक्की सड़क की सुविधा होने की वजह से इस परिक्रमा का बहुतसा हिस्सा गाड़ी द्वारा भी तय किया जा सकता है। जिस कारण यह यात्रा केवल तीन–चार दिन की रह गई है। किन्नर कैलाश की इन दोनों यात्राओं में लगभग पूरे भारत भर से लोग शामिल होते हैं। हमारे साथ यहां पंजाब, हरियाणा के अलावा अहमदाबाद, सूरत, बड़ौदा, बंगलौर, और रांची जैसे कई स्थानों से घरेलु श्रृद्धालु और ट्रैकर के साथ ही विदेशों से भी कई पर्यटक वहां आए हुए थे।

यात्रा के अगले हिस्से में मैदान की बड़ी–बड़ी चट्टानों को छोड़ अब हमने पत्थर के पहाड़ की ओर रुख कर लिया था। जहां से किन्नर कैलाश की यात्रा में एक नया रोमांच जुड़ गया था। गर्मी के इन महीनों में ठंड के मारे हमारा शरीर थरथरा रहा था। लेकिन शिवलिंग के दर्शन की अभिलाषा हमारे शरीर को एक अनोखी ऊर्जा से चलाएमान रख रही थी। कुछ ही पलों में हम वहां पहुंच गए थे जहां पहुंचते– पहुंचते न जाने कितनी बार हमारी हिम्मत लड़खड़ाती रही। अब हमारे सामने था लगभग 35–40 फुट का विशालकाय शिवलिंग; जो किन्नौरवासियों की अटूट आस्था व अगाढ़ श्रद्धा का प्रतीक है। किन्नर कैलाश

की इस चोटी से हमें रिब्बा, जंगी आदि गांव के साथ–साथ पूह की तरफ की उन पर्वतमालाओं के दूर–दूर तक दर्शन होते हैं जो पेड़ रहित रेत की ढेरियों की तरह नज़र आती हैं। इसी चोटी की दूसरी तरफ की चोटियां इन गर्मी के महीनों में भी बर्फ से लदी थी जहां से बर्फ के पिघलने के साथ–साथ चट्टानों का टूट कर गिरना जारी था। शिवलिंग के दर्शन करते ही हमारी सारी थकान एक पल में ही छुमंतर हो गई थी। इस पहाड़ी के शिखर पर अकेला सीधा खड़ा यह विशालकाय शिवलिंग किसी चमत्कार से कम नहीं है। शिवलिंग के आधार तक पहुंचने के लिए हमें लगभग पांच मीटर लंबी व लगभग तीन फुट चौड़ी पत्थर की पट्टिका के ऊपर से गुजरना पड़ता है। यह पट्टी उस समय बनी होगी जब एक चपटी सीधी खड़ी चट्टान, जो समय के बहाव के चलते धीरे–धीरे टूटती गई होगी। इसके टूटे हिस्से ने पट्टिका का निर्माण किया और जो हिस्सा शेष बचा रह गया वह आज शिवलिंग के रुप में हमारे सामने खड़ा है।

रंग बदलता है शिवलिंग

शिवलिंग की एक चमत्कारी बात यह है कि दिन में कई बार रंग बदलता है। सूर्योदय से पूर्व सफेद, सूर्योदय होने पर पीला, मध्याह्न काल में यह लाल हो जाता है और फिर क्रमशः पीला, सफेद होते हुए संध्या काल में काला हो जाता है। क्यों होता है ऐसा, इस रहस्य को अभी तक कोई नहीं समझ सका है। किन्नौर वासी इस शिवलिंग के रंग बदलने को किसी दैविक शक्ति का चमत्कार मानते हैं। कुछ बुद्धिजीवियों का मत है कि यह एक स्फटिकीय रचना है और सूर्य की किरणों के विभिन्न कोणों में पड़ने के साथ ही यह चट्टान रंग बदलती नजर आती है।

इन तथ्यों से शिवलिंग के प्रति लोगों की श्रद्धा व आस्था में जरा भी अंतर नहीं आता। सभी श्रद्धा व रोमांच की इस यात्रा में हर बार शामिल होना चाहते हैं। चारों तरफ से खुले इस क्षेत्र में हवा इतनी अधिक होती है कि आदमी को उड़ा ले जाए। व्यक्ति जरा सा भी इधर–उधर हुआ नहीं कि उसे सैकड़ों फुट गहरी खाई के तल का सामना करना पड़ सकता है। शिवलिंग की एक खास बात है कि यह दिन में सूर्य की स्थिति के अनुसार अपना रंग बदलता रहता है। सुबह यह शिवलिंग यदि भूरा होगा तो दोपहर को यह शिवलिंग लालिमा लिए रहता है और शाम को ग्रे रंग में परिवर्तित हो जाता है। विद्वान इस शिवलिंग को बद्रीनाथ कहकर भी पुकारते हैं।

इस यात्रा के बारे में कहा जाता है कि इस यात्रा को अपने जीवन काल में आम आदमी एक ही बार करने की हिम्मत जुटा पाता है। इस स्थान को भगवान शिव का शीतकालीन प्रवास माना जाता है। किन्नर कैलाश सदियों से हिंदू व बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए आस्था का केंद्र है। इस यात्रा के लिए देश भर से लाखों भक्त किन्नर कैलाश के दर्शन के लिए आते हैं। किन्नर कैलाश पर प्राकृतिक रूप से उगने वाले ब्रह्म कमल के हजारों पौधे देखे जा सकते हैं।

भगवान शिव की तपोस्थली किन्नौर में बौद्ध और हिंदू भक्तों की आस्था का केंद्र किन्नर कैलाश समुद्र तल से 24 हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित है। किन्नर कैलाश स्थित शिवलिंग की ऊंचाई 40 फीट और चौड़ाई 16 फीट है। हर वर्ष सैकड़ों शिव भक्त जुलाई

व अगस्त में जंगल व खतरनाक दुर्गम मार्ग से हो कर किन्नर कैलाश पहुचते हैं। किन्नर कैलाश की यात्रा शुरू करने के लिए भक्तों को जिला मुख्यालय से करीब सात कि.मी. दूर राष्ट्रीय राजमार्ग–5 स्थित पोवारी से सतलुज नदी पार कर तंगलिग गांव से हो कर जाना पडता है।

पौराणिक महत्व :

किन्नर कैलाश के बारे में अनेक मान्यताएं भी प्रचलित हैं। कुछ विद्वानों के विचार में महाभारत काल में इस कैलाश का नाम इन्द्रकील पर्वत था, जहां भगवान शंकर और अर्जुन का युद्ध हुआ था और अर्जुन को पासुपातास्त्र की प्राप्ति हुई थी। यह भी मान्यता है कि पाण्डवों ने अपने बनवास काल का अन्तिम समय यहीं पर गुजारा था। इसे वाणासुर का कैलाश भी कहा जाता है क्योंकि वाणासुर शोणितपुर नगरी का शासक था जो कि इसी क्षेत्र में थी। कुछ विद्वान रामपुर बुशहर रियासत की गर्मियों की राजधानी सराहन को शोणितपुर नगरी करार देते हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि किन्नर कैलाश की वादियों में ही भगवान कृष्ण के पोते अनिरुद्ध का विवाह ऊषा से हुआ था।

भगवान श्री कृष्ण ने हिमालय पर्वत के बारे में भगवद् गीता में कहा है,

"मेरा निवास पर्वतराज हिमालय में है।"

उसी तरह हिमालय को महिमामंडित करते हुए स्वामी विवेकानंद ने एक बार कहा था कि, 'हिमालय प्रकृति के काफी समीप है।..वहां अनेक देवी–देवताओं का निवास है।.. महान हिमालय... देवभूमि।' यही कारण है कि भारतवासियों, खासकर हिंदू समाज में हिमालय को देवत्व के काफी करीब माना जाता है।

तिब्बत स्थित मानसरोवर कैलाश के बाद किन्नर कैलाश को ही दूसरा बडा कैलाश माना जाता है। सावन का महीना शुरू होते ही हिमाचल की खतरनाक कही जाने वाली किन्नर कैलाश यात्रा शुरू हो जाती है।

हिमाचल का बदरीनाथ

किन्नर कैलाश को हिमाचल का बदरीनाथ भी कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि किन्नर कैलाश की यात्रा से मनोकामनाएं पूरी होती हैं। लेकिन इस शिवलिंगकी परिक्रमा करना बडे साहस और जोखिम का कार्य है। कई शिव भक्त जोखिम उठाते हुए स्वयं को रस्सियों से बांध कर यह परिक्रमा पूरी करते हैं। पूरे पर्वत का चक्कर लगाने में एक सप्ताह से दस दिन का समय लगता है।

यहां से दो कि.मी.दूर रेंगरिकटुगमा में एक बौद्ध मंदिर है, जहां लोग मृत आत्माओं की शान्ति के लिए दीप जलाते हैं। यह मंदिर बौद्ध व हिन्दू धर्म का संगम भी है। भगवान बुद्ध की अनेक छोटी–बडी मूर्तियों के बीच दुर्गा मां की भव्य मूर्ति भी स्थित है।

किन्नौर कैलाश परिक्रमा

पुरातन काल के लिखित दस्तावेजों में किन्नौर वासी को किन्नर कहा जाता है। जिसका अर्थ है– आधा किन्नर और आधा ईश्वर है। आम लोगों के लिए निषेध इस क्षेत्र को 1993 में पर्यटकों के लिए खोल दिया गया, जो 19,849 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां 79 फीट ऊंची चट्टान

को हिंदू धर्मावलम्बी शिवलिंग मानते हैं, लेकिन यह हिंदू और बौद्ध दोनों के लिए समान रूप से पूजनीय है। दोनों समुदायों के लोगों की इसमें गहरी आस्था है। इस शिवलिंग के चारों ओर परिक्रमा करने की इच्छा लिए हुए भारी संख्याक में श्रद्धालु यहां पर आते हैं।

किन्नर कैलाश जाने का मार्ग काफी कठिन है। यहां के लिए जानेवाला मार्ग दो बेहद ही मुश्किल दर्रों से होकर गुजरता है। पहला, लालांति दर्रा जो 14,501 फीट की ऊंचाई पर मिलता है और दूसरा चारंग दर्रा है जो 17,218 फीट की ऊंचाई पर है। किन्नर कैलाश पर स्थित शिवलिंग परिक्रमा का प्रारंभ कल्पा और त्रिउंग घाटी से होता है जो पुनः कल्पा से होते हुए सांगला घाटी की ओर मुड़ती है। पारंपरिक रूप से तीर्थयात्री परिक्रमा के लिए सावन के महीने में यात्रा प्रारंभ करते हैं। यह आमतौर पर परिक्रमा के लिए सबसे उपयुक्त समय समझा जाता है क्योंकि इसी अवधि में हिंदुओं का महत्वपूर्ण त्यौहार जन्माष्टमी भी मनाया जाता है। यात्रा शुरू होने पर तीर्थयात्रियों के लिए विभिन्न तरह की सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। इनमें कुछ सुविधाएं तो मुफ्त में ही मुहैया कराई जाती हैं। लेकिन कुछ के लिए शुल्क लिया जाता है। इनमें से कुछ सरकार की ओर से और कुछ निजी संस्थाओं के द्वारा उपलब्ध कराई जाती हैं। आमतौर पर तीर्थयात्रियों को यह सलाह दी जाती है कि वे अपने साथ कम से कम स्लिपींग बैग जरूर लेकर आएं।

सबसे पहले सभी यात्रियों को भारत तिब्बत बार्डर पुलिस पोस्ट पर यात्रा के लिए अपना पंजीकरण कराना होता है। यह पोस्ट 8,727 फीट की ऊंचाई पर स्थित है जो किन्नौर के जिला मुख्यालय रेकांगप्यो से 41 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। उसके बाद लांबर के लिए प्रस्थान करना होता है। यह 9,678 फीट की ऊंचाई पर स्थित है जो 10 कि.मी. दूर है। यहां जाने के लिए खच्चरों का सहारा लिया जा सकता है।

किन्नौर कैलाश परिक्रमा जहां आस्थावान हिंदुओं के लिए हिमालय पर होनेवाले अनेक हिन्दू तीर्थों में से एक है, वहीं देशी–विदेशी पर्यटकों के लिए एक आकर्षक एवं चुनौतीपूर्ण ट्रेकिंग भी।

किन्नर कैलाश हिमाचल प्रदेश के पूर्वी भाग में जिला किन्नौर में स्थित है। पुरातन काल में लिखित सामग्रियों के अनुसार किन्नौर के वासी को किन्नर कहा जाता है। जिसका अर्थ है– आधा किन्नर और आधा ईश्वर है। आम लोगों के लिए निषेध इस क्षेत्र को 1993 में पर्यटकों के लिए खोल दिया गया, जो 19,849 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यहां 79 फीट ऊंची चट्टान को हिंदू धर्मावलम्बी शिवलिंग मानते हैं, लेकिन यह हिंदू और बौद्ध दोनों के लिए समान रूप से पूजनीय है। दोनों समुदायों के लोगों की इसमें गहरी आस्था है।

कैसे पहुंचे

शिमला से किन्नौर जिला के मुख्यालय रिकांगपिओ की दूरी 231 कि.मी. है। शिमला दिल्ली तथा चडीगढ़ से सड़क और रेल मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा है। शिमला से काल्पा के लिए बसें और टैक्सियां मिल जाती हैं जो लगभग नौ घंटे लगाती हैं। रिकांगपिओ से काल्पा की दूरी सिर्फ 17 कि.मी.है।

शिवलिंग पर माथा टेककर दोपहर एक बजे हम वापिस अपने ठिकानों की ओर चल दिए थे। यह यात्रा मुझे कभी नहीं भूल पाएगी। यह सदा मेरे मानसपटल पर आस्था और रोमांच का जादू बिखेरती रहेगी।

यात्रा संस्मरण

मानसरोवर यात्रा

– विनीत सोनी

ओम नमः शिवाय ।।

सुबह फिर वही रूटीन चार बजे उठो, तैयार हो जाओ और चलते बनो, इतने ठन्डे पानी से सुबह नहाने की बात तो दिमाग में भी नहीं आती थी? पर हां, एक व्यक्ति योग मास्टर सोनी जी नहाकर ही चलते थे। बाकी यात्री चार बजे उठते, पर महाशय तीन बजे ही उठ जाते थे। पहले योग करते और फिर आराम से नहाकर तैयार होते, जब सब थककर कैंप पहुंचते तब यह सब को कुछ व्यायाम भी कराते और कुछ ज्यादा ही पीड़ित लोगों की तो मालिश भी कर देते थे। बड़े सीधे, सरल और सज्जन व्यक्ति, यह इनकी तीसरी यात्रा थी।

आज तीसरे दिन हमें 18 कि.मी. और 2710 मीटर की ऊंचाई पर बुद्धि गांव पहुंचना था, चाय–बिस्कुट और दलिया का नाश्ता कर हर – हर महादेव के जयकारों के साथ हम निकल पड़े। थोड़ी देर के आसान ट्रेक के बाद एक खड़ी ढाल है और सैकड़ों सीढियां, बहुत संकरी और चिकनी; इसलिए घोड़े वाले यात्री भी यहां तीन कि.मी. पैदल ही चलते हैं। यह हमें हजारों फीट नीचे बिल्कुल काली नदी के लेवल पर उतार देती हैं और फिर इनके बाद थोड़ी देर के आसान रास्ते के बाद धीरे – धीरे वापस चढ़कर उसी ऊंचाई पर पहुंचना होता है। लखनपुर के बाद सबसे खतरनाक रास्ता आरंभ होता है जो ज्यादा खड़ा नहीं है पर बिल्कुल काली नदी से सटकर चलता है, कहीं – कहीं तो एक फीट ही चौड़ा है और पहाड़ों की संरचना ऐसी है कि झुककर चलना पड़ता है। कहीं – कहीं बीच से झरने भी झरते रहते, लोग भीग जाते थे जिससे रपटने का भी डर रहता था। यहां हमें पहले ही चेता दिया गया था कि बेहद संभल कर चलना है और फोटोग्राफी से दूर रहें।

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि मानसरोवर यात्रा के लिए क्या क्या तैयारियां की जाती है और लेखक का दिल्ली से धारचुला होते हुए मिर्थी

मालपा के पास लंच दिया गया और फिर थोड़ा आगे जाकर एक गर्म पानी का सोता मिला जहां दो – तीन यात्री नहा रहे थे, हम भी दो दिन से नहीं नहाए थे, शरीर पसीने से भीगा था और ठन्डे मौसम में गर्म पानी का सोता...? दिल्ली या कोलकाता जैसे 40 डिग्री सेल्सियस के तापमान में रहने वाले यात्री जब शून्य से नीचे के तापमान में पहुंचते हैं तो पानी को छूने से भी घबराते हैं, ऐसे में नहाने के बारे में तो सोच भी नहीं पाते। लेकिन प्रकृति के उपहार के रूप में गर्म पानी मिल रहा हो तो कौन नहाना नहीं चाहेगा ? गर्म जैसे गुनगुने पानी से नहाकर ताजगी आ गई, मन प्रसन्न हो गया और फिर आगे बढ़े। घुमावदार पगडंडियों से होकर रास्ते पर आगे बढ़े जा रहे थे। कभी ऊपर तो कभी नीचे और फिर एक थोड़ी खड़ी चढ़ाई के बाद हम बुद्धी पहुंच गए।

यह लम्बा और थकाऊ ट्रेक था और पहुंचते हुए पांच बज गए थे। यहां पहुंचने पर निम्बू पानी से स्वागत हुआ फिर लोग अपने टैंट खोजने लगे,

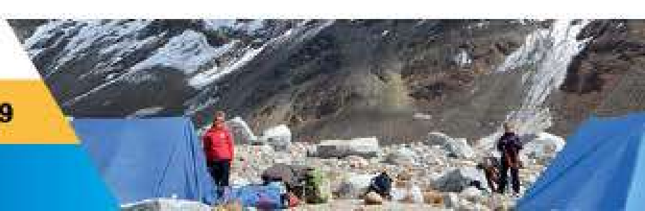

पर कुछ लोग पहले ही पहुंच चुके थे। अन्दर सोनीजी, अनुराग और श्री राम नजर आए पर गुप्ताजी कहीं नहीं दिखे जबकि ट्रेक की बहुत शुरुआत में ही उन्होंने हमें क्रॉस कर लिया था। तभी एक भुरभुराती आवाज आई, ''आ गए कितने बज गए?,'' ''पांच, अरे भाई कहां हो?'' तभी रजाई हटाकर उनकी जानी – पहचानी मूर्ति प्रकट हुई, 'पांच,मतलब मैं दो घंटे से सो रहा हूं, मैं तो दो बजे ही यहां पहुंच गया था।' 'दो बजे?' मुझे विश्वास ही नहीं हुआ पर गुप्ताजी बहुत फ़ास्ट हैं और कभी कभी रास्ते के सुन्दर नज़ारों का दीदार भी नहीं करते थे और शायद गर्म पानी के सोते को उन्होंने अनदेखा कर दिया था। हम नहाते रह गए और यह चलते गए।

यह सबसे खूबसूरत कैंप साईट है, जगह – जगह सुन्दर फूल लगे हैं, खुला हुआ सा कैंप है और सामने घाटी है। यहां FRP के तीन–चार टेंट हैं और तीन–चार स्थाई टीन के हैं। यह विशेष प्रकार के बने होते हैं और बाहर चाहें जितनी भी ठण्ड हो अन्दर महसूस नहीं होती। यात्रियों की सुविधा के लिए एक बड़े से चूल्हे पर बड़े बर्तन में पानी गर्म होता रहता है जिससे आप आराम से नहा सकते हैं।

अगले दिन सब नहाकर निकले, आज हमें 17

फूलों की घाटी छियालेख

कि.मी. की ट्रेकिंग कर 3160 मीटर की ऊंचाई पर गुंजी पहुंचना था जो भारत के इस ओर का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है। पहले पांच कि.मी. की चढ़ाई बिल्कुल खड़ी है और हमें कुमाऊं की फूलों की घाटी छियालेख पहुंचाती है, यहां बहुत से दुर्लभ फूल जैसे कस्तूरी कमल, ब्रह्म कमल इत्यादि देखे जा सकते हैं। बेहद सुन्दर घाटी है और अगर मौसम साफ़ हो तो आप नेपाल स्थित अन्नपूर्णा शिखर भी देख सकते हैं, हमें यह बहुत थोड़ी देर के लिए बादलों के बीच दिखाई पड़ी थी। यहां पर पूरी – सब्जी का नाश्ता मिला और हमने आगे चलना आरंभ किया और चलते – चलते हम गर्बयांग नामक गांव पहुँचे जो हर वर्ष थोड़ा जमीन में धंस रहा है इसलिए इसे सिंकिंग विलेज भी कहा जाता है।

यह बहुत सुन्दर गांव है, घर अच्छे से पेंट किए गए हैं और नक्काशी की गई है। यहां कैलाश से लौट रहा एक जत्था भी मिला, सबने हर – हर महादेव के जयकारों के साथ एक दूसरे का स्वागत किया और आपस में थोड़ी देर बात की। रास्ते में काली और टिंकर का संगम भी देखने को मिला। टिंकर नेपाल से आती है और काली नदी हमारे साथ – साथ आगे बढ़ रही थी। गुंजी से पहले ही एक रास्ता आदि कैलाश के लिए निकल जाता है और यहां भी बहुत लोग यात्रा करते हैं।

गुंजी में दो दिन का पड़ाव था और जब हम लगभग छः बजे यहां पहुंचे तो बेहद ठंडी और तेज हवाओं ने हमारा स्वागत किया। यह 3160 मीटर की ऊंचाई पर स्थित एक घाटी है और यहां बेहद ठण्डी हवाएं चलती रहती हैं। कैंप के पीछे ही अन्नपूर्णा एक बार फिर नजर आई, बहुत थोड़ी देर के लिए ही पर उस समय डूबते सूर्य की स्वर्णिम रश्मियों ने इसे अपने रंग में रंग लिया था।

यहां ITBP का एक बहुत बड़ा कैम्पस है जहां दुर्गा जी का एक मंदिर भी है। कैंप साईट बेहद सुन्दर और दो ओर से बेहद ऊंचे पहाड़ों से घिरी है। बैग पटककर थोड़ी देर आराम किया, टेंट के अन्दर ठण्ड नहीं थी। मंदिर में ITBP के जवानों द्वारा भजन – कीर्तन किया जा रहा था, सबने दर्शन किए, कीर्तन में भाग लिया और कैम्पस में थोड़ा घूमकर वापस आ गए। यहां भी बेहद अच्छा खाना रात को परोसा गया और फिर नौ बजे लाइट बंद हो गई। अगले दिन ITBP में एक छोटा सा मेडिकल हुआ, पहले वाली रिपोर्टें देखी गईं, बी.पी. आदि चेक हुआ, और सबको क्लियरेंस दे दी गई। एक बात पर बहुत जोर दिया गया कि आगे खड़ी चढ़ाई और ऑक्सीजन कम होने के कारण सब लोग घोड़े ले लें। बात के दो अर्थ थे, एक तो ऊंचाई भी बहुत बढ़ने वाली थी और दूसरी इस यात्रा से ही यहां के स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता है इसलिए कुछ और यात्रियों ने घोड़े बुक कर लिए।

वैसे मैं भी कभी 3500 मीटर से अधिक नहीं गया था तो थोड़ा डर था पर मैंने सब भोलेनाथ पर छोड़ दिया। सुबह के नाश्ते के बाद सबने थोड़ी देर गप्पें की और फिर आस पास घूमने का फैसला किया। आज चार दिन की यात्रा के बाद घुटने बहुत दुःख रहे थे, सोनी जी ने कुछ योगासन बताए थे जिनसे थोड़ा आराम मिला था पर हल्का कष्ट था, आज जो आराम मिला इससे बड़ी राहत महसूस हो रही थी। सामने घाटी थी जहां सीमा सड़क संगठन (BRO) की टीम क्रिकेट खेल रही थी, इतनी ऊंचाई पर सांस ऐसे ही फूलती है पर यह खूब भागा – दौड़ी मचा रहे थे, और दर्द भूलकर हम भी इन में शामिल हो गए।

पहले बैटिंग मिली तो रन ले लिया क्योंकि यहां दुखते घुटनों से दौड़ना हमारे बस की बात नहीं थी, खैर हमारा उनका कोई मुकाबला नहीं था। कैंप में वापस आकर खाना खाया और सो गए, शाम को L.O. साहिबा ने मीटिंग बुलाई, वह भी बाहर खुले में, सबने सोचा दो – चार मिनट कुछ बताएंगी पर यहां तो पंद्रह मिनट से ज्यादा हो गए और ठण्ड में सबकी कुल्फी जमने लगी क्योंकि किसी ने बहुत ज्यादा गर्म कपड़े नहीं पहने थे। कुछ लोग आपस में बात करते हुए हँस रहे थे पर उन मैडम की मिलिट्री स्टाइल ब्रीफिंग ख़त्म ही नहीं हो रही थी, खैर अच्छी बात यह रही तब तक कैंटीन से आवाज आई कि खाना तैयार है और तब जाकर छुट्टी मिली और सब एकदम से भाग लिए।

चंडीगढ़ से आया अरविन्द बेहद मिलनसार और स्वभाव का अच्छा है। गाला के रास्ते में एक यात्री जो 50 से ऊपर होंगे उनके जूते फट गए थे, रास्ता ऐसा था कि पैदल ही चलना पड़ रहा था और अरविन्द उनकी मदद कर रहा था, फटे जूते देखकर फ़ौरन अपने जूते उन्हें पहना दिए और उनके फटे जूते खुद पहन लिए। मैं पीछे ही चल रहा था और यह देखकर बड़ा प्रभावित हुआ, यही नहीं वह रास्तों में लौट – लौट कर हर यात्री को पानी और चाकलेट्स देता था, और

उन कठिन रास्तों में यात्री अपनी – अपनी स्पीड के हिसाब से एक से दो कि.मी. तक आगे पीछे होते थे, यह सही मायनों में सच्चे भक्त और यात्री की पहचान है और अरविन्द जैसा हमारे बेच में कोई और नहीं था।

आज ट्रेक का छठा दिन था और हमें कालापानी होते हुए 19 कि.मी. दूर नविधांग पहुंचना था जो 4260 मीटर की ऊंचाई पर स्थित भारत में आखिरी पड़ाव है। हम सब पांच बजे बाहर आ गए थे। सेना के कुछ ट्रक कालापानी जा रहे थे, उन्होंने हमें बैठा लिया। कालापानी यहां से नौ कि.मी. दूर है और गुंजी से यहां तक एक कच्ची सड़क थी। फिर भी, लगभग 45 मिनट में हम काली नदी के उद्गम स्थल कालापानी पहुंच गए। यहां काली जी का एक छोटा पर बहुत ही सुन्दर मंदिर है, पास ही काली नदी का उद्गम है और लगा हुआ ही हनुमान मंदिर है, इन सब की व्यवस्था और रखरखाव ITBP करती है। एकदम खुली जगह, ठंडा मौसम और सामने ही पहाड़ पर काफी उंचाई पर ऋषि वेद व्यास जी की गुफा है, यहां आकर बड़ी शांति मिली। सभी यात्रियों ने थोड़ा समय कालापानी में बिताया।

यहां पर एक चेक पॉइंट है जहां पासपोर्ट चेक होते हैं और स्टैम्प किए जाते हैं इसके बाद एक दूसरे ही तरह के दृश्य से सामना होता है। अब पेड़ कम होने लगे थे, चारो ओर नंगे पहाड़ दिख रहे थे और थोड़ी ऊंचाई पर जाने पर पेड़ पूरी तरह समाप्त हो गए, काली नदी काफी नीचे छूट गई और रास्ता थोड़ा पथरीला हो गया। अब सात – आठ दिन हिमालय में हो जाने पर मन बहुत शांत हो गया था, बेवजह के विचारों की लहरें हल्की हवा के साथ बहुत हल्की हो गई थीं, जैसी गंभीर ध्यान के बाद शांति मिलती है वैसी ही शांति का अनुभव हो रहा था। नविधांग से कालापानी की दूरी नौ कि.मी. है। हम दो बजे तक वहां पहुंच गए थे, खाना कालापानी के पास ही दिया गया।

चारों ओर ऊंचे पहाड़ों से घिरा यह भारत का आखिरी कैंप है, यहां ITBP की फॉरवर्ड पोस्ट है और इसके नौ कि.मी. आगे तिब्बत बॉर्डर है, रास्ता नहीं है बस पत्थरों के बीच सीधी चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। यहां हवाएं तेज चलती हैं और ठण्ड भी बहुत ज्यादा है, कैंप के सामने ही प्रकृति का एक अनुपम चमत्कार है, "ओम पर्वत", यह पर्वत उस समय बादलों से ढका था तो हमें दर्शन नहीं हुए।

यहां ITBP का छोटा अस्पताल भी है जहां कुछ यात्रियों को ऑक्सीजन देनी पड़ी क्योंकि उनका लेवल 90: से नीचे आ गया था। हमें यहां से रात 12 बजे ही निकलना था तो खाना सात बजे ही खा लिया और रात में पहनने वाले गर्म कपड़े साथ में रख कर हमने सोने का प्रयास किया पर मुझे नींद नहीं आ रही थी। रात को ही चढ़ना था, लिपुपास लगभग 5300 मीटर की ऊंचाई पर है और यहां से नौ कि.मी. दूर है, थोड़ी चिंता थी इसलिए भगवान भोलेनाथ का स्मरण करता रहा।

रात 12 बजने से पहले ही ITBP के जवानों ने उठा दिया, सब तैयार होने लगे, कुछ लोग सुबह की तरह से फ्रेश और ब्रश आदि करने लगे पर मेरा मन नहीं था इसलिए कैंटीन में आ गया जहां चाय तैयार थी। आराम से और शांत मन से चाय पी तब तक गुप्ताजी भी आ गए और बोले, 'अरे कुछ नहीं है सब आराम से जाएंगे, अभी तक सब ठीक हुआ है, आगे भी होगा, जय बाबा भोलेनाथ!" गुप्ताजी की बातों से बल मिला और

थोड़ी देर बाद सब एकत्रित हो गए। हममें से 12 14 ऐसे यात्री भी थे जिन्होंने घोड़े नहीं किए थे। इसलिए उन्हें एक घंटा पहले चलाया गया। आगे – आगे ITBP के जवान चल रहे थे और पीछे हम सब टार्च जलाए लाइन से एक के पीछे एक चल रहे थे, सब ओम नमः शिवाय और हर – हर महादेव का जयकारा लगाते और एक दूसरे का हौसला बढ़ाते रहते थे। हमने इस बात का भी ध्यान रखा कि लोग ज्यादा साथ ही चलें क्योंकि रात का समय था।

जीवन का वह दृश्य याद रखने वाला था क्योंकि आकाश में अनगिनत तारे टिमटिमा रहे थे वह तारे जिन्हें कभी बचपन में आकाश में खूब चमकते हुए देखा था और वह तारे जो आज के बढ़ते ध्वनि और लाइट प्रदूषण में खो चुके हैं। वह तारे जिन्हें हम रात में छत पर सोने से पहले गिना करते थे, पता नहीं फिर कभी यह आज के बच्चों को वह दृश्य मिल पाएंगे या नही, यह ऐसे बहुत से कारणों में से एक है जिसके कारण लोग हिमालय आते हैं। तारों के साथ आकाशगंगा भी इतनी साफ़ और इतनी पास दिख रही थी मानों नीचे उतर आई हो, इनकी ही रोशनी इतनी थी कि रास्ता और पास के पहाड़ थोड़ा दृ थोड़ा दिख रहे थे, एकदम साफ़ असमान और शांत हवा।

हमारी टीम 4–5 कि.मी. आगे जाकर रुक गयी, इतना चलने में हमें दो घंटे से ज्यादा लगे, हम बाकी यात्रियों के आने का इंतजार कर रहे थे जो एक घंटे बाद निकले होंगे। इतनी ऊंचाई पर मौसम बेहद ठंडा था तापमान शून्य डिग्री या उससे भी कम रहा होगा। जब चल रहे होते तो ठीक लगता था पर रुकते ही ठण्ड लगने लगती और एक के ऊपर एक करके बहुत से कपड़े पहने होने के बाद भी ठंड लग रही थी, दस्तानों के बाद भी जैसे उंगलियां गल रही थीं और जूते – मोजे और इनर के बाद भी पैर ठंडे हो रहे थे, जब कैसे भी बैठते न बना तो लोग यूं ही जोर – जोर से आगे पीछे चलने लगे और इस प्रकार ठण्ड से जूझते आधा घंटा निकल गया और तब बाकी यात्री आ गए।

यहां से बेहद खड़ी चढ़ाई है, बड़े – बड़े पत्थरों और शिलाओं को पार करना पड़ता था, थोड़ी ही देर में सांस फूलने लगती थी इसलिए बार – बार बैठना पड़ता था पर जल्दी ही उठना पड़ता क्योंकि बैठने से ठण्ड लगने लगती थी और इस प्रकार धीमे – धीमे हम चलते रहे और थोड़ी देर बाद सवेरा हो गया। हमने रात साढ़े बारह बजे चलना शुरू किया था और अब पांच बज चुके थे, हम अभी तक छह कि.मी. चले होंगे और अब पीछे का रास्ता नजर आ रहा था।

नविधांग का कैंप बहुत नीचे दिख रहा था और चारों ओर बिना वृक्षों के भूरे पहाड़, यह वर्ष में अधिकांश समय बर्फ से ढके रहते हैं पर इस समय तक बर्फ पिघल चुकी थी और अब तो वैसे भी उतनी बर्फ नहीं पड़ती, थोड़ा सा तापमान बढ़ने से जल्दी पिघल जाती है।

थोड़ी ही देर में सूर्योदय हुआ और अब यह चिकने भूरे पहाड़ अचानक लाल रंग के हो गए और इनसे टकराकर सूर्य की किरणों ने चारों ओर ऐसी ही सुन्दर छटा बिखेर दी। अब एक आखिरी बेहद खड़ी चढ़ाई रह गई थी जो हमें पास के टॉप पर ले जाती है और इस आधी कि.मी. की चढ़ाई चढ़ने में लगभग एक घंटा लग गया और सुबह सात – साढ़े सात बजे हम लिपुलेख पास के ऊपर पहुंच गए।

यह पास तीन ओर से पहाड़ियों से घिरा है और पूर्व दिशा में तिब्बत की सीधी ढलान है और उतरने के लिए रास्ता बना है। इसकी ऊंचाई लगभग 5300 मीटर है और यहां बेहद ठण्डी और तेज हवाएं चलती हैं, इतनी ऊंचाई पर मौसम कभी भी ख़राब हो सकता है इसलिए हमें रात में ही चलाया जाता है क्योंकि सुबह मौसम थोड़ा शांत होता है। पहाड़ी की ओर हम पीठ टिकाकर बैठ गए, सामने से चमकीले सूर्य की किरणें हमें ठण्ड से बचा रही थीं और हवा अभी शांत थी पर इसमें जो थोड़ी भी नमी थी वो रुई के रेशों की भांति सफ़ेद बर्फ रूप में तैर रही थी जिससे हमें तापमान का अंदाजा मिला।

यहां सभी ने ओम नमः शिवाय के जयकारे लगाए और आधा घंटा बिताया तब तक तिब्बत से लौटता दल भी आ गया और सब बड़े प्रेम और उत्साह से एक दूसरे से मिले, यहां से हमें चीन की सेना के दो जवानों के साथ नीचे जाना था और लौट रहे यात्रियों को ITBP लेकर वापस चली गई। हमने ITBP जवानों का हृदय से धन्यवाद दिया जो हमारे साथ – साथ मार्ग दिखाते ऊपर तक आए थे। यहीं से पोर्टर और पोनी वाले, लौटते यात्रियों को, जिन्होंने उनकी बुकिंग की होगी, लेकर वापस हो गए।

यहां तक बिना किसी कठिनाई के सकुशल पहुंचा था इसलिए मन ही मन ईश्वर का धन्यवाद दिया। यह सब महादेव की कृपा और हनुमान जी के आशीर्वाद से ही संभव था। अब हम भारत को पार कर तिब्बत में प्रवेश कर रहे थे। हमें लगभग 800 मीटर नीचे की ओर उतरना था, रास्ता थोड़ा संकरा और फिसलन भरा था। उसके बाद एक कच्ची सड़क मिली, जो जीपों के चलने लायक थी। हम धीरे – धीरे डेढ़ घंटे में तीन कि.मी. नीचे उतरे तो देखा कि यहां दो बसें खड़ी थीं जिनमें चीन में हमारे नए गाइड और चीन की सेना के कुछ जवान थे। यहां पासपोर्ट चेक करने के बाद, बसें तकलाकोट के लिए चल पड़ीं जो यहां से 3950 मीटर की ऊंचाई पर और 15 कि.मी. दूर है।

तकलाकोट का पुराना नाम पूरंग है और यह सदियों से भारत – तिब्बत – चीन पारंपरिक व्यापार मार्ग का केंद्र रहा है। यह ठीक–ठाक बड़ा शहर है और यहां बहुत से भारतीय व्यापारी मिल जाएंगे, अलग से एक "इंडियन मार्केट" भी है जिसमे बॉलीवुड के गाने बजते रहते हैं।

राक्षसताल

यहां पर एक कस्टम चेक पॉइंट पर हमसे 801 डॉलर लिए गए। यह 2014 की बात थी। अब फीस काफी बढ़ चुकी होगी। यही पर सभी के पासपोर्ट जमा करा लिए गए, सामान की चेकिंग और कुछ अन्य औपचारिकताओं के बाद हमें जाने दिया गया और एक होटल में ठहराया गया। यहां यात्रियों को दो दिन रुकना होता है और फिर आगे की यात्रा आरंभ होती है।

भारत से उतरते ही तिब्बत में सड़कें,

शहर, बाजार और एक तरह से छह – सात दिन बाद वापस वही शहरी माहौल देखकर थोड़ा अजीब लग रहा था, होटल बहुत अच्छा था। हर कमरे में दो यात्री ठहरे हैं और बाथरूम में गर्म पानी की व्यवस्था भी थी। तिब्बत एक तरह से ''ट्रांस हिमालयन रीजन'' है, यहां पहाड़ तो हैं पर बहुत दूर – दूर। शायद इसी कारण यहां अच्छी सड़कें बनाना संभव हुआ है। यह एक उभरा हुआ सा क्षेत्र है जिसकी औसत ऊंचाई 4000 मीटर है और इसीलिए इसे दुनिया की छत भी कहते हैं। यहां सूर्य बहुत तेज चमकता है और त्वचा आसानी से जल सकती है इसलिए यहां लोग हैट लगाए रहते हैं पर इसके बाद भी तापमान 20 – 22 डिग्री से ज्यादा नहीं पहुंचता क्योंकि हवाएं बहुत तेज चलती हैं और रात में तो तापमान अक्सर 07–08 डिग्री ही रहता है। रात में तेज हवाएं आंधी का रूप ले लेती हैं। यहां बस एक बात का कष्ट है कि यहां चीन का अपना टाइम जोन है। यहां से चीन की राजधानी बीजिंग 4700 कि.मी. दूर है लेकिन समय उनके कायदे से +2.5 घंटे आगे है। उससे यहां घड़ी को चलाना बड़ी मूर्खता सी लगती है। सही में भारत से लगा होने के कारण सूर्योदय और सूर्यास्त भारतीय समयानुसार ही होते हैं पर जब सूर्योदय होता है तो यहां का लोकल टाइम 8 बजे बताता है और सूर्यास्त के समय 10 बजे, लेकिन हमने अपनी घड़ियां भारतीय समय के अनुसार ही चलने दीं, जैसे पहले थी।

चूंकि यहां एक के बाद दूसरे बैच आते रहते हैं और हर साल ही यात्रा होती है तो यहां खाने की व्यवस्था बनी हुई है, यहां हमें भारतीय कुक उपलब्ध कराए जाते हैं और साथ ही बर्तन भी, हमें बस राशन – पानी का इंतजाम करना होता है और इसके लिए यात्रा से पहले ही यात्रियों में से ही पोनी और पोर्टर, राशन आदि की कुछ कमेटियां बन जाती हैं। इसलिए खाने की ज्यादा दिक्कत नहीं होती है, बस तीन दिन कैलाश परिक्रमा के समय बेसिक चीजें लेकर चलनी पड़ती हैं बाकि सब सामान हर जगह मिल जाता है।

अगले दिन हम खाली थे, पासपोर्ट वापस दे दिए गए थे और सब तकलाकोट या पूरंग घूमने निकल पड़े। यहां की मातृभाषा पाली है और बहुत से साइन बोर्ड भी पाली में थे, जो हिंदी से मिलने के कारण आसानी से समझ आती थी। वैसे तो चीन की अथॉरिटी सब जगह अपनी भाषा भी थोप रही है। यहां बड़ी संख्या में चीन के सुरक्षा बल तैनात थे और फोटो खींचना मना था। यहां दुनिया भर के सारे ब्रांडों के कपड़े और ट्रैकिंग का सामान मिल रहा था, पर डुप्लीकेट। बहुत सी आकर्षक कारें और वाहन चलते दिखाई देंगे और बाजार, होटल और यहां तक की क्लब भी हैं और जगह जगह सड़कों के किनारे पूल टेबल लगी थीं, जहां लोग दिनभर स्नूकर खेलते दिखाई दिए और लेकिन एक खास बात और थी कि सभी लोग हैट या टोपी जरूर पहने था।

जहां भारत की ओर हमें आखिरी बार गुंजी में **BSNL** द्वारा फ़ोन सुविधा उपलब्ध कराई गई थी, वहीं यहां मैट्रिक्स सिम काम कर रहा था, मैंने और कुछ यात्रियों ने इसे पहले ही ले लिया था जिससे सब बात कर पा रहे थे। भारत के उस पार, चीन से अपने देश में घर वालों से बात कर बहुत अच्छा लगा और सब समाचार सुनकर वे भी बहुत प्रसन्न हुए। थोड़ा घूमने के बाद खाना खाकर अपने अपने कमरों में पहुंचे, अभी बहुत हल्की रोशनी थी, ऊंचाई पर होने के कारण यहां दिन देर में ढलता है, हमारी घड़ी में आठ बजे

थे लेकिन होटल की घड़ी साढ़े दस बजा रही थी। कई बार तो इसे देखकर सर चकरा जाता था और फिर गुप्ता जी बोल उठते थे, ''जब दिन उगा तब सवेरा और ढला तो अँधेरा,'' बात छोटी, साधारण और सत्य थी।

सोमवार के दिन हमें यहां से 102 कि.मी. दूर दारचेन पहुंचना था जो समुद्रतल से 4670 मीटर की ऊंचाई पर है, रास्ता राक्षसताल और मानसरोवर होकर जाता है। यहां हमें ले जाने के लिए सुबह 7 बजे दो बसें आ गई थीं। यहां से ल्हासा तक सीधी सड़क है। आज बड़ा शुभ दिन है, दिन जिसके लिए हमने यात्रा आरंभ की थी, दिल्ली से चले ग्यारवां दिन था और आज हमें महादेव के परमधाम ''कैलाश'' के दर्शन होने थे। यात्रियों में बहुत उत्सुकता और उत्साह था, सब ओम नमः शिवाय, हर – हर महादेव और बम – बम भोले के जयकारे लगा रहे थे और इस प्रकार जयकारों से गूंजती बस तीव्र गति से आगे बढ़ती जाती थी और एक घंटे बाद कोई बोला, ''वह देखो कैलाश बायीं ओर!'' सब भाग कर बस के बायीं ओर आ गए, दूर कोई 20 – 25 कि.मी., नीले आसमान को छूता, हिम से आच्छादित भोले का परम धाम उस दूर तक फैली पर्वतरहित भूरे रंग की वादियों में सफ़ेद शिवलिंग सा नजर आ रहा था, चारों ओर से छोटे पहाड़ इसे कमल पुष्पों के सामान घेरे थे।

हर हर महादेव ! के जयकारों से बस भर गयी, फिर तो घुमावदार सड़क पर कभी यह बाएं तो कभी एक दम सामने, कभी उत्तर तो कभी पूर्व दिशा से अलग अलग स्वरुप में नजर आने लगा और सब दर्शनों का आनंद लेने लग गए।

थोड़ी देर बाद बस राक्षसताल के समीप रुकी, भूरे रंग की पथरीली जमीन, हल्की सरल 200 मीटर की ढलान, गहरे नील रंग की स्थिर पानी वाली बड़ी विशाल झील, जिसका अंत भी नजर नहीं आ रहा था और सामने उत्तर की ओर विराट कैलाश था। कुछ यात्री नीचे जाकर जल भर लाए, जब हमने पिया तो स्वाद थोड़ा खारा लगा। ऐसी मान्यता है कि राक्षसराज रावण के नाम पर इसका यह नाम पड़ा है। उसने इसके तट पर तपस्या की थी। इस झील के बिल्कुल पीछे पूरी तरह बर्फ से ढका हुआ एक बहुत सुन्दर पर्वत है जिसे लोग गुरला मान्धाता कहते हैं। एकदम साफ़ नीले आसमान के नीचे एक ओर कैलाश, दूसरी ओर मान्धाता और बीच में राक्षस ताल जो आसमान जितना ही साफ़ और वैसे ही रंग का था, जगह की सुन्दरता का वर्णन करना संभव नहीं है। सब ने कुछ देर रूककर फोटो खींचे और फिर चल पड़े।

गुरला मान्धाता

मुश्किल से पांच मिनट बाद ही बस मानसरोवर के तट पर आकर रुकी, दोनों झीलें एक दूसरे के समानांतर ही हैं। मानसरोवर पूर्व में है और राक्षसताल पश्चिम में, बीच में थोड़ा उभरा पठार है, जिसके कारण एक जगह से दूसरी नहीं दिखती। इतनी समीप होने पर भी इनकी प्रकृति परस्पर विपरीत है। राक्षसताल जहां एकदम शांत, गहरे नीले पानी की और हल्की खारी झील है वहीं मानसरोवर मीठे पानी की, हल्के नील रंग

की, मन में उठती तरंगो की भांति लहरों से युक्त और चमकते पानी वाली झील है जो बड़ी दिव्य लगती है।

कैलाश पर्वत यहां से सीधा उत्तर की ओर दिखाई पड़ता है, पानी बिल्कुल निर्मल है और सूर्य की रोशनी में चांदी सा चमक रहा था। उस दिन सोमवती अमावस्या भी थी, जिसकी बड़ी मान्यता है, भोलेनाथ ने हम पर असीम कृपा हुई। वह बेहद शुभ दिन था कि कैलाश के दर्शन हुए और मानसरोवर में नहाने का अवसर भी प्राप्त हुआ। यहां पानी बहुत ठंडा होता है पर हमने और भी अधिक बर्फीले होने की उम्मीद की थी पर भोले की कृपा से नहाने योग्य था और सबने पहले प्रणाम कर फिर अपनी–अपनी क्षमता के अनुसार डुबकियां लगाई। गुप्ताजी यहां भी सबसे आगे रहे, जहां सब संभल – संभल कर और कांपते हुए पानी में थोड़ा – थोड़ा शरीर को अनुकूल कर रहे थे वहीं गुप्ता जी सीधे भागते पहुंचे, "ओम नमः शिवाय" का जयकारा लगाया और झील में उतर फटाफट चार – पांच डुबकियां लगाकर बाहर निकल आए, तब तक हम सभी ठण्डे पानी के बारे में ही सोचते रहे।

बाहर निकलकर फटाफट हमने शरीर पोछा और कपड़े पहने, हवा बहुत ठण्डी थी पर सूर्य देवता प्रसन्न थे और धूप खिली थी, बड़ी राहत मिली, नहाकर बहुत खुशी मिली, सबने पहली बार किसी झील में नहाया था और फिर उस खुशी का कहना ही क्या जब वह मानसरोवर हो, मन पुलकित हो गया था और एक दम शांत फिर थोड़ी देर ध्यान का प्रयास किया।

सब नहाकर बस में बैठ गए और बस 40 मिनट बाद दारचेन पहुंच गई। दारचेन एक तरह से कैलाश का बेस कैंप है जहां बेसिक होटल हैं और बहुत सी अस्थाई तिब्बती दुकानें जहां काम का सारा सामान मिल जाता है जैसे पानी की बोतलें, फल, सब्जी, दूध आदि। हम भी यहां एक बेसिक होटल में ठहरे थे जिसमे एक कमरे में तीन से चार लोगों के रहने की व्यवस्था थी। यह एक तरह से कामचलाऊ पक्का होटल था। इतनी ऊंचाई और दुर्गम स्थान पर यात्रा सीजन के बाद कोई नहीं आता इसलिए सुविधाएं बहुत साधारण थीं, पर इसकी किसको पड़ी थी ? यहां आकर हम सभी बहुत उत्साहित थे।

मानसरोवर

कैलाश की रहस्यमयी दक्षिणी चोटी यहां से साफ़ दिखती है, यह सदैव बर्फ से ढकी रहती है और इसमें उकेरी कुछ आकृतियां नजर आती हैं जिन्हें बिल्कुल पास से अष्टपद से देखा जा सकता है जो यहां से पांच कि. मी. के पैदल रास्ते पर है। सभी वहां जाने को लालायित थे। मगर दुर्भाग्य से उस वर्ष किसी

भी बैच को भी वहां जाने की अनुमति नहीं मिली और कुछ स्पष्ट कारण भी नहीं बताया गया, जिससे मन में कुछ निराशा अवश्य हुई। शायद भोले जब अगली बार बुलावा भेजें और विशेष कृपा करें तो फिर दर्शन हों पर अभी पांच वर्ष उपरान्त भी आज्ञा की प्रतीक्षा है, या शायद न जाने का यह हमारा बहाना ही हो या फिर भोले इस प्रकार आज्ञा की अवहेलना होती देखकर कुछ अधिक ही कृपा कर दें तो फिर जाने का अवसर प्राप्त हो, क्या पता बाबा अवढरदानी है।

यहां से तीन दिन की कैलाश परिक्रमा शुरू होती है और वापस यहीं आना होता है इसलिए लोग एक हल्का बैग पैक लेकर ज्यादातर सामान यहीं छोड़ देते हैं। यहां से जो लोग पोनी – पोर्टर करना चाहते हैं, वह चाईनीज मुद्रा देकर अपनी बुकिंग करवा लेते हैं। एक गाइड यात्रियों के साथ तीन दिन तक रहता है।

इतना सब करते और खाना खाते शाम हो गई और फिर हम इस बेहद ऊंचाई वाले इलाके में घूमने निकल पड़े पर रह–रह कर आंखें उत्तर दिशा में स्थित कैलाश के दक्षिण मुख की ओर टिक जाती थीं, एक अलग ही आकर्षण था और शरीर पुलकित हो जाता था पर हमारी दृष्टि इतनी गंभीर और विराट नहीं थी कि मन कुछ समझ पाता बस इस दिव्य पर्वत को बार–बार निहार कर आंखें तृप्त कर लेते थे। मैने मोबाइल चेक किया तो मैट्रिक्स सिम काम कर रहा था और तुरंत घर फ़ोन किया, पिताजी सुनकर बहुत प्रसन्न हुए कि हम कैलाश के इतने निकट थे माता ने भी बहुत आशीर्वाद दिया। इस प्रकार हम थोड़ा घूम फिरकर ओम नमः शिवाय का मन ही मन जाप कर वापस आ गए।

अगले दिन दलिया खाकर हम छह बजे बाहर आए, हर – हर महादेव के जयघोष के साथ बस में सवार हुए। आज कैलाश परिक्रमा शुरू होनी थी और बस ने सात कि.मी. आगे परिक्रमा ट्रेक पर छोड़ दिया जहां से जिनकी बुकिंग थी उन्हें पोनी – पोर्टर एलॉट हुए और फिर सब जयकारा लगाते हुए चले।

यह परिक्रमा यम द्वार से शुरू होती है जहां एक छोटा सा यम मंदिर है। भक्त कोई पुराना कपड़ा आदि अर्पित करते हैं और परिक्रमा कर आगे बढ़ते हैं। परिक्रमा मार्ग शांत, खुला और बेहद ठंडा और तीव्र हवाओं वाला है, जहां खिली धूप में भी दस्ताने पहनने पड़ते हैं और कैप लगानी पड़ती है। यहां हवाएं इतनी ठंडी और शुष्क हैं कि आपको बहुत जल्दी पानी की कमी हो सकती है और इसलिए थोड़ी – थोड़ी देर में कुछ खाते – पीते रहना पड़ता है। मार्ग ज्यादा ऊंचा–नीचा नहीं है और 12 कि.मी. आगे डेरापुक पर आकर ख़त्म होता है। यह सब बौद्धों के द्वारा दिए गए नाम हैं क्योंकि कैलाश पर्वत की परिक्रमा यह भी करते हैं और इनके साथ ही साथ जैन भी। अभी इन लोगों के यहां (तिब्बत में) बसे होने और चीन का नियंत्रण होने के कारण अधिकांश जगहों के नाम बदल दिए गए हैं और कुछ प्राचीन मंदिर भी मठों में बदल दिए गए हैं।

यमद्वार स्थित यम मंदिर

मेरे साथ गुप्ताजी, प्रियांशु, अनुराग और श्री राम ने चलना शुरू किया और थोड़ी ही देर में तीनों आगे निकल गए, मैं और प्रियांशु धीरे – धीरे साथ चलते रहे। जैसे – जैसे हम आगे बढ़ते हैं और दिशाएं बदलती हैं वैसे – वैसे ही कैलाश भी स्वरुप बदलता है, कहीं – कहीं यह पर्वतों में छुप जाता है तो फिर कहीं विराट रूप में प्रकट होता है। परिक्रमा मार्ग दक्षिण – पश्चिम – उत्तर और फिर पूर्व में समाप्त होता है और इसके अलग – अलग रूपों के दर्शन कराता है।

कैलाश परिक्रमा मार्ग

यमद्वार के पास से दिखता कैलाश पर्वत

जैसे–जैसे लोग आगे बढ़ते हैं वैसे – वैसे यह शीतल और शुष्क हवाएं विचारों को अपने साथ उड़ाती जाती हैं और यहां एक अजीब सा अनुभव हुआ कि लोग आपस में ज्यादा बात नहीं कर रहे हैं, एक अलग प्रकार की विरक्ति और खालीपन, जो पूरी परिक्रमा में साथ चलता है।

इस प्रकार हम दो बजे के आस–पास कैलाश की उत्तरी दिशा स्थित कैंप पहुंच गए। कैलाश के इस उत्तर मुख वाली चोटी को चरणस्पर्श भी कहा जाता है क्योंकि दो कि.मी. की खड़ी चढ़ाई चढ़कर आप इसके बिल्कुल नीचे स्थित कई सौ फुट ऊंचे ग्लेशिअर तक पहुंच सकते हैं और इसे स्पर्श कर सकते हैं। देखने में यह बिल्कुल एक विराट शिवलिंग की भांति है।

5060 मीटर की ऊंचाई पर स्थीत डेरापुक में ऑक्सीजन की बेहद कमी है पर हम कुछ दिनों से 4000 मीटर से अधिक ऊंचाई पर थे और फिर भोलेनाथ की कृपा भी थी तो ज्यादा दिक्कत नहीं हुई। चरणस्पर्श से बराबर एक जल धारा निकलती है और इस पवित्र जल को हमने बोतल में ले लिया। चरणस्पर्श जाने की अनुमति उस वर्ष किन्हीं कारणों से नहीं मिली पर हम इसके थोड़ा ही नीचे स्थित और काफी ऊंचाई पर स्थित उस जगह तक जरूर गए जहां से इसके विराट स्वरुप के दिव्य दर्शन हो रहे थे और सबने हर – हर महादेव का जयकारा लगाया।

थोड़ी देर बाद हम नीचे आए और कैंप में विश्राम किया फिर जब शाम को बेहद ठण्ड में बाहर निकले तो एक अनुपम और अलौकिक दृश्य दिखा। डूबते हुए सूर्य की रक्तिम किरणों से कैलाश स्वर्णिम रंग में रंग गया था और इसकी शिवलिंग समान आकृति और भी अधिक दिव्य लग रही थी।

कैलाश परिक्रमा मार्ग में उस समय एक समस्या रही, टॉयलेट का न होना और उस पवित्र जगह में आप को बाहर कुछ करते गंभीर अपराधबोध का अनुभव होता है। हो सकता है कि अब वहां

कैलाश की उत्तरी दिशा : चरणस्पर्श

यह उपलब्ध हो गई हों।

परिक्रमा मार्ग में ज्यादा राशन नहीं ले जाया जा सकता इसलिए शाम को सब खिचड़ी खाकर जल्दी सो गए। आज और एक बार रात में चलना था और इसलिए नींद नहीं आई। आज का ट्रेक बेहद लम्बा और 5590 मीटर ऊंचे डोलमा पास से गुजरने वाला था और इतनी ऊंचाई पर मौसम कभी भी ख़राब हो सकता है और इसे रात या सुबह जितनी जल्दी पार कर लिया जाए उतना ही अच्छा होता है।

हम आठ लोग जिन्होंने पोनी नहीं की थी आधे घंटे पहले निकले और ओम नमः शिवाय बोलते हुए धीरे चले। हमारे साथ एक डॉक्टर प्रदीप जी भी थे और मेडिकल किट उनके साथ थी और उसमे ऑक्सीजन के भी दो पोर्टेबल सिलेंडर थे जिन्हें ऊंचाई बढ़ने पर कुछ यात्रियों को देना पड़ा। ऊंचाई बढती जा रही थी और रात अपने अंतिम पहर पर पहुंच गई थी पर हम कहीं नही पहुंचे। लिपुलेख से यह ट्रेक अपेक्षाकृत आसान था क्योंकि ज्यादा बोल्डर नहीं थे पर बेहद हल्की हवा ने इसे बेहद कठिन बना दिया था और कुछ कदम लगातार चलना भी भारी पड़ रहा था। लोग ओम नमः शिवाय बोलते रहे और एक – दूसरे का हौसला बढ़ाते रहे। अरविन्द यहां भी लोगों की बढ़ – चढ़कर मदद कर रहा था और कुछ यात्रियों को तो पूरी तरह कन्धा पकड़कर साथ ले चल रहा था। धन्य हो यह यात्री जो ऐसी जगह भी जहां स्वयं का चलना मुश्किल था दूसरों को अपनी ऊर्जा से यात्रा पूरी करा रहा था।

पांच बजे सूर्योदय हुआ और हम अभी भी डोलमा से लगभग दो कि.मी. दूर थे तो इन पांच घंटों में हम इतनी ही दूरी तय कर पाए थे। कैलाश यहां पर्वतों से घिरा हुआ है और बस एक बहुत छोटा कोण ही दिख रहा है जो उगते सूर्य की किरणों के प्रभाव से उसी रंग में चमक रहा था। हमें थोड़ी निराशा हुई कि यहां से पूरे दर्शन नहीं हुए।

आखिरी एक कि.मी. की चढ़ाई बहुत भारी पड़ी और एक – दो कदम में ही रुकना पड़ रहा था। लिपुलेख चढ़ते हम कम से कम आठ – दस कदम तो चल पा रहे थे पर यह कैलाश है और आपकी हर तरह से परीक्षा लेता है। जय बजरंगबली, ओम नमः शिवाय, जय श्री गणेश के न जाने कितने जयकारे मन ही मन लगाए, सभी देवी – देवता भी इस चढ़ाई में याद आ गए और एक तरह से यह भी अच्छा ही है वरना हम मतलबी आदमी बिना किसी कारण किसे याद करते हैं। यहां मैंने देखा कि घोड़े भी रुक – रूककर चल रहे थे। ओम नमः शिवाय बोलकर यहां भी पूरा जोर लगा अरविन्द ने कई यात्रियों को डोलमा टॉप तक पहुँचाया। इस तरह पूरी तरह से थके हम सात बजे के आस – पास डोलमा के ऊपर पहुंचे। यहां से कैलाश पर्वत नहीं दिखता, वही कमल समान पर्वत इसे घेरे रहते हैं। यहां तारा देवी का एक छोटा सा खुला मंदिर है जहां लोग धूप अगरबत्ती जलाते हैं। डोलमा नाम तिब्बती देवी डोलमा के नाम पर पड़ा। तिब्बत में विद्या की देवी को डोलमा कहा जाता है, जो हमारे यहां की सरस्वती देवी के समान माना जाता है।

डोलमा को शिवस्थल भी कहते हैं और कहा जाता है कि यहां से गुजरने वालों को यम परखते हैं। पास ऊपर से समतल है पर उस विरल वायु में समतल सतह भी चलने में अधिक मददगार नहीं बनी और हमने बैठकर थोड़ी देर आराम किया, अभी 12 कि.मी. और चलना था। भोलेशंकर की हम सब पर विशेष कृपा रही और अभी तक भारत से यहां तक की यात्रा में मौसम ने बहुत साथ दिया, अधिकतर खुला और साफ़ मौसम मिला और रास्तों पर बर्फ भी नहीं मिली। 'हर–हर महादेव' बोलकर हमने नीचे उतरना आरंभ किया और थोड़ी ही देर में रास्ते के नीचे एक ओर स्थित पन्ने सा दमकता गौरी कुण्ड दिखाई पड़ा।

ऐसा माना जाता है कि हिमालय में पांच कैलाश हैं और जहां जहां कैलाश हैं वहां–वहां गौरी कुण्ड हैं। लेकिन इनमें यह सर्व प्रमुख है। यात्री गण काफी नीचे स्थित इस कुण्ड के पास पहुंच कर पवित्र जल भर ऊपर आते हैं और यदि कोई वहां तक नहीं जा पाए तो पोनी वाले को थोड़ा पैसा देकर जल मंगाया जा सकता है। यह कुण्ड अधिकांश समय जमा रहता है पर माँ भगवती की विशेष कृपा थी जो बिल्कुल हरे रंग के स्वच्छ जल वाले इस कुण्ड के दर्शन हुए। गौरी – शंकर भगवान की जय बोलते हम नीचे बढ़ चले।

गौरी कुण्ड

यहां दो छोटे ग्लेशियरों को पार करते हुए हम एक बेहद सुन्दर छोटी धारा के किनारे – किनारे चलते हुए कैलाश की पूर्व दिशा की ओर पहुंच गए, जहां अगस्त के अपेक्षाकृत कम सर्द मौसम और कभी – कभी पड़ने वाली हल्की फुहारों से पर्वत की निचली ढालों पर हल्की घास उग आई थी और ढेरों याक काफी ऊंचाई पर आराम से चर रहे थे और यह यहां हों भी क्यों नहीं भगवान पशुपतिनाथ तो सबके आराध्य हैं।

कुछ आगे जाने पर एक काम–चलाऊ टेंट में याक का दूध और नूडल्स बिक रहे थे, हमने यूं ही टेस्ट करने के लिए ले लिए, पर नूडल्स बिल्कुल बेस्वाद थे और दूध बहुत महक रहा था तो दोनों ही छोड़ने पड़े। इस प्रकार रात के चले और थके हारे से हम शाम तीन बजे 4780 मीटर की ऊंचाई पर स्थित कैंप पर पहुँचे। बेहद ठंडी और शुष्क हवा से गला पूरी तरह सूख चुका था और 15–16 घंटे की यात्रा से शरीर भी टूट गया था पर भगवान शंकर की बहुत कृपा रही जिससे अच्छे मौसम में सब सुरक्षित और जयकारा लगाते हुए कैंप में पहुंचे। टैंट में घुसते ही बैग रख कर सीधे लेट गया और पीठ सीधी की फिर शाम छह बजे तक खिचड़ी और मैगी बन गई जिसको बेहद प्रेम से सबने भरपूर खाया और फिर हल्की फुहारें पड़ने लगीं और सब अन्दर चले गए। सात बजे हम बाहर आए तो एक अलग ही दृश्य देखा, नीचे हल्की बारिश हुई थी पर आस – पास की सभी पहाड़ियां बर्फ से ढक चुकी थीं, कैलाश नहीं दिख रहा था पर दृश्य बहुत सुन्दर था। आज मन बहुत हल्का महसूस हो रहा था क्योंकि यह यात्रा का सबसे मुश्किल ट्रेक था और कल का ट्रेक बस पांच कि.मी. का ही है और फिर बस हमें वापस दारचेन पहुंचा देगी जहां से हम मानसरोवर स्थित कैंप के लिए प्रस्थान करेंगे। अगले दिन

हम दो घंटे में उस स्थान तक पहुंचे जहां से बस मिलनी थी। यह तीन ओर से खुला, काफी ऊंचाई पर स्थित घाटी क्षेत्र है जहां बहुत ही ठंडी और तेज हवाएं चलती हैं। मौसम साफ़ था और सुबह सात बजे हल्की धूप हो गई थी पर बहुत ठंडक थी। यहां नेपाल के रूट से आए कुछ यात्री भी मिले जो कैलाश परिक्रमा कर बस की प्रतीक्षा कर रहे थे। यहां पर इस परिक्रमा की एक खास बात देखी कि बहुत से बौद्ध और स्थानीय तिब्बती दण्डवत होकर पेट के बल लेटकर इस दुर्गम परिक्रमा को पूरा कर रहे थे जो हमारे लिए एक तरह से असंभव बात थी और इसमें कम से कम दो सप्ताह का समय और न जाने कितनी ऊर्जा लगती होगी और यह देखकर हमारा सिर श्रृद्ध ा से झुक गया। हम तो आराम से चलने को ही दुर्गम समझ रहे थे ? जय भोलेनाथ।।

परिक्रमा का आखिरी दिन

यहां से दूर मानसरोवर और राक्षसताल झीलें दिख रही थीं और प्रतीक्षा करते एक घंटे बाद दो बसें आ गईं और फिर आधे घंटे में हम वापस दारचेन पहुंच गए जहां सामान लिया और मानसरोवर स्थित कुगू कैंप जाने के लिए बस में बैठ गए। कैलाश की दक्षिण दिशा की ओर मुख वाली रहस्यमय चोटी यहां से दिख रही थी और अब हर बीतते पल के साथ हम इस पर्वत से दूर होते जाएंगे। तीन दिन की निर्जनता और शून्यता ने जैसे मन को अपने समान ही कर दिया था जहां चलती तेज हवा सारे विचारों को उड़ा ले गई थी। उत्तराखण्ड से जब हमने यात्रा आरंभ की थी तब सर्वत्र हरा–भरा था फिर हरियाली का स्थान जड़ी–बूटियों ने ले लिया और फिर इनका स्थान रिक्त पर्वतों ने ले लिया और फिर इनके बाद एक ऐसी जमीन आयी जहां यह भी नहीं थे बस एक अनंत तक फैला हुआ पठार जो कठोर ठंडी हवाओं से भरा हुआ है और जहां केवल कैलाश ही एक महत्वपूर्ण पर्वत है। यहां प्रकृति के पांचों तत्व अपनी स्वाभाविक अवस्था में हैं और इनसे बनी सम्पूर्ण प्रकृति एक तरह से बहुत दूर छूट चुकी थी और यह सभी मूल तत्व अपने स्वामी भोलेनाथ

को जैसे यहां नमन कर रहे हैं। जय भोलेशंकर! हर हर महादेव! के जयकारों के साथ बस आगे बढ़ी, इसे होर कहते हैं यहां से होते हुए कुगू जाना था। होर में हमने थोड़ा राशन लिया और फिर बस पक्की सड़क छोड़कर कच्ची सड़क पर मानसरोवर की ओर बढ़ चली। दारचेन से कुगू 90 कि.मी. है और झील की परिधि भी इतनी ही है और इसकी गहराई भी इतने ही मीटर है और बस इसके सुन्दर तटों से होकर बढ़ी चली जाती थी। एक तरह से बस इस झील की आध ी परिक्रमा कर एक किनारे स्थित कैंप पहुंचती है जो पक्का है और जहां रहने का भी अच्छा प्रबंध है। बस इससे निकलती बहुत सी धाराओं के ऊपर से गुजरती है जिनमे प्रमुख हैं; सतलुज, ब्रह्मपुत्र और सिंधू नदियाँ, इसके अलावा दो और नदियां तिब्बत होते हुए चीन चली जाती हैं। लगभग 4600 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह दुनिया की सबसे ऊंची मीठे पानी की झील है और तिब्बत पठार जो खारे पानी की झीलों से पटा पड़ा है वहां इतनी ऊंचाई पर यह मीठे पानी की झील होना किसी चमत्कार से कम नहीं है। राक्षसताल में भी इसी का पानी आता है।

मानसरोवर का पानी भी दिन में कई बार रंग बदलता है और साथ ही साथ तापमान। कभी तो यह एकदम बर्फीला हो जाता है और कभी इतना कि आप थोड़े प्रयास से आराम से नहा सकते हैं। हमने भी पहुंचते ही सबसे पहले इसके पवित्र जल में स्नान किया। तीन दिन पहले की तुलना में यह कम ठंडा था और कैलाश दर्शन के पश्चात इसके पवित्र जल में स्नान कर बड़ा सुख मिला और फिर सबने खाना खाकर थोड़ा आराम किया।

शाम को इसके तट पर घूमने निकले, ऐसा बहुत जगह वर्णित है की इसके तटों पर पर्वतों से लगी बहुत सघन गुफाए हैं जिनमे आज भी संत तपस्या में लीन हैं पर यह इतनी बड़ी झील है कि पैदल परिक्रमा में पांच से छह दिन लगेंगे और हमारे पास तो बस अगला दिन बाकी था।

यह अपने तरह का अनोखा भूगोल है जहा छितरे पर्वत और ऊंचे – नीचे पठार, हमेशा तीव्र गति से बहती सरसराती हवाएं जो रात में तो यह आंधी का रूप ले लेती है। यहां आपको विशालकाय तिब्बती कुत्ते भी दिखाई पड़ेंगे जो भयंकर काले रंग के हैं और दिन में शांत रहने वाले यह जीव शाम होते – होते खूंखार हो जाते हैं। वास्तव में ही यह स्थान ध्यान के लिए उत्तम है और स्थितियां सब प्रकार से अनुकूल हैं।

अगले दिन नहा कर हमने पास ही बने प्लेटफार्म पर हवन किया, सामग्री हमें दिल्ली में ही वितरित की गई थी। शास्त्री जी के निर्देशानुसार हवन हुआ और फिर सबने ओम जय शिव ओमकारा की आरती से इसका समापन किया और इसके बाद ग्रुप फोटो भी हुई। यह वास्तव में विशेष हवन था; साफ़ मौसम, 12 से 14 डिग्री का तापमान, मानसरोवर का तट और सामने बर्फ से लदा कैलाश पर्वत, सब कुछ दिव्य और अनुपम था। हमारे पास आज पूरा दिन था और घर ले जाने के लिए सबने झील से पवित्र जल भर लिया। हवन उपरांत खाना खाकर और तरह – तरह की चर्चाओं में दिन व्यतीत हुआ और शाम को मैं और विवेक साहू जी के साथ पास ही स्थित पठार पर थोड़ा चढ़े और कुछ ऊंचाई पर जहां पूरी मानसरोवर झील अपने दिव्य स्वरुप में दिख रही थी, वहां थोड़ी देर शांति से बैठे। चारों ओर भूरे रंग के पठारों से घिरी नीले रंग की झील बहुत सुन्दर लग रही थी और हमने बहुत फोटो खींचे फिर वापस नीचे आ गए। शाम को खाना

खाकर सबने थोड़ी देर शास्त्री जी के गानों का आनंद लिया और सो गए अगले दिन हम जल्दी उठे, आज बादल थे और हमें वापस तकलाकोट लौटना था। ठण्ड बहुत थी और झील में चाहते हुए भी नहाने की हिम्मत नहीं जुटा पाए पर हम में से एक यात्री जो शायद अनूप था उसमें तैर रहा था, केरल का यह लड़का बड़ा हिम्मती था। बस में सामान रखकर मैं एक आखिरी बार झील को देखने तट पर पहुंचा और देखा कि एक बुजुर्ग यात्री उसे भाव – विभोर होकर देखे जा रहे हैं। सुबह बादलों से घिरा आसमान एकदम नीला था और झील भी, पता ही नहीं चल रहा था कि नीले बादलों का प्रतिबिंब इस पर पड़ रहा था या इसका बादलों पर। इस पवित्र भूमि को छोड़ने का मन नहीं था, पता नहीं फिर कब बुलावा आए ?

बस चली और थोड़ी ही देर में हम कुछ ऊंचाई पर एक पठार पहुंचे जहां से दोनों ही झीलें एक साथ देखी जा सकती थीं, नाक की सीध में कैलाश पर्वत भी दिख रहा था। लोगों ने बम – बम भोले बोलकर बहुत सी फोटो लीं। तकलाकोट के बिल्कुल पहले ही अट्ठारवीं सदी के भारतीय योद्धा जोरावर सिंह की समाधि है जिन्होंने उस समय पूरा कश्मीर, लद्दाख और तिब्बत का एक बहुत बड़ा हिस्सा जीत लिया था और राशन की कमी होने के कारण वह यहीं वीरगति को प्राप्त हुए थे। यहां बस थोड़ी देर के लिए रुकी और समाधि स्थल के दर्शन कर हम थोड़ी दूर स्थित एक प्राचीन हिन्दू मंदिर के, जो कई हजार वर्ष पुराना है और अब मठ में बदल दिया गया है, दर्शन करने पहुंचे।

यहां अभी भी भगवान श्री राम, माता जानकी और लक्ष्मण जी के विग्रह हैं और साथ – साथ माता काली जी और अन्य देवी – देवताओं की

झील को निहारता एक यात्री

मूर्तियां भी हैं जिन्हें अब बौद्ध प्रतीकों के साथ अन्य नामों से जाना जाता है। दिन में बारह बजे के आस – पास हम वापस तकलाकोट के उसी होटल पहुंच गए। अभी हम सब काफी हल्का महसूस कर रहे थे, कैलाश परिक्रमा सुगमता से पूर्ण हुई, मौसम ने साथ दिया और मानसरोवर तट पर निवास भी सुखद रहा और प्रभु की बड़ी कृपा रही। यहां गुप्ताजी थोड़े परेशान लग रहे थे, क्योंकि उनका पान – मसाला ख़त्म हो गया था। ख़त्म तो कुछ दिन पहले आते ही हो गया था पर कैलाश के दर्शन करने थे, इसलिए मुँह को विश्राम दे रखा था और आज वापस आकर उनकी प्रतिज्ञा पूरी हुई थी।

अगले दिन हमें अपने देश वापस आना था। बसों ने हमें लिपुलेख के बेस कैम्प तक पहुंचा दिया जहां से तीन कि.मी. की चढ़ाई थी। यहां से आगे दो कि.मी. तक एक कच्ची सड़क थी जहां तक लैंडक्रूसर जाती थीं। लेकिन आज हल्की बारिश हो रही थी और मौसम बहुत ठंडा था। चीन की सेना के जवानों ने हमारा सामान लैंडक्रूसर के चालक को देकर हमें भी दो कि. मी. ऊपर तक छोड़ने को कहा और दो गाड़ियां तीन–चार चक्कर लगाती हुईं हमें वापस वहां तक

ले गईं। किसी अन्य वाहन के लिए यह संभव न होता, इतनी अधिक ऊंचाई और उबड़ – खाबड़ रास्तों पर सामान के साथ हमें दो कि.मी. ऊपर पहुंचाना बहुत बड़ी बात थी, जिनसे इन गाड़ियों की क्षमता पता चलता है। हम सबने इन लोगों का धन्यवाद किया क्योंकि इससे हमारी वापस 5360 मीटर ऊंचाई की चढ़ाई बहुत कम हो गई वरना सामान के साथ बारिश में चढ़ना बेहद मुश्किल होता। जब हम पास से एक कि.मी. नीचे पहुंचे तो वहां दृश्य ही बदला हुआ था। यहां हल्की बर्फ पड़ रही थी और सब सफ़ेद रंग में रंगा हुआ था।

हम में से बहुत से लोगों ने बर्फ पड़ना पहली बार देखा था। इस नजारे को देखकर सभी बहुत खुश हुए। धीरे–धीरे सब फिसलन भरे रास्तों पर बड़ी प्रसन्नता से एक–दूसरे से मिले। मन इतना अच्छा महसूस कर रहा था कि वर्णन नहीं किया जा सकता, अपनी मिट्टी की सुगंध ही कुछ और होती है और जब आप वापस हिमालय पहुंचते हैं तब आपको तत्काल अनुभव होती है और इसी से पता चल जाता है कि देश वापस आ गए। यहां से तीन कि.मी. तक धुंध और हल्की बर्फ के बीच संभल कर उतरे, जो धीरे धीरे ख़त्म हो गई। नीचे हल्की धूप खिली थी और रास्ता सूखा था पर बीच – बीच में बादल आ रहे थे। अब हम वापस उस रास्ते (ट्रेक) को देख रहे थे जिसे अंध ेरे में हमने कुछ दिन पहले पार किया था। मन में बस यही सोच रहा था कि इस बार ओम पर्वत के दर्शन होंगे या नहीं और इसी विचार के साथ कैंप पहुंच गए।

लिपुलेख पास

संभल कर चलते हुए एक घंटे बाद लिपुलेख पास पहुंचे जहां ITBP के जवान और पोनी वाले हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। हमें वैसे सात बजे पहुंचना था पर हम साढ़े आठ तक पहुंचे। मिलते ही सबने हर–हर महादेव के जयकारे लगाए और

बाबा भोलेनाथ करुणा के सागर हैं और जिन्हों ने दर्शन करा दिए। कैंप के बिल्कुल सामने ही यह पर्वत है और अत्यंत विशाल ओम की आकृति साक्षात देखी जा सकती है, प्रकृति ने मानों स्वयं बर्फ से रेखा खींच दी है। इस मौसम तक बर्फ

पिघल जाती है पर इतनी जरूर है जिससे ओम की आकृति देखी जा सकती है। अगर दिन साफ़ हो तो आप 100 कि.मी. पहले भी यह विशाल ओम पर्वत देख सकते हैं।

पर्वत के सामने शीश नवां कर, भगवान शंकर की जय बोलते हमनें ढेरों फोटो लीं और कैंप में प्रवेश किया। आज हमें अभी 18 कि.मी. और चलकर गुंजी पहुंचना था। शायद मैं और प्रियांशु ही आखिरी यात्री थे या अरविन्द और बचा हो ठीक से याद नहीं पर अधिकतर दस – साढ़े दस तक निकल चुके थे। हम वैसे भी लगभग हर कैंप में सबसे बाद ही पहुंचते थे और "स्लो ट्रेवेलर" यात्री माने जाते थे। यहां से कालापानी नौ कि.मी. था और यहां हमें वापस पेड़ – पौधे मिल जाते हैं, हम तीन घंटे में दो बजे तक यहां पहुंचे, यहां चेक – पोस्ट पर पासपोर्ट स्टैम्प हुए और फिर महाकाली मंदिर में मत्था टेका। माँ काली और हनुमान जी के दर्शन कर बड़ा सुकून और शांति मिली और फिर काली नदी हमारे साथ चलने लगी।

यहां से आर्मी के ट्रक वापस गुंजी जा रहे थे जिनमे कुछ यात्री सवार हो गए पर मैंने इस बार पैदल ही वापस जाने का मन बनाया। गुंजी यहां से नौ कि.मी. था और रास्ते में हम दो या तीन यात्री ही पैदल थे पर अब अधिकतर उतराई ही थी जिससे मैं तेज चला और ढाई घंटे में ही शाम के पांच बजे कैंप पहुंच गया। आज का ट्रेक बहुत लम्बा था, पर भोले बाबा की विशेष कृपा थी जिससे लिपुलेख की वह दो कि.मी. की कठिन चढ़ाई बच गई फिर भी हम 27 – 28 कि.मी. तो चले ही थे। वही **FRP** के टेंट और वही ग्रुप, बस मेरी ही जगह बची थी बाकी सब तो तीन–चार बजे ही आ गए थे और कुछ तो गर्म पानी से

वेदव्यास गुफा

नहाकर एकदम तैयार बैठे थे। यहां से लौटने वाले प्रत्येक यात्री दल को **ITBP** के जवान पार्टी देते हैं तो सब जल्दी से तैयार होकर चल पड़े। पहले दुर्गा माता के मंदिर में मत्था टेका और फिर डाइनिंग हाल में प्रवेश किया। फिर एक ब्रीफिंग हुई और फिर कुछ जवानों ने गाने भी गाए, इसमें

ओम पर्वत

शास्त्री जी भी शामिल हुए उन्होंने भी दो पुरानी फिल्मों के गीत सुनाए। इसके बाद बढिया रात्रि भोज और फिर हम ITBP के जवानों का धन्यवाद कर अपने – अपने टेंट में चले गए। आज हम बहुत चले और हरियाली रहित तिब्बत से वापस हरियाली युक्त पर्वतों के बीच अपने देश पहुंचे, सब बहुत थक चुके थे इसलिए गहरी नींद आई। अगले दिन हम छह बजे बुद्धी के लिए निकले और सब आराम से चार बजे तक बुद्धी पहुंच गए। यह सेब के बागानों से घिरा सुन्दर कैंप है और अब हमें वापस स्वादिष्ट भारतीय खाना खाने को मिल रहा है जो कि यात्रा संपन्न होने के बाद अब और अधिक स्वादिष्ट लग रहा था। शाम को L.O. मैडम ने मीटिंग बुलाई जिसमे गाइड भी थे और यह तय हुआ कि गाला के थोड़ा पहले ही एक रास्ता नयी बन रही सड़क पर जाता है जहां हमें जीपें मिलेंगी जो सीधी धारचूला पहुंचा देंगी और हमें उसे ही फॉलो करना है।

उस दिन रिमझिम बारिश हो रही थी और इतने दिनों में पहली बार हमें बारिश देख रहे थे, फिसलन भरे रस्ते चलते हुए हमने अनुभव किया कि पूरी यात्रा में हम कितने भाग्यशाली रहे कि साफ़ मौसम मिलता रहा। तीन – चार हजार सीढियां चढ़कर हम एक पर्वत के ऊपर पहुंचे जहां थोड़ी ही दूर स्थित गाला कैंप दिख रहा था और मन हुआ कि सीधे वहीँ चल आराम किया जाए, पर यहां से पगडण्डी कटी थी और खाना खाकर हम सीधे एक खड़ी ढाल पर उतरने लगे। बीच – बीच में सीढियां बनी थीं पर फिसलन बहुत थी। मैं भी एक बार गिरा पर भगवान की दया से कोई चोट नहीं आई। अरविन्द शास्त्री जी को लेकर चल रहा था और बिजली चमकने पर हर–हर महादेव बोलता था। नीचे उतरकर हमें जीपें मिलीं जिनमे बैठकर हम शाम सात बजे धारचूला पहुंच गए जो 40 कि.मी. दूर था। इससे हमारे 16–17 कि.मी. का ट्रेक बचा पर हम बुरी तरह थक गए, पहले 14 कि.मी. का कठिन ट्रेक फिर हजारों सीढियां चढ़ना और फिर वापस उतरकर रोड तक आना, हमारी पीठ जवाब दे गई थी। धारचुला, हम वापस वहीं पहुंच गए जहां से हम कुछ दिन पहले ही कुछ बड़ा और विराट अनुभव प्राप्त करने निकले थे। कुछ अनुभव हुआ या नहीं यह तो नहीं पता पर एक किस्म की स्थिरता और शांति अवश्य मन में आ गई थी और इस प्रकार हमारे 15 दिन के आस–पास के एकांत का अंत हुआ।

किसी को यह विश्वास नहीं हो रहा था कि यह सब आज ही इतनी जल्दी ख़त्म हो जाएगा क्योंकि हमने दो कैंप बाईपास कर दिए थे और इस प्रकार इतने दिनों के इस अविस्मरणीय ट्रेक का अंत हुआ जिससे कुछ अटपटा और खालीपन भी महसूस हो रहा था। कुमाऊं मंडल के उसी बढिया होटल और उसी रूम में हम दोबारा ठहरे। अन्दर विवेक और गुप्ताजी लेटे मिले और आते ही गुप्ताजी ने पूछा, 'क्या जीप समय से नहीं मिली ? हम लोग तो पांच बजे ही आ गए।' मैं पूरी तरह से भीग चुका था या कहा जाए कि सारा ट्रेक ही भीगते हुए किया था। इस प्रकार पूरी तरह से थका – भीगा मैं सबसे पहले नहाने चला गया, बैगपैक के भीतर पानी घुस गया था पर एक–दो कपड़े सूखे बचे थे जिन्हें पहना और बाकी पंखा चलाकर सूखने डाल दिए। पीठ और घुटने बहुत दर्द कर रहे थे, मैं कम्बल ओढ़कर लेट गया, थोड़ी देर में सब खाना खाने चले गए पर मुझे नींद आ गई और सोता ही रहा और फिर सीधे चार बजे नींद खुली। बिस्तर से उठकर नहा धोकर बिखरा सामान पैक किया और तैयार होकर बैठ गया तब तक पांच बज गए थे और गुप्ता जी की आवाज आई, 'क्या खट–पट लगा

रखी है आज कौन सा पांच बजे निकलना है?' मैं होटल से नीचे उतरकर बाहर आकर टहलने लगा और फिर महसूस हुआ कि घुटनों और पीठ का दर्द जो कल शाम बहुत परेशान कर रहा था आश्चर्यजनक रूप से गायब हो गया था, भोलेनाथ की कृपा मानकर मन ही मन धन्यवाद दिया और थोड़ी देर ऐसे ही टहलता रहा।

सात बजे नाश्ता तैयार हो गया और पेट भरकर खाया फिर सब बस में बैठ गए और बस पिथौरागढ़ के लिए निकल पड़ी। पहले हम वापस मिर्थी पहुंचे जहां खाना खाया। जब हम पहले यहां आए थे उस समय का वीडियो टीवी पर चलाया जा रहा था और फिर जो ग्रुप फोटो हुई थी उसकी कॉपी सबको दी गई। यहां से चलकर शाम चार बजे हम हरी भरी वादियों के शहर पिथौरागढ़ पहुंच गए।

यह यहां का बड़ा और सुन्दर शहर है, इस समय मौसम अच्छा था और हल्की सी ठंड थी। निगम का होटल यहां भी बहुत अच्छा है और हम चार एक बड़े से रूम में साथ ही रुके। शाम को मार्केट घूमने निकले और दो ढाई घंटे में काफी शहर घूम लिया। अगर मौसम साफ़ हो तो आप यहां से हिमालय की ऊंची पंचचूली चोटियों को देख सकते हैं। अगले दिन हम लगभग 85 कि. मी. दूर चारों ओर देवदार से घिरे प्राचीन मंदिरों के नगर जागेश्वर आ गए और निगम के ही एक बेहद सुन्दर होटल में रुके। जागेश्वर कई सौ वर्ष पुराने जागेश्वर मंदिर के लिए प्रसिद्ध है और इसी से इसका यह नाम पड़ा है। वास्तव में यहां चारों ओर मंदिर ही हैं और सभी मंदिर भगवान शिव को समर्पित हैं। यहां पास में ही कुबेर जी का भी एक है। उसके पास ही एक संग्रहालय है। यह एक ऐसा स्थान है जहां ठहरकर आप बस प्रकृति का आनंद ले सकते हैं और यह उत्तराखंड की कुछ गिनी – चुनी ऐसी जगहों में से है जहां अभी भी देवदार शेष हैं।

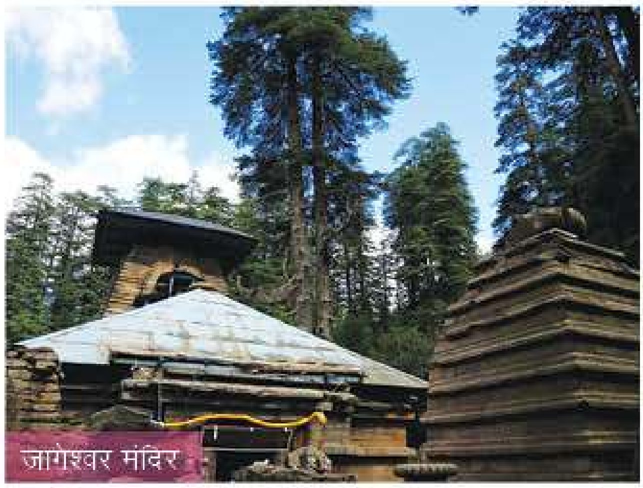
जागेश्वर मंदिर

अगले दिन सुबह पांच बजे निकलना था पर घना कोहरा था जिससे ड्राईवर बहुत धीरे–धीरे बस चला रहा था। आज यात्रा का आखिरी दिन है, दिल्ली से चले इक्कीसवां दिन था और सब मिलाकर पच्चीसवां और अल्मोड़ा होते हुए वापस उसी दुनिया में पहुंचना था। अल्मोड़ा में नाश्ता हुआ और बहुत से लोगों ने यहां की प्रसिद्द बाल मिठाई खरीदी और फिर हम अपने बीस दिन के साथी और आश्रयदाता हिमालय को पीछे छोड़ 11 बजे वापस काठगोदाम पहुंच गए। बस से उतरते एक अलग किस्म का सन्नाटा था शायद किसी को भी आज ज्यादा अच्छा नहीं लग रहा था, हिमालय जैसे वापस बुला रहा था पर अभी हमारे भाग्य में इसका इतना ही साथ था।

यहां खाना खाकर हम दिल्ली के लिए एक बड़ी वॉल्वो बस में रवाना हुए और शाम सात बजे वापस गुजराती समाज सदन पहुंच गए। उतरने से पहले सबने कुछ देर बम – बम भोले के जयकारे लगाए और फिर अन्दर प्रवेश किया, पहुंचते ही हमें यात्रा पूरी करने का सर्टिफिकेट

दिया गया और फिर सब अपना सामान पैक करने में लग गए। कुछ लोगों को आज ही निकलना था और कुछ को कल और कुछ जो दिल्ली और आस – पास वाले थे वह थोड़ी ही देर में निकल गए। प्रियांशु भी गुडगाँव के लिए निकल गया और वैभव शास्त्री जी को लेकर अपने घर कुरुक्षेत्र के लिए निकल गया।

उस रात ले देकर हम 20–22 यात्री ही बचे थे और मैं भी सुबह 11 बजे की ट्रेन पकड़कर लखनऊ रवाना हो गया। इस प्रकार यह अविस्मरणीय यात्रा समाप्त हुई। यह एक जीवन भर याद आने वाली यात्रा बन गई जहां से आकर अगले कई दिनों तक एक अद्भुत शांति की अनुभूति हुई। इस यात्रा को बस एक ही चीज सफल करा सकती है और वो है भगवान पर अटूट विश्वास। यहां मैंने ऐसे कई यात्री देखे जो बहुत फिट थे पर कहीं–कही वह बड़े कष्ट में दिखे और ऐसे भी देखे जो बस प्रभु का नाम जपते बढ़ते चले गए। इसे श्रद्धा और विश्वास ही कहा जा सकता है जो आपको ऐसी जगह भी पहुंचा देता है जहां आपकी फिटनेस भी फेल हो जाती है इसलिए सदा ईश्वर पर विश्वास रखना चाहिए और बाकी उसपर छोड़ देना चाहिए।

बहुत संक्षेप में लिखने का प्रयास करने के बाद भी यह शायद कुछ लम्बा हो गयाहै इसलिए और भी कुछ बहुत रोचक यात्रा प्रसंग मुझे मजबूरन छोड़ने पड़े और इसके लिए मैं अतुल्य भारत के पाठकों से क्षमा प्रार्थी हूँ। ओम नमः शिवाय।

शुभकामनाएं

अक्तूबर से दिसम्बर, 2019 की तिमाही में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी

क्र.सं.	नाम	पद	माह
1.	**श्रीमती नीला लाड**	उप महानिदेशक	अक्तूबर, 2019
2.	**श्रीमती लूसीडोरा थांगखिव**	अवर श्रेणी लिपिक, गुवाहाटी	नवम्बर, 2019
3.	**श्री पी.के. सुकुमारन**	अधिक्षक, मुम्बई	नवम्बर, 2019
4.	**श्री कल्याण सेन गुप्ता**	सहायक महानिदेशक	दिसम्बर, 2019
5.	**श्री प्रदीप कुमार कोहली**	सहायक	दिसम्बर, 2019

पर्यटन मंत्रालय से सेवा निवृत्त हुए सभी पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं सुखद जीवन की कामना करते हैं।

–अतुल्य भारत

एक भारत श्रेष्ट भारत

— डॉ. विश्वरंजन

विविध भाषाई, सांस्कृतिक एवं धार्मिक समावेश के कारण भारत को एक अनोखा राष्ट्र कहा जाता है। इसकी एकता, अखंडता, समृद्धि और संस्कारों की मिसाल पूरे विश्व में अनेक तरीकों से दी जाती है। भविष्य में अखंड भारत की भावना को इसी प्रकार बरकरार रखने हेतु एक महत्वपूर्ण भूमिका कार्यान्वित करने वाले अभियान का नाम है, एक भारत श्रेष्ठ भारत। एक भारत श्रेष्ठ भारत अभियान के तहत सरकार का उद्देश्य राष्ट्रीय पहचान के साथ विभिन्न राज्यों के लोगो में आपसी भाईचारा बढ़ाना भी है।

दो राज्यों के बीच आपसी समझ की भावना को बढ़ावा देने के लिए "एक भारत श्रेष्ट भारत" जैसे योजना तैयार की गई है। राष्ट्रवाद की एक लंबी लौ के रूप में भारतवासी सामने आ रहे है जिसे भविष्य में सही दिशा की ओर योजनाबद्ध रूप से प्रेरित करने की आवश्यकता है।

भारत के लौह पुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती मनाने के लिए 31 अक्टूबर, 2015 को आयोजित राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच एक निरंतर और संरचित सांस्कृतिक संबंधों की परिकल्पना करते हुए कहा था कि सांस्कृतिक विविधता एक ऐसी खुशी होती है जिसे विभिन्न प्रदेशों के लोगों के बीच पारस्परिकता के माध्यम से मनाया जाना चाहिए ताकि देश भर में आपसी समझ और एकता की भावना प्रतिध्वनित हो। माननीय प्रधान मंत्री जी ने लोगों से आग्रह किया कि देश के प्रत्येक राज्य और संघशासित प्रदेश को एक वर्ष के लिए किसी अन्य राज्य या संघशासित प्रदेश के साथ जोड़ा जाएगा, जिसके दौरान वे एक दूसरे की भाषा, साहित्य, भोजन, त्योहारों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पर्यटन आदि के क्षेत्रों में एक दूसरे के साथ रचनात्मक रूप से जुड़ेंगे।

भारत सरकार की कार्यक्रम "एक भारत श्रेष्ट भारत" हेतु अनेक मंत्रालयों ने सार्थक पहल की है। जिसमें विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम/योजनाएं निर्धारित की गई हैं जिन्हें नीचे तालिका में दर्शाया गया है–

*डॉ. विश्वरंजन
कंसलटेंट, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग
जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली

जून 2020 तक राज्यों और संघशासित प्रदेशों के बीच एक भारत श्रेष्ट भारत कार्यक्रम के तहत निम्नानुसार युग्म यानि जोड़े बनाए गए हैं :–

जम्मू एवं कश्मीर और लद्दाखः तमिलनाडु
पंजाबः आंध्र प्रदेश
हिमाचल प्रदेशः केरल
उत्तराखंडः कर्नाटक
हरियाणाः तेलंगाना
राजस्थानः असम
गुजरातः छत्तीसगढ़
महाराष्ट्रः ओडिशा
गोवाः झारखंड
दिल्लीः सिक्किम
मध्य प्रदेशः मणिपुर और नगालैंड
उत्तर प्रदेशः अरुणाचल प्रदेश और मेघालय
बिहारः त्रिपुरा और मिजोरम
चंडीगढ़ः दादर एवं नगर हवेली
पुडुचेरीः दमन एवं दीव
लक्षद्वीपः अंडमान एवं निकोबार

एक भारत श्रेष्ठ भारत के उद्देश्य इस प्रकार हैं–

देश की विविधता में एकता और देश के लोगों के बीच पारंपरिक रूप से विद्यमान भावनात्मक बंधन के ताने–बाने को मजबूत करते हुए राज्यों के बीच एक वर्ष की योजना के माध्यम से सभी भारतीय राज्यों और संघशासित प्रदेशों के बीच संरचित सम्बन्धों के माध्यम से राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देना।

देशवासियों को भारत की विविधता, समृद्ध विरासत, संस्कृति, रीति–रिवाजों एवं परंपराओं के बारे में जानने और उनकी सराहना करने में सक्षम बनाते हुए एक दूसरे की सामान्य पहचान की भावना को बढ़ावा देना। इसके लिए एक लंबे समय तक काम करके एक ऐसा वातावरण बनाना जो अनुभवों के साथ दूसरे राज्यों की परम्पराओं और सर्वोत्तम प्रथाओं को सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है।

आज तकनीक और संचार ने, संपर्क के मामले, समय और में दूरियों को कम किया है। इसी को ध्यान में रखते हुए विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान स्थापित करना, मानव एकजुटता और राष्ट्र–निर्माण के लिए एक सामान्य दृष्टिकोण के रूप में महत्वपूर्ण कार्य है। पारस्परिक समझ और विश्वास भारत की ताकत की नींव है और सभी नागरिकों को भारत के हर कोने की सांस्कृतिक क्षमता को एकीकृत रूप से महसूस करना चाहिए।

मुख्य बातें :–

भारत को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में देखा जाता हैं जिसमें विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में अनेक सांस्कृतिक इकाइयां एक–दूसरे के साथ मेल खाती हैं। उनके विविध व्यंजन, संगीत, नृत्य, रंगमंच और फिल्में, हस्तशिल्प खेल, साहित्य, त्योहार, चित्रकला, मूर्तिकला आदि एक शानदार अभिव्यक्ति है जो लोगों में सौहार्द की भावना को आत्मसात करने में सक्षम बनाती है।

"एक भारत श्रेष्ठ भारत" के तहत कुछ प्रमुख संकेतिक कार्यकलापों को ध्यान में रखकर, उपयुक्त रूप से संचालन हेतु एक वैकल्पिक सूची राज्यों को सूचित की गई हैं, जिसका विवरण इस प्रकार है–

1. युग्मित या साझेदार राज्यों की भाषा में पुरस्कार प्राप्त कम से कम पांच पुस्तकों का अनुवाद,
2. युग्म राज्यों की भाषा में पुरस्कृत कम से कम पांच गानों की दूसरे राज्य की भाषा में डबिंग एवं प्रसारण,
3. दोनों राज्यों की भाषाओं में समान अर्थ वाली कहावतों की पहचान और उनके उपयोग का प्रसार,
4. युग्मित राज्यों में सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के माध्यम से पहचाने गए कुछ मंडलों के बीच

एक भारत श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम का उद्देश्य भारत में विभिन्न राज्यों तथा संघ शासित प्रदेशों में रहने वाले विविध संस्कृतियों के लोगों के बीच सक्रियता को प्रोत्साहित कर उनके बीच अधिक से अधिक पारस्परिक समझ को बढ़ावा देना है। कार्यक्रम के अनुसार, प्रत्येक वर्ष, प्रत्येक राज्य/संघ शासित प्रदेश को लोगों के बीच पारस्परिक संपर्क के लिए किसी अन्य राज्य/संघ शासित प्रदेश के साथ जोड़ा जाएगा। इस आदान–प्रदान के माध्यम से यह परिकल्पना की गई है कि विभिन्न राज्यों की भाषा, संस्कृति, परंपराओं और प्रथाओं के ज्ञान से एक दूसरे के बीच एक अधिकाधिक समझ बढ़े और भावनात्मक बंधन पैदा हो, जिससे भारत की एकता और अखंडता मजबूत होगी। राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को संगीत, नाटक के क्षेत्र को कवर करने वाले युग्मित राज्यों/संघ शासित प्रदेशों के साथ पारस्परिक जुड़ाव की एक विस्तृत श्रृंखला में प्रवेश करके अपने सांस्कृतिक, शैक्षणिक और आर्थिक संबंधों को बढ़ाने के लिए एक मिशन पर शुरू करना है। इस अभियान के लिए खानपान, भाषा, इतिहास, पर्यटन और लोगों के बीच आदान प्रदान के अन्य रूप में किए जाने वाली गतिविधियों की एक सांकेतिक सूची तैयार की गई है। यह सूची राज्य सरकारों/संघ शासित प्रशासनों और प्रमुख केंद्रीय मंत्रालयों को प्रसारित की गई है। वे अपने स्तर पर उपयुक्त पैटर्न के अनुसार सुझाई गई सूची के आधार पर कार्यक्रमों का चयन और कार्यान्वयन कर सकते हैं।

विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं के घटकों के बीच बढ़ते अंतर–सम्पर्क के बारे में बड़े पैमाने पर लोगों को प्रभावित करने के लिए और राष्ट्र निर्माण की भावना जागृत करने के निमित्त यह एक बहुत महत्वपूर्ण योजना है। संकर संस्कृति और परस्पर सांस्कृतिक प्रभाव के माध्यम से लोगों में अपने राष्ट्र के लिए एक जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न होती है।

राज्यों की मदद से सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम,

5. साहित्योत्सव जैसे कार्यक्रमों में लेखकों तथा कवियों आदि की भागीदारी,

6. युग्मित राज्यों की पाक प्रथाओं के अल्पावधि प्रशिक्षणों के अवसर के साथ 'फूड फेस्टिवल्स' का आयोजन,

7. स्कूलों और कालेजों के छात्रों के शैक्षिक भ्रमण से उस राज्य की मुख्य विशेषताओं को प्रकटीकरण,

8. युग्मित राज्यों के पर्यटकों को होम स्टे के लिए सुविधा,

9. सहभागी राज्यों के बीच पर्यटकों के लिए राज्य दर्शन कार्यक्रम,

10. युग्मित राज्यों के बीच अन्य राज्य के टूर ऑपरेटर्स हेतु पर्यटन परिचय,

11. सहभागी राज्यों की भाषाओं में स्कूलों के छात्रों को अन्य राज्य की भाषा का अक्षरज्ञान, 100 कहावतें, फिल्मी गीत, कविताएं आदि का ज्ञान,

12. युग्मित राज्यों की दो भाषाओं में प्रशासनिक शपथ/प्रतिज्ञाओं को प्रोत्साहन,

13. युग्मित राज्यों के स्कूलों की पाठ्यक्रम पुस्तकों में एक दूसरे की भाषा में कुछ पृष्ठ शामिल करना तथा छात्रों के बीच सहभागी राज्य की भाषा में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन।

14. सहभागी राज्य की भाषा सिखाने के लिए स्कूल/ कॉलेजों में वैकल्पिक कक्षाओं का आयोजन,

15. सहभागी राज्य के शिक्षण संस्थानों में अन्य राज्य के नाटक का आयोजन।

16. किसानों के बीच पारंपरिक कृषि और मौसम के पूर्वानुमान के बारे में जानकारी का आदान–प्रदान,

17. गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) के अवसर पर सहभागी राज्यों की संयुक्त झांकी का आयोजन,

18. युग्मित राज्य के औपचारिक कार्यक्रमों में दूसरे राज्य से परेड की भागीदारी,

19. राज्यों के क्षेत्रीय टीवी/रेडियो चौनलों पर किसी एक राज्य के कार्यक्रमों का प्रसारण,

20. साझेदार राज्य की भाषा की फिल्मों का, उप–टाइटल के साथ दूसरे राज्य में फिल्म समारोह का आयोजन,

21. एक राज्य के छात्रों और लोगों द्वारा भागीदार राज्य की पोशाक पहनना और फैशन शो का आयोजन,

22. भागीदार राज्य की भाषा में टीवी/रेडियो/ MyGov पोर्टल पर विभिन्न भाषाओं में राष्ट्रीय तथा राज्य विशिष्ट प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन।

23. युग्मित राज्य के लोगों के लिए फोटोग्राफी प्रतियोगिता का आयोजन तथा राज्यों के विभिन्न स्थानों और वस्तुओं पर अपने पोर्टफोलियो का निर्माण,

24. एक भारत श्रेष्ठ भारत पर ब्लॉग प्रतियोगिताओं का आयोजन,

26. सहभागी राज्यों के बीच खेल प्रतियोगिताओं सायक्लिंग अभियानों आदि का आयोजन,

27. सहभागी राज्य में दूसरे राज्य के NCC, NSS शिविरों का आयोजन।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा एक भारत श्रेष्ट भारत के अंतर्गत किए गए कार्यकलापः

1. स्कूलों में स्वच्छता जागरूकता गतिविधियों के लिए कार्य योजना,
2. ओडिशा की पर्यटन क्षमता का प्रदर्शन,
3. शिल्पग्राम, गुवाहाटी में बाल उत्सव शिशु फेस्टिवल,
4. नवम्बर, 2019 के दौरान इम्फाल, मणिपुर में एक भारत श्रेष्ट भारत के तहत इंटरनेशनल ट्रैवल मार्ट (ITM) का आयोजन,
5. रोड शो'ज,
6. पंजाबी पारंपरिक दीवाली,
7. अंतर्राष्ट्रीय यात्रा मार्ट के दौरान एक भारत श्रेष्ट भारत का प्रसार,
8. अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट,

चूंकि दिल्ली के साथ सिक्किम को युग्मित किया गया है इसलिए दिल्ली में दिल्ली और सिक्किम के बीच हुई निम्नलिखित गतिविधियां आयोजित की गई:

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार ने सिक्किम राज्य पर विशेष ध्यान देने के साथ सांस्कृतिक, पारंपरिक, भौगोलिक और ज्ञान–निर्माण गतिविधियों को कवर करते हुए एक भारत श्रेष्ठ भारत पर कई कार्यकलापों का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों में सिक्किम पर बहस और चर्चा शामिल थी। सभी गतिविधियां दिसंबर 2017 में दिल्ली स्थित विभिन्न स्कूलों के माध्यम से आयोजित की गई। छात्रों को सिक्किम में की जा रही जैविक खेती, राज्य में पाए जाने वाले रेड पांडा, नेपाल के साथ इसके संबंध, सिक्किम के भोजन और भाषाओं के बारे में, राज्य के बाखू, होन्जू परिधानों, राज्य के अलग–अलग त्योहारों, जैसे क लॉसोन्ग, लोसार, सागा डावा आदि और पारंपरिक खाद्य व्यंजनों के बारे में भी जानकारियां दी गईं। भाषण और नृत्य प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। छात्रों के बीच सिक्किम पर चित्रकला प्रतियोगिताएं भी हुईं। उन्हें यह भी बताया गया कि सिक्किम को केंद्र सरकार के स्वच्छ भारत अभियान के तहत स्वछता पर पहले राज्य का पुरस्कार प्रदान किया गया है।

सम्पर्क: ईमेल– vishwranjan@yahoo-com
मो. 9852583535

व्यंग्य-कथा

दुमदार जी की दुम

–सुशांत सुप्रिय

आज मैं आपको एक विश्व–प्रसिद्ध दुम की कहानी सुनाने जा रहा हूँ। यह कहानी किसी ऐरे–गैरे व्यक्ति की नहीं है। यह कहानी एक दुमदार जी की है।

दुमदार जी का असली नाम कोई नहीं जानता। लेकिन चमचागिरी, चापलूसी, चाटुकारिता और मक्खन लगाने में उनका कोई सानी नहीं था। हैरानी की बात यह है कि उनके पिता बेहद ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ स्कूल–मास्टर थे और दुम हिलाने को पाप समझते थे। इसलिए दुम हिलाने की कला विरासत में नहीं मिली थी। यह कला उनकी 'जीन्स' में भी नहीं थी। लेकिन उन्होंने इस अड़चन को अपनी सफलता की राह में रुकावट नहीं बनने दिया। अपने परिवेश और समाज से निरंतर शिक्षा ग्रहण करते हुए अंत में वे इतने बड़े दुमबाज बन गए कि लोगों ने उनका नाम ही दुमदार जी रख दिया। इस लिहाज से दुमबाजी में वे एक 'सेल्फ–मेड' व्यक्ति हो गए थे।

दुमदार जी प्रागैतिहासिक काल में पूर्वजों के पास पाई जाने वाली विलुप्त पूंछ हिलाने में माहिर थे। दुम हिलाने को फूहड़ सड़क–छापपने के टुच्चे स्तर से उठा कर उसे ललित–कला के स्तर तक पहुंचाने में श्री दुमदार जी के अद्भुत योगदान को देखते हुए एक अखिल भारतीय दुमदार महासभा गठित हो गई और उसके पहले अधिवेशन में 'दुनिया के दुमबाजो, एक हो जाओ' और 'दुम नहीं तो दम नहीं' जैसे नारे लगे जो बाद में उक्तियां तथा लोकप्रिय उद्धरण बन गए।

लेकिन यह तो बाद की बात है। इसकी शुरुआत कैसे हुई वह भी किसी चमत्कार से कम नहीं था। एक रात बेचारे दुमदार जी सोने गए। सुबह उठे तो देखा कि उनकी एक दुम निकल आई है। यह खबर हिलती पूँछ–सी फैली। इसे कुदरत का करिश्मा और भगवान का वरदान माना गया। इस महान दुम के दर्शन के लिए अपार जन–सैलाब उमड़ पड़ा। लोगों को आपस में यह कहते हुए सुना गया – "जरूर दुमदार जी ने पूर्व–जन्म में दुमबाजी के अच्छे कर्म किए होंगे। इसीलिए भगवान ने उन्हें यह फल दिया है।" इस तरह देखते–ही–देखते दुमदार जी जग–प्रसिद्ध हो गए। लोग उनकी दुम देखने आते और कुछ चढ़ावा भी चढ़ाने लगे। शोहरत के साथ और धन भी आने लगा। दुमदार जी के दिन फिरने लगे थे। इसी दौरान एक दुमबाज लेखक सह प्रकाशक ने 'सफलतापूर्वक दुम कैसे हिलाएं' शीर्षक से एक पुस्तक छाप दी। उनकी पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई कि उसे 'नेशनल बेस्टसेलर' माना गया। इस पुस्तक के कई संस्करण निकले और दर्जनों भाषाओं में अनूदित हो कर इसकी करोड़ों प्रतियां बिक गईं।

इतिहास में कहीं ऐसा कोई उल्लेख नहीं मिलता जब किसी आदमी की दुम निकल आई हो, लिहाजा अरबों में एक होने की वजह से दुमदार जी राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति–प्राप्त हो गए। उनके कुछ चमचों ने

**लोकसभा में अधिकारी*

उनकी महान दुम को 'राष्ट्रीय धरोहर' की संज्ञा दे डाली। उन्हें अनेक सम्मानों से अलंकृत किया गया। उनके कुछ शिष्यों ने सरकार से दुमदार जी को 'दुम–विभूषण' की उपाधि देने की मांग कर डाली। भला विपक्ष के नेता क्यों पीछे रहते? उन्होंने भी अपनी पार्टी के राष्ट्रीय अधिवेशन में दुमदार जी को 'दुम केसरी' की उपाधि से नवाज दिया। दूसरे दल ने उन्हें 'दुम–रत्न' से अलंकृत कर दिया।

दुमदार जी की दुम को दुनिया का आठवां आश्चर्य माना गया। दुमदार जी की हिलती दुम की ख्याति दिन–दोगुनी, रात–चौगुनी बढ़ने लगी। जनता के दबाव में सरकारी खर्चे पर करोड़ों रुपयों में उनकी दुम का बीमा कराया गया। उनकी दुम की सुरक्षा के लिए 'सुरक्षा गार्ड' के जांबाज कमांडो नियुक्त किए गए। यूनिसेफ ने उन्हें अपना 'गुडविल अम्बैसेडर' बना लिया। अब यह अलग बात है कि कुछ लोग जरूर दबी जुबान से दुमदार जी की दुम को 'ईश्वर का दंड' या 'दैवीय प्रकोप' बताते थे। पर ऐसे लोग केवल मुट्ठी भर ही थे जिन्हें विदेशी एजेंट या राष्ट्र–द्रोही कहा गया था।

एक दिन अचानक दुमदार जी की दुम को चोट लग गई, उनके खास लोग स्तब्ध और शोकाकुल हुए और इसे दुमदार जी के विरोधियों का षड्यंत्र बताने लगे। मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों तथा गिरिजा–घरों में उनकी दुम की सलामती के लिए विशेष प्रार्थना–सभाएं आयोजित की गईं, जगह–जगह हवन और यज्ञ किए गए। फेसबुक और ट्विटर पर लोगों ने इस के बारे में अपनी चिंताएं व्यक्त की। दुमदार जी की दुम की सलामती का समाचार आते ही जनता में हर्ष की लहर दौड़ गई। जगह–जगह मिठाइयां बांटी गईं और पटाखे चलाए गए।

'लिम्का–बुक' वालों की रेकार्ड–बुक में दुमदार जी की महान दुम का उल्लेख होते ही,'गिनेस–बुक' वालों ने भी अपनी रेकार्ड–बुक में भी दुमदार जी का नाम दर्ज कर डाला। देखते–ही–देखते दुमदार जी पूरे राष्ट्र के लिए आदर्श, अनुकरणीय, श्रद्धेय और प्रतिमान बन गए। पूरा राष्ट्र प्रागैतिहासिक काल में पूर्वजों के पास पाई जाने वाली विलुप्त पूंछें हिलाने लगा,जो दुम–हीन थे, वह मिसफिट कर दिए गए।

समाज में दुम हिलाना भी सफलता की कुंजी है। दुम हिलाना हमारा राष्ट्रीय खेल बनना चाहिए। यदि दुम हिलाने की प्रतियोगिता को ओलम्पिक खेलों में शामिल कर लिया जाए तो इस प्रतियोगिता के स्वर्ण, रजत और कांस्य सारे पदक हम जीत सकते हैं। वैसे भी उद्योग, व्यापार, शिक्षा–जगत और खेल–कूद – हर जगह दुमबाजी का बोलबाला है। जो व्यक्ति अपनी विलुप्त पूंछ हिलाना नहीं जानता, वह सफलता की दौड़ में सबसे पिछड़ जाता है। यह दुम हिलाने वाले चापलूसों और मक्खनबाजों का जमाना था। कोई बॉस की कृपा–दृष्टि पाने के लिए दुम हिलाता है, तो कोई पदोन्नति पाने के लिए दुम हिला रहा है। कोई सहयोगियों की जड़ काटने के लिए तो कोई सत्ता के शीर्ष पर बैठने के लिए दुम हिला रहा है। किसी भी तरह सफल होने और दूसरों से आगे बढ़ने के लिए लोग गधे को बाप और बाप को गधा और बताने से नहीं चूकते। जरा ध्यान से देखिए...हिलती हुई दुमें ऑफिस और व्यापार चला रही हैं, देश की सरकार चला रही हैं। लोग इतना ज्यादा दुम हिला रहे हैं कि भरी जवानी में ही शरीर से हिलते जा रहे हैं।

मेरा भी एक दुमदार जी से पाला पड़ चुका है। वह मेरे ऑफिस में ही काम करते थे। अक्सर मेरे ही आगे–पीछे भी दुम हिलाते रहते थे क्योंकि उनके कई काम मेरे पास फँसे पड़े थे। बॉस के साथ मेरे सम्बन्ध अच्छे थे। इस कारण से भी वह मेरी चापलूसी में जुटे रहते थे। पर समय एक जैसा नहीं रहता। बॉस का स्थानांतरण हुआ तो नए बॉस आ गए। दुमदार जी के सारे काम निकल गए, फिर तो मैं कौन और तू कौन ! दुमदार जी ने मेरे कमरे की ओर झांकना तो दूर, नमस्ते करना तक बंद कर दिया। उनके इस व्यवहार से मेरे दिल को ठेस पहुंची। मैंने एक साथी से इसका जिक्र किया तो वह हँस कर बोले, ''आप भी बिल्कुल दुमहीन आदमी हैं ! अरे, दुमदार ने आपके साथ जो कुछ किया, इसी को तो दुमबाजी कहते हैं।''

हां, तो मैं दुमदार जी के बारे में बता रहा था। लगभग सारा ही देश दुमदार जी की हिलती हुई महान दुम पर फिदा हो चला था। उनके चमचे और चापलूस इतराए नहीं समाते थे। एक दिन उनके दुमदारों ने ''दुमदार जी'' के सम्मान में विश्व का सबसे विशाल मंदिर बनाने का प्रस्ताव रखा जिसमें दुमदार जी की एक दुम–कद प्रतिमा स्थापित की जाए।

शहर के एक पार्क पर कब्जा किया गया और वहां रोज सुबह–शाम पूजा–अर्चना, आरती होने लगी। देखते–ही–देखते उस मंदिर में लाखों रुपए का चढ़ावा चढ़ने लगा। दुमदार जी के शिष्यों ने उनकी महान दुम के सम्मान में 'दुम चालीसा' और 'दुम पचासा' लिख डाली। देश के कुछ कवि, कहानीकार, गीतकार और चित्रकार दुमदार जी की महान दुम के महिमामंडन की नदी में स्नान करने लगे : जैसे कि ''दुम ही हो माता, दुम ही पिता हो, / दुम ही हो बंधु, दुम ही सखा हो।'' इस तरह पूरे राष्ट्र का माहौल दुम–मय हो गया। हर व्यक्ति दुम–छल्ला बन कर घूमने लगा।

ऐसे ही उनके कुछ चाटुकारों ने स्कूल–कालेजों के पाठ्य–क्रम में उनकी महान दुम को एक विषय के रूप में पढ़ाने की मांग कर दी। परीक्षाओं में अच्छे अंक पाने के नाम पर बाजार में सामान्य ज्ञान पर कुछ टुच्ची सी पत्रिकाएं भी आ पहुंची जिनमें उनकी महान दुम के बारे में प्रश्न तैयार थे जैसे :

– बताओ, दुमदार जी ने पहली बार दुम हिलाना कब सीखा?
– दुम हिलाने के क्या लाभ हैं ? उदाहरण सहित बताओ।
– 'दुम चालीसा' और 'दुम पचासा' के लेखकों के नाम बताओ ?
– दुमदार जी एक 'सेल्फ–मेड' व्यक्ति हैं। इस पर टिप्पणी लिखो।
– दुमदार जी ने दुम हिलाने की कला को फूहड़ सड़क–छापपने के टुच्चे स्तर से उठा कर उसे ललित–कला के स्तर पर पहुँचाया। इस विषय पर एक लेख लिखो, वगैरह – वगैरह।

दुमदार जी की महान दुम के सम्मान में एक निजी विश्वविद्यालय ने अपने यहां दुम–पीठ की स्थापना भी कर डाली, जहां छात्रों को इस विषय पर एम.फिल.और पी.एच.डी. की डिग्रियां देने के प्रस्तावों पर विचार होने लगा। कई विद्वानों ने इस विषय पर डी.लिट्. करने के लिए भी आवेदन जमा कर दिए। उधर छात्र–छात्राओं को बी.ए. और एम.ए. के स्तर पर दुमदार जी की महान दुम को एक विषय के रूप में पढ़ने पर छात्रवृत्तियां देने की मांग उठने लगी। सरकार से दुम हिलाने के अधिकार की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए

'राष्ट्रीय दुम आयोग' का गठन करने की मांग भी आने लगी।

कुछेक फिल्म निर्माता–निर्देशकों ने अपनी–अपनी भाषाओं में दुमबाजी पर कई फिल्में बनाने की घोषणा कर दी। जनता में 'दुमगिरी' को लोकप्रिय करने के लिए इन फिल्मों में दुमबाजी के नए–नए हथकंडे जन–जन तक पहुंचाने के लिए अलग अलग प्रकार की कहानियां लिखने वाले पैदा हो गए ताकि फिल्मों के द्वारा अभूतपूर्व योगदान दर्ज करा सकें। इन में से कुछेक फिल्म वालों ने तो दुमदार जी को ही बतौर नायक चुन लिया।

बाजार में दुमदार जी के दुम–मय व्यक्तित्व और उनकी महान दुम का महिमामंडन करने वाली पुस्तकों और सी.डी. की बाढ़ सी आ गई। दुमों के सम्मान में आरती और भजन गाए जाने लगे।

दुमदार जी की हिलती हुई महान दुम से प्रेरित हो कर एक और वैज्ञानिक गहन शोध और अनुसंधान में लग गए कि मनुष्यों में दुम को दोबारा कैसे उगाया जा सकता है।

हर सभ्यता और संस्कृति किसी–न–किसी समय अपने उत्कर्ष पर होती है। इस समय दुमबाजी की सभ्यता भी अपने चरमोत्कर्ष है। पूरे राष्ट्र का आलम यह हो गया है कि लोगों को जिनसे अपना काम निकालना होता, उनके पजामों में नाड़ों की तरह प्रवेश कर जाते। लोग अपना काम निकालने के लिए 'डोर–मैट' बन जाते, दूसरों के पैरों की चप्पल बन जाते। काम निकलते ही ऐसे दुमदार लोग दूसरों को ठेंगा दिखा देते। दुमदारी से प्रेरणा ले कर अब दुम हिलाना लघु और कुटीर उद्योग बनता जा रहा था। देश में जिधर देखो लगभग दुम–क्रान्ति सी आ रही है। इंसानों द्वारा अपनी अदृश्य दुम को हिलाने के नए–नए तरीके ईजाद किए जाते है। अब यह बात साबित हो चुकी थी कि दुम हिलाने में देशवासी पूरी दुनिया में सबसे आगे है। यह देश के लिए गौरव की बात है।

इस दुम–मय माहौल में कुछ खास चापलूसों ने सरकार से मांग कर डाली कि दुम हिलाने को लोकप्रिय और सरल बनाने में श्री दुमदार जी के महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए उन्हें नोबेल पुरस्कार प्रदान करने के लिए नोबेल पुरस्कार देने वाली समिति से की सिफारिश की जाए। उनका कहना था कि इससे देश का ही नहीं, बल्कि स्वयं नोबेल पुरस्कार का भी सम्मान बढ़ेगा।

एक बार शहर के सबसे प्रतिष्ठित पब्लिक स्कूल ने दुमदार जी को अपने वार्षिक समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया। वहां उपस्थित छात्र–छात्राएं, अध्यापकगण सभी दुमदार जी की महान दुम को हसरत भरी निगाहों से देख रहे थे। इस अवसर पर दुमदार जी के सम्मान में संगीत की टीचर ने छात्र–छात्राओं से एक गीत भी गवाया।

"हम को दुम की शक्ति देना, दुम विजय करें ,
दूसरों की दुम से पहले, अपनी दुम की जय करें।"

दुमदार जी ने भी एक जोरदार भाषण दिया : "प्यारे बच्चों, दुमबाजी की राह बेहद कठिन है। लेकिन यदि आप के भीतर चमचागिरी, चापलूसी और चाटुकारिता के बीज हैं तो कोई आपको एक दुमबाज बनने से कोई नहीं रोक सकता। आप मेरा उदाहरण लीजिए। मेरे पिता सीधे–सादे

ईमानदार स्कूल–मास्टर थे। उनको 'आउटडेटेड आइडियलिज़्म' के कीड़े ने काट रखा था। इसलिए वह किसी के सामने पूंछ हिलाने को पाप समझते थे। मगर मैंने इतनी विकट परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं हारी। पिता के बेकार मूल्यों के विरुद्ध जा कर मैंने दुमबाजी का मार्ग चुना। हालांकि मेरे पिता मुझसे बहुत नाराज भी थे। लेकिन मेरे भीतर दुमबाज बनने की ललक थी। मैं पूरी निष्ठा से इस काम में लगा रहा, मैंने अपना मार्ग स्वयं बनाया। दिन–रात दुम हिला–हिला कर और 'जुगाड़' का सहारा ले–ले कर मैं आगे बढ़ा। आप भी मेरी तरह अवसरवादी बनिए। दुम हिलाइए और नाम कमाइये।''

बच्चे दुमदार जी की महान दुम से अभिभूत थे। यहां तक सब ठीक चल रहा था कि यकायक एक अनर्थ हो गया। जैसे ही दुमदार जी अपना भाषण दे कर स्कूल के सभागार से बाहर निकले कि अचानक यह दुर्घटना हो गई। पलक झपकते ही यह कांड हो गया। उनके कुछ चमचों ने झटपट मीडिया वालों के सामने आकर इस कृत्य के लिए दुमदार जी के विरोधियों को जिम्मेदार ठहरा दिया और कहने लगे कि दुमदार जी के विरोधियों ने दसवीं कक्षा के कुछ छात्रों को रुपए दे कर उनसे यह काम करवाया है। वहीं खड़े दुमदार जी के विरोधी इस बात का खंडन करने लगे कि उनका इस घटना से कुछ भी लेना–देना नहीं है। अब सच्चाई चाहे जो भी रही हो, जो अनर्थ होना था, हो गया।

असल में हुआ यह कि समारोह की समाप्ति पर जैसे ही दुमदार जी सभागार से बाहर निकले, दसवीं कक्षा के कुछ छात्रों ने उनकी दुम पकड़ कर उसे जोर से खींच लिया और महान दुमदार जी के शरीर से वह दुम निकल कर उन लड़कों के हाथों में आ गई। सब सन्न रह गए। हे राम ! यह क्या हो गया ? और तब जा कर यह राज खुला कि पिछले दो साल से दुमदार जी एक विशेष प्रकार की रबड़ की नकली दुम लगाए घूम रहे थे और पूरे देश – दुनिया को ठग रहे थे। फिर क्या था ! पूरे देश में कोहराम मच गया। सदमे की अवस्था में कई लोग आत्म–दाह करने दौड़े, कुछ जगहों पर आगजनी और तोड़–फोड़ होने लगी। तत्काल ही प्रशासन हरकत में आया और स्थिति को सम्भाला गया। कुछ लोग कहने लगे कि यह तो होना ही था। जब भी कोई बड़ी दुम गिरती है, धरती हिलती है। दुमदार जी के विरोधियों ने कहा–– ''हमें तो पहले ही पता था कि दुमदार जी के शरीर पर दुम निकल आने का यह पूरा प्रकरण एक बहुत बड़ा 'फ्रॉड' है। इस पूरे शोर–शराबे में उस व्यक्ति की बात अनसुनी कर दी गई जिसने एक टी.वी. चौनल को दिए गए अपने इंटरव्यू में कहा था–– ''दुम तो सभी चाटुकारों, चापलूसों और चमचों की होती है, पर वह अदृश्य रहती है, दिखाई नहीं देती। दुमदार जी के शरीर पर दुम का साक्षात निकलना तो उस अदृश्य दुम का प्रकटीकरण मात्र था।''

सम्पर्कः ई–मेलः **sushant1986@gmail.com**

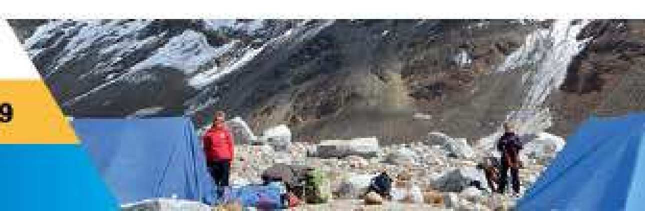

दो कविताएं

तितली

– सत्येन्द्र प्रजापति

उँगलियों पर तितली बैठी है कभी?
क्या उसके पंखों को तुम्हारी कोशिकाओं ने स्पर्श किया है ?
उसकी कोमलता की मीमांसा की है तुमने ?
या उससे पूछा कि प्रकृति के हर वर्ण में तुम इतनी सुन्दर क्यूँ हो?
नही ....!

तुमने हमेशा उसे पकड़ने में ही अपनी ऊर्जा गंवायी है
बचपन से लेकर अब तक
जब हाथ पहुँच नही सका,
तो जाल से फांस लिया

आखिर तुमने उसे गींज कर ही दम लिया
जब तक उसके पंख सौन्दर्यविहीन न हो गये
उस समय;

तुम्हारा मस्तिष्क शून्य में था
और संवेदनाएं अम्ल हो गयी थी
बस इसीलिए

तुम स्त्री को नही समझ पाए
या हम सबय
शायद कभी समझ भी नही सकेंगे
उस दिन तक,
जब हमारा समाज
तितली पकड़ना एक अमानवीय घटना नही बताए,
या जब तक वो खुद डंक मार कर नहीं दिखाए ।

किसान का हल

– सुशांत सुप्रिय

उसे देखकर
मेरा दिल पसीज जाता है
कई घंटे
मिट्टी और कंकड़–पत्थर से
जूझने के बाद
इस समय वह हाँफता हुआ
जमीन पर वैसे ही पस्त पड़ा है
जैसे दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद
शाम को निढाल हो कर पसर जाते हैं
कामगार और मजदूर
मैं उसे
प्यार से देखता हूँ
और अचानक वह निस्तेज लोहा
मुझे लगने लगता है
किसी खिले हुए सुंदर फूल–सा
मुलायम और मासूम
उसके भीतर से झाँकने लगती हैं
पके हुए फसलों की बालियाँ
और उसके प्रति मेरा स्नेह
और भी बढ़ जाता है

मेहनत की धूल–मिट्टी से सनी हुई
उसकी धारदार देह
मुझे जीवन देती है
लेकिन उसकी पीड़ा
मुझे दोफाड़ कर देती है

उसे देखकर ही मैंने जाना
कभी–कभी ऐसा भी होता है
लोहा भी रोता है

पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियां एवं समाचार

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती को समर्पित

'पर्यटन पर्व 2019'

पर्यटन मंत्रालय द्वारा 2 से 13 अक्टूबर, 2019 के दौरान देश भर में 'पर्यटन पर्व 2019' का आयोजन किया गया था। नई दिल्ली में रफी मार्ग और जनपथ के बीच राजपथ लॉन पर 2 से 6 अक्टूबर, 2019 तक ढोल–नगाड़ों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ धूमधाम से आयोजित किया गया।

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन तथा सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस और इस्पात मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान तथा पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), श्री प्रह्लाद सिंह पटेल ने 02 अक्टूबर 2019 को पयर्टन पर्व का उद्घाटन किया। इस अवसर पर, सचिव (पर्यटन) श्री योगेन्द्र त्रिपाठी और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में सचिव श्री अमित खरे तथा अनेक वरिष्ठ अधिकारीगण भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा कि भारत विविधताओं से भरा देश है और इसी की बदौलत भारत शेष विश्व से अलग एवं अनूठा नजर आता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में पर्यटन क्षेत्र ने पिछले पांच वर्षों के दौरान उल्लेखनीय प्रगति की है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की अपील के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को वर्ष 2022 तक भारत के 15 स्थलों का भ्रमण करना चाहिए।

श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे देश में पर्यटन की दृष्टि से हजारों स्थान हैं जो लगभग हर जिले में फैले हुए हैं। उन्होंने देशवासियों एवं विदेशी पर्यटकों से ग्रामीण इलाकों में भी जाने और पर्यटकों की कम आवाजाही वाले ऐतिहासिक, सांस्कृतिक या धार्मिक महत्व के स्थानों या प्राकृतिक सुंदरता वाले स्थानों का भ्रमण करने का अनुरोध किया। उन्होंने इस तरह के आयोजनों के साथ–साथ पर्यटन के लिए प्रोत्साहित करने वाले ऐसे प्रयासों के लिए पर्यटन मंत्रालय की सराहना की जिनके कारण पिछले पांच वर्षों में विदेशी पर्यटकों की संख्या में डेढ़ गुना वृद्धि हुई है। उन्होंने आगे कहा कि देश में पर्यटन बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराता है और राष्ट्रीय स्तर पर सकल घरेलू उत्पाद में उल्लेखनीय योगदान देता है। इस तरह के महोत्सवों के आयोजन से आम आदमी को देश में सांस्कृतिक तथा अन्य तरह के आयोजनों का अनुभव होता है और इससे भी लोग आपस में जुड़ते हैं।

इस अवसर पर माननीय पर्यटन मंत्री जी ने कहा कि पर्यटन पर्व देश की भव्य विविधता को सामने लाने और लोगों को अपने देश के विभिन्न हिस्सों को जानने के लिए प्रेरित करने का एक बहुसांस्कृतिक मंच है। उन्होंने महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर पर्यटन पर्व का उद्घाटन किए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने आगे कहा कि राष्ट्रपिता ने देश की आत्मा को समझने के लिए पूरे देश का भ्रमण किया था। हम भी पर्यटन के माध्यम से अपनी देश की विविध संस्कृति को जान सकते हैं और इससे देश के लोगों के करीब आ सकते हैं। प्रधानमंत्री

जी देश के ब्रांड एंबेसडर हैं और उनके नेतृत्व में पर्यटन क्षेत्र ने पिछले पांच वर्षों में उल्लेखनीय प्रगति की है। भारत की वैश्विक पर्यटन रैंकिंग वर्ष 2013 में 65वें स्थान से बेहतर होकर वर्ष 2019 में 34वें स्थान पर आ गई है। उन्होंने कहा कि पर्यटकों की संख्या दोगुनी करने के लक्ष्य को वर्ष 2022 से काफी पहले ही हासिल कर लिया जाएगा। उन्होंने लोगों से पर्यटकों की अपेक्षाकृत कम दिलचस्पी वाले स्थानों का पता लगाने का आग्रह किया क्योंकि इससे स्थानीय युवाओं को रोजगार मिलेगा।

माननीय मंत्री जी ने बताया कि सतत एवं स्वच्छ पर्यटन के बारे में महात्मा गांधी की विचारधारा को ध्यान में रखते हुए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के स्मारकों में विभिन्न संगठनों और पर्यटन मंत्रालय में एकल उपयोग वाले प्लास्टिक को चरणबद्ध ढंग से हटाने के प्रयास किए जा रहे हैं और संरक्षित स्मारकों के अंदर और इन स्मारकों के 100 मीटर के दायरे में प्लास्टिक को अनुमति नहीं दी जाएगी।

पर्यटन पर्व 2019' महात्मा गांधी की 150वीं जयंती को समर्पित था। इस पर्व के आयोजन का उद्देश्य 'देखो अपना देश' के संदेश का प्रचार–प्रसार करना है। इसका मुख्य लक्ष्य भारतीयों को देश के विभिन्नन पर्यटन स्थलों का भ्रमण करने के साथ–साथ 'सभी के लिए पर्यटन' के संदेश का प्रचार–प्रसार करना है।

'पर्यटन पर्व' के आयोजन का उद्देश्य, देश की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाना और 'सभी के लिए पर्यटन' के सिद्धांत को मजबूती प्रदान करना है।

पर्यटन पर्व के तीन घटक हैं :

क. **देखो अपना देश :** इसका उद्देश्य भारतीयों को अपने देश का भ्रमण करने के लिए प्रोत्साहित करना है। पर्यटन पर्व के आयोजन से पहले देश भर में अनेक गतिविधियां आयोजित की गई थी जिनमें पर्यटन के आकर्षण एवं अनुभवों को कवर करने वाली

फोटोग्राफी प्रतियोगिता, सोशल मीडिया पर प्रचार, पर्यटन से संबंधित प्रश्नोत्तरी, निबंध, वाद–विवाद और छात्रों के लिए चित्रकला प्रतियोगिताएं शामिल थीं।

ख. **सभी के लिए पर्यटन** : देश के सभी राज्यों में स्थित विभिन्न महत्वपूर्ण स्थलों पर पर्यटन संबंधी आयोजन किए गए। इन स्थलों पर आयोजित की जाने वाली गतिविधियों में संबंधित स्थलों के भीतर एवं आसपास जगमगाती रोशनी की व्यवस्था करना, नृत्य, संगीत, रंगमंच, कथावाचन के कार्यक्रम, संबंधि त स्थकलों के आसपास हितधारकों के लिए संवेदीकरण कार्यक्रम, पर्यटन प्रदर्शनियां, संस्कृति को दर्शाना, व्यंजन और हस्तशिल्प/ हथकरघा, गाइडेट हेरिटेज वॉक इत्या दि शामिल किए गए थे।

ग. **पर्यटन एवं गवर्नेंस** : पर्यटन पर्व से जुड़ी गतिविधियों के तहत देश भर में विभिन्न विषयों पर हितधारकों के साथ आपस में संवादात्मक सत्र एवं कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

पांच दिन तक चले इस उत्सव के दौरान समूचा राजपथ देश के विभिन्न भागों के नृत्य, संगीत और रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से जीवंत हो उठा था। यह पर्यटन पर्व का तीसरा वर्ष था। भारतवासियों को देश के विभिन्न पर्यटक स्थलों को देखने के लिए प्रोत्साहित करने और 'सबके लिए पर्यटन' के संदेश को प्रसारित करना है। दिल्ली में पर्यटन पर्व के अवसर पर राज्यों और संघ शासित प्रदेशों के साथ–साथ केंद्र सरकार के मंत्रालयों द्वारा 31 मण्डप लगाए गए थे। देशभर के व्यंजनों के अलग अलग 59 फूड स्टॉल भी लगाए थे। सूचना और प्रसारण मंत्रालय के ब्यूरो ऑफ आउटरीच कम्युनिकेशन द्वारा लगाई गई मल्टी मीडिया प्रदर्शनी इस पर्यटन पर्व के प्रमुख आकर्षणों में से एक थी।

इस अवसर पर लाइव फूड किचन की ओर से राज्यों के कुछ प्रमुख पारंपरिक व्यंजनों की पाक विधियों का प्रदर्शन किया गया। नवरात्रि के त्यौहार के मद्देनजर सभी प्रकार के आगंतुकों की पसंद को ध्यान में रखते हुए लगभग 18 'सात्विक फूड' स्टाल्स भी लगाए गए थे।

पर्यटन पर्व के कुछ प्रमुख आकर्षण इस प्रकार थे :–

राज्यों, पूर्वोत्तर परिषद, होटल प्रबंध संस्थानों, नेशनल एसोसिएशन ऑफ स्ट्रीट वेंडर्स ऑफ इंडिया के स्टॉलों का फूड कोर्ट।

राज्यों और संघ शासित प्रदेशों, पूर्वोत्तर परिषद, कपड़ा मंत्रालय द्वारा हस्तशिल्प, हथकरघा और शिल्प बाजार, अपने पर्यटन स्थलों और उत्पादों का प्रदर्शन करने के लिए राज्यों और संघ शासित प्रदेशों के थीम मंडप, सशस्त्र बलों के बैंड्स की प्रस्तुतियां, प्रदेशों की ओर से सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के नृत्य निर्देशन में सांस्कृति प्रस्तुति किचन स्टूडियो में लाइव कुकिंग प्रस्तुतियां आदि।

मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, आयुष मंत्रालय द्वारा योग प्रदर्शन और प्रस्तुतियां

- सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा '150 ईयर्स ऑफ सेलिब्रेटिंग महात्मा' पर डिजिटल प्रदर्शनी और सांस्कृतिक कार्यक्रम,
- खादी उत्पादों के साथ खादी ग्रामोद्योग का मंडप
- डाक विभाग द्वारा डाक टिकट संग्रह के प्रचार लिए:
  - माई स्टैम्प काउंटर
  - डाक टिकटों की बिक्री
  - डाक से संबंधित सामग्री की बिक्री
- आवास और शहरी कार्य मंत्रालय द्वारा 'स्वच्छता' और महात्मा गांधी के 150 साल को उजागर करने वाला थीम मंडप
- श्यामा प्रसाद मुखर्जी रूर्बन मिशन (SPMM), ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा ग्रामीण समूहों में किए गए पर्यटन केंद्रित विकास की झलक
- सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा सड़क सुरक्षा उपायों का प्रदर्शन और प्रचार
- उपभोक्ता कार्य विभाग द्वारा उपभोक्ता जागरूकता का प्रचार
- अन्य आकर्षण: मेहंदी, जादू, कठपुतली शो, कराओके, सेल्फी पॉइंट्स, बायोस्कोप, आदि।

पर्यटन पर्व में अंडमान–निकोबार द्वीप समूह, आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर, झारखंड, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान,सिक्किम, तमिलनाडु, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश के पर्यटन विभागों ने अपने अपने मंडपों के माध्यम से भाग लिया।

मोटे तौर पर लगाए गए एक अनुमान के अनुसार, 2.5 लाख से अधिक व्यक्तियों ने पर्यटन पर्व का दौरा किया। पांचों दिन विशेष तौर पर सप्ताहांत के दौरान भारी भीड़ देखी गई। पर्यटन पर्व के दौरान पर्यटन मंत्री श्री प्रह्लाद सिंह पटेल की अध्यक्षता में 4 अक्टूबर 2019 को राष्ट्रीय पर्यटन सलाहकार परिषद (एनटीएसी) की बैठक भी आयोजित की गई।

पर्यटन मंत्रालय ने भारत के 12 स्थलों (प्रतिष्ठित स्थलों समेत) के लिए ऑडियो गाइड सुविधा 'ऑडियो ओडिगोज' की शुरुआत

देशव्यापी 'पर्यटन पर्व 2019' के दूसरे दिन 03 अक्तूबर, 2019 को नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान पर्यटन मंत्रालय में सचिव श्री योगेंद्र त्रिपाठी ने,पर्यटन महानिदेशक श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की महानिदेशक श्रीमती ऊषा शर्मा तथा अन्यम वरिष्ठम अधिकारियों की उपस्थिति में देश के 12 स्थलों (प्रतिष्ठित स्थलों समेत) के लिए एक ऑडियो गाइड सुविधा 'ऑडियो ओडिगोज' की शुरुआत की। दिल्ली के गोल गुंबद के पास पर्यटक सुविधाओं के विकास के लिए दिल्ली सरकार और रेसबर्ड टेक्नोलॉजी के बीच एक समझौता ज्ञापन MoU का भी आदान–प्रदान किया गया

मीडिया से बातचीत करते हुए, पर्यटन सचिव श्री योगेंद्र त्रिपाठी ने बताया कि पर्यटन मंत्रालय की 'एक विरासत को अपनाओ, अपनी धरोहर, अपनी पहचान' योजना के तहत पर्यटक सुविधाओं के विकास के लिए अब तक 26 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इस परियोजना का लक्ष्य सभी हितधारकों के बीच तारतम्य विकसित करना और 'जिम्मेदार पर्यटन' को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय समुदायों और एकल रूप से लोगों का सक्रिय सहयोग लेना है।

उन्होंने बताया कि इस परियोजना को बहुत उत्साहजनक प्रतिक्रियाएं मिली हैं। इसके लिए आगे आई एजेंसियों में न सिर्फ सरकारी और निजी औद्योगिक घराने, व्यक्ति विशेष, बल्कि स्कूल और कानूनी फर्में भी शामिल हैं। इससे पहले, इस परियोजना के तहत देश भर में 106 स्थलों के लिए 38 एजेंसियों को 42 ''आशयपत्र'' जारी किए गए। 23 स्थलों और दो तकनीकी पहलों के लिए 25 समझौता ज्ञापनों पर भी हस्ताक्षर किए गए हैं।

सचिव महोदय ने कहा कि 'एक विरासत को अपनाओ, अपनी धरोहर, अपनी पहचान' योजना पर्यटन मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय एवं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और राज्य सरकारों या संघ शासित प्रदेशों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। इसका उद्देश्य सरकारी कंपनियों, निजी क्षेत्र की कंपनियों तथा कार्पोरेट क्षेत्र के लोगों को हमारी विरासतों को विकास के जरिये ज्यादा टिकाऊ बनाने, पर्यटन के लिए विश्व स्तरीय संचालन एवं रखरखाव की संरचना, एएसआई/राज्य के तहत आने वाली विरासतों के पास सुविधाओं और देश के अन्य पर्यटन स्थलों की जिम्मेदारी उठाने के लिए शामिल करना है।

उन्होंने आगे कहा कि आज हमने पर्यटकों की सुविधा के लिए ऑडियो गाइड 'ऑडियो ओडिगोज' की शुरुआत की है। ऑडियो गाइड 'ओडिगो' विजुअल और वॉयस ओवर स्पोट के साथ भारत सरकार द्वारा सत्यापित सामग्री पेश करता है। 'ऑडियो ओडिगो' की मदद से अब पर्यटक भारतीय संस्कृति एवं विरासत की ऐतिहासिक यात्रा कर सकेंगे। 'ऑडियो ओडिगो' ऐप में टूर के दौरान आसान पथ–प्रदर्शन यानी नेवीगेशन के लिए नक्शा भी दिया गया है। श्रोताओं को इतिहास के विभिन्न संस्करणों जैसे सारांश, विस्तृत इतिहास और पॉडकास्ट की पेशकश की जाएगी। ऑडियो को उनकी पसंदीदा भाषा एवं इतिहास के संस्करण में चुना जा सकता है। 'ऑडियो ओडिगो' को अब सभी एंड्रायड और आईओएस मोबाइल फोन पर डाउनलोड किया जा सकता है।

पर्यटन महानिदेशक श्रीमती मीनाक्षी शर्मा ने मीडिया को बताया कि ऑडियो गाइड सुविधा ऑडियो ओडिगोज को 12 स्थलों पर इस्तेमाल किया जा सकेगा। इनमें राजस्थान का आमेर का किला, दिल्ली में चांदनी चौक, लाल किला, पुराना किला, हुमायूं का मकबरा, उत्तर प्रदेश में फतेहपुर सीकरी, ताज महल, गुजरात में सोमनाथ और ढोलावीरा, मध्य प्रदेश में खजुराहो, तमिलनाडु में महाबलिपुरम और बिहार में महाबोधि मंदिर शामिल है। उन्होंने कहा कि इस ऑडियो गाइड ऐप को रेसबर्ड टेक्नोलॉजी कंपनी ने अपनी कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी – CSR के तहत विकसित किया है।

लद्दाख में प्रथम साहसिक ट्रेकिंग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

लद्दाख में पर्यटन के विकास के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिकोण के अनुसरण में तथा पर्यटन एवं संस्कृति राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रह्लाद सिंह पटेल के नेतृत्व में, पर्यटन मंत्रालय के अधीन 'भारतीय स्कीइंग एण्ड माउंटेनियरिंग संस्थान', गुलमर्ग ने भारतीय यात्रा एवं पर्यटन प्रबंधन संस्थान के सहयोग से ट्रेकिंग के क्षेत्र में एक साहसिक पर्यटन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम शुरू किया है।

पाठ्यक्रम का लक्ष्य पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देना और युवाओं में ट्रेकिंग का मूलभूत कौशल विकसित करना है तीन बैचों में 90 स्थानीय युवाओं को प्रशिक्षित किया गया है।

इस क्षेत्र में यह अपने तरह का पहला पाठ्यक्रम है। दस दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में स्थानीय युवाओं को माउंटेन ट्रेकिंग के विभिन्न पक्षों के बारे में व्यावहारिक अनुभव से प्रशिक्षित किया गया।

संक्षिप्त विवरण के साथ ट्रेकिंग कार्यक्रम का प्रथम बैच शुरू किया गया था। इसमें स्पीथु, थेन, जिनचेन, रूम्बाक, स्टॉक ला बेस, स्टॉक होकर प्रतिभागी 10 दिनों में लेह पहुंचें। इस प्रशिक्षण का लक्ष्य युवाओं में ट्रेकिंग का मूलभूत कौशल विकसित करना है। बाद में ये युवा गाइड अथवा उद्यमी बनने में इन कौशलों का उपयोग कर सकेंगे।

पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग: भारत और फिनलैंड के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

भारत और फिनलैंड के बीच लंबे समय से राजनयिक और आर्थिक क्षेत्र में सुदृढ संबंध रहे हैं। अब दोनों देशों ने इस संबंधों को आगे और सशक्त बनाने की दिशा में कदम बढ़ाते हुए पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

भारत में फिनलैंड से बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। इस लिहाज से विदेशी पर्यटकों के मामले में फिनलैंड भारत के लिए एक बड़ा पर्यटन बाजार है। वर्ष 2018 में फिनलैंड से कुल 21239 पर्यटक भारत आए थे। ऐसे में दोनों देशों के बीच पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर से इस क्षेत्र में सहयोग की संभावनाएं और आगे बढ़ेंगी।

समझौता ज्ञापन के अनुसार पर्यटन के क्षेत्र में पर्यटन से संबंधित आंकड़े, ज्ञान और विशेषज्ञता आदि साझा करने तथा पर्यटन नीति योजना एवं कार्यान्वयन और बहुपक्षीय विकास कार्यक्रमों तथा अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों की परियोजनाओं के संदर्भ में समान हित से जुड़ी भागीदारी को प्रोत्साहित करते हुए द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाना है।

पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए भारत और फिनलैंड ने करार किया है। इसके लिए भारत की ओर से पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार),श्री प्रहलाद सिंह पटेल तथा फिनलैंड की ओर से वहां के आर्थिक और रोजगार मामलों के मंत्री श्री तीमो हाराक्का ने 21 नवम्बर, 2019 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर श्री तीमो हाराक्का के साथ फिनलैंड का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मंडल मौजूद था जिसमें फिनलैंड के काउंसलर और नामित की गई राजदूत सुश्री रित्वाकोकू रोडे शामिल थीं। पर्यटन मंत्रालय के सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

चीन के कुनमिंग में तीन दिवस अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मेले में भागीदारी

भारत और चीन के बीच पर्यटन और व्यापार बढ़ाने की दृष्टि से, भारतीय उद्योग परिसंघ (CII) के सहयोग से पर्यटन मंत्रालय द्वारा 15–17 नवंबर, 2019 के दौरान चीन के कुनमिंग में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मेले (CITM) में भाग लिया।

15 नवंबर, 2019 को पर्यटन मंत्रालय में अपर महानिदेशक सुश्री रूपिंदर बरार और ITC होटल के मुख्य कार्यकारी एवं CII की पर्यटन व आतिथ्य पर राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष श्री दीपक हक्सर ने कुनमिंग अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मेले में भारतीय मंडप का उद्घाटन किया।

भारत और चीन के बीच पर्यटन एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में उभर रहा है। दोनों पक्ष इस द्विपक्षीय व्यापार और सरकारी सहयोग के बढ़ते स्तर से प्रभावित है। दुनिया की 40% आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाले दोनों देशों के बीच पर्यटन यात्रा का भविष्य विकास के वर्तमान प्रक्षेपवक्र (ट्रजेक्ट्री) के आधार पर सकारात्मक है। भारत सरकार अपनी 'एक्ट ईस्ट' रणनीतियों के माध्यम से चीन से अधिकाधिक पर्यटकों को आकर्षित करने की इच्छुक है।

कुनमिंग अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मेला एशिया का सबसे बड़ा यात्रा कार्यक्रम है जो एशिया में यात्रा के लिए नवीन विचारों और अवधारणाओं को प्रस्तुत करता है। मेले में स्थापित बड़े भारतीय मंडप में भारत के पर्यटन से जुड़े विभिन्न उत्पादों और सेवाओं के साथ बौद्ध परिपथ के बारे में विस्तार से सूचनाएं प्रस्तुत की गईं ताकि चीनी यात्रियों को भारत आने के लिए आकर्षित किया जा सके।

यह आयोजन भारत के विभिन्न टूर ऑपरेटरों और ट्रैवल एजेंटों एवं होटल ऑपरेटरों जैसे अन्य सेवा प्रदाताओं को भी एक साथ जोड़ सकेगा, जिन्हें चीन में अपने समकक्षों के साथ बातचीत करने और भारत एवं चीन के बीच मजबूत पर्यटक सर्किट बनाने में मदद मिलेगी।

35 सदस्यीय भारतीय प्रतिनिधिमंडल में पर्यटन से जुड़े प्रमुख पक्षों जैसे होटलियर्स, ट्रैवल एजेंट, एयरलाइंस, रेलवे सहित आदि के प्रतिनिधि शामिल थे। इस मेले में भारतीय मंडप में भारतीय विरासत के शास्त्रीय नृत्यों और योग के आसनों को प्रदर्शित किया गया।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा 12–14 नवंबर, 2019 की अवधि में चीन के तीन शहरों – चेंगदू, चोंगकिंग और कुनमिंग में अतुल्य भारत की श्रृंखला के सफल रोड शो का भी आयोजन किया गया था।

''अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट'' (ITM), इम्फाल, मणिपुर

पर्यटन मंत्रालय द्वारा पूर्वोत्तर राज्यों के साथ मिलकर 23 नवंबर से 25 नवंबर, 2019 के दौरान इम्फाल, मणिपुर में ''अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट'' (ITM) का आयोजन किया गया। पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल और मणिपुर के मुख्यमंत्री, श्री एन.बीरेन सिंह ने 23 नवंबर, 2019 को मुख्य कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर सचिव (पर्यटन) श्री योगेन्द्र त्रिपाठी और उत्तर–पूर्वी राज्यों के और अन्य गणमान्य व्यक्ति पर उपस्थित थे। यह 8वां अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट है जो घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में इस क्षेत्र की पर्यटन क्षमता को उजागर करने के उद्देश्य से उत्तर पूर्वी क्षेत्र में प्रति वर्ष आयोजित किया जाता है।

शाम को ITM 2019 के सभी प्रतिनिधियों ने भाग्यचंद्र ओपन एयर थिएटर (BOAT) में आयोजित किए गए संगई महोत्सव के उद्घाटन समारोह में भाग लिया, जिसका उद्घाटन मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने आसियान देशों के आठ मिशन प्रमुखों की उपस्थिति में किया। सभी आमंत्रित लोगों ने मणिपुरी सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लिया।

देश के उत्तर पूर्व क्षेत्र में अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा और सिक्किम राज्य शामिल हैं, जो विभिन्न पर्यटन स्थलों और उत्पादों से संपन्न है। इस क्षेत्र की विविध स्थलाकृति, इसकी वनस्पतियां और वन्य जीव, प्राचीन परंपराएं, जनजातीय समुदाय की जीवन शैली, यहां के मेले एवं उत्सव, कला और शिल्प की समृद्ध विरासत इसे एक अवकाश का गंतव्य बनाते हैं, जिनके बारे में पर्यटकों को बताए जाने की जरूरत है।

8वां अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट, ''सतत पर्यटन को आर्थिक विकास और रोजगार के एक साधन'' के रूप में सुर्खियों में था। इसमें भारतीय घरेलू टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन के प्रतिनिधि श्री चेतन गुप्ता, उत्तर–पूर्व क्षेत्र के एक प्रमुख टूर ऑपरेटर श्री अरजीत पुरकायस्थ और भारतीय एडवेंचर टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष कैप्टन स्वदेश कुमार ने ''आर्थिक विकास और रोजगार के लिए एक सतत पर्यटन के रूप में पर्यटन'' पर चर्चा की।

उत्तर पूर्व क्षेत्र में सामान्य रूप से पर्यटन को बढ़ावा देने पर विचार–विमर्श के अलावा, मार्ट सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए भी

एक मंच प्रदान करता है। हमारे पड़ोस में अन्य देशों के साथ उत्तर पूर्वी क्षेत्र के राज्यों में आने जाने के उन्नत सम्पर्क प्रदान करेगा। क्रेता और मीडिया दुनिया भर से और देश के विभिन्न क्षेत्रों से प्रतिनिधि मार्ट में भाग ले रहे हैं और उत्तर पूर्व क्षेत्र के विक्रेताओं के साथ एक–एक बैठक में शामिल हुए। इससे क्षेत्र से पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से क्षेत्र से पर्यटन उत्पाद आपूर्तिकर्ता अंतरराष्ट्रीय और घरेलू खरीदारों तक पहुंच बना पाएंगे। ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, कंबोडिया, चेक, दुबई, इटली, जापान, ओमान, कोरिया, म्यांमार, मलेशिया, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, सिंगापुर, स्पेन, थाईलैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, वियतनाम 19 देशों के कुल 36 विदेशी सेवा प्रदाता प्रतिनिधियों ने मार्ट में भाग लिया। इसके अलावा, विदेशी प्रतिनिधि, देश के अन्य हिस्सों से पर्यटन क्षेत्र में 49 घरेलू हितधारकों और उत्तर पूर्वी राज्यों के 109 विक्रेताओं ने भी मार्ट में भाग लिया। इन पूर्वोत्तर राज्यों के राज्य पर्यटन विभागों के प्रतिनिधि भी अपने–अपने क्षेत्रों के पर्यटन स्थलों का प्रदर्शन करने और प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करने के लिए मौजूद थे। इन तीन दिनों के आयोजन के अलावा राज्य सरकारों द्वारा उनकी पर्यटन क्षमता, सांस्कृतिक संध्याओं, इम्फाल में और आसपास के स्थानीय आकर्षणों की दर्शनीय स्थलों की यात्राएं भी शामिल हैं। पूर्वोत्तर राज्यों के राज्य पर्यटन विभागों द्वारा एक प्रदर्शनी जिसमें सुंदर हस्तशिल्प और हथकरघा का प्रदर्शन शामिल है, संबंधित संबंधित राज्यों के पर्यटन उत्पादों को मामला दिखाने के लिए भी आयोजित किया जा रहा है।

मध्य प्रदेश की राज्य सरकार को भी भाग लेने और एक प्रस्तुति देने के लिए आमंत्रित किया

गया है क्योंकि यह ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' पहल के तहत मणिपुर के साथ युग्मित यानि जोड़ा गया राज्य है। इसलिए मध्य प्रदेश के लगभग सौ से अधिक छात्रों को इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था। भोपाल से विशेष रूप से आए एक गोंड कलाकार ने अपने बनाए गए पारंपरिक गोंड चित्रों को प्रदर्शित किया गया। उत्तर पूर्वी क्षेत्र के विक्रेताओं के लिए अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू खरीदारों के बीच **B2B** सत्र का आयोजन इस मार्ट का एक और महत्वपूर्ण कार्यक्रम था।

मार्ट के बाद विदेशी प्रतिनिधियों को उत्तर–पूर्वी राज्यों में के परिचय दौरे (Fam Tour) कराने को अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। यह उत्तर पूर्वी क्षेत्र के समृद्ध और विविध पर्यटन उत्पादों के बारे में जागरूकता पैदा करेगा और उन्हें गंतव्य का पहला अनुभव प्रदान करेगा। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट का आयोजन उत्तर पूर्वी राज्यों में क्रमवार (रोटेशन के आधार पर) किया जाता है। मणिपुर ने दूसरी बार इस मार्ट की मेजबानी की है। इससे पहले गुवाहाटी, तवांग, शिलांग, गंगटोक, अगरतला में मार्ट आयोजित किए जा चुके हैं।

पर्यटन मंत्रालय में सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी 03 अक्टूबर 2019 को नई दिल्ली में पर्यटन पर्व–2019 के अवसर पर दिल्ली की गोल गुंबद के पास पर्यटक सुविधाओं के विकास के लिए दिल्ली सरकार और रेसबर्ड टेक्नोलॉजी के बीच हुए समझौता ज्ञापन के आदान–प्रदान के अवसर पर उपस्थित थे।

पर्यटन मंत्रालय में सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी 03 अक्टूबर 2019 को नई दिल्ली में पर्यटन पर्व–2019 के अवसर पर भारत के 12 स्थलों (प्रतिष्ठित स्थलों समेत) के लिए एक ऑडियो गाइड सुविधा की शुरुआत करते हुए।

03 अक्टूबर 2019 को नई दिल्ली में श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, सचिव (पर्यटन) पर्यटन पर्व–2019 के अवसर पर भारत के 12 स्थलों (प्रतिष्ठित स्थलों समेत) के लिए एक ऑडियो गाइड सुविधा को शुरू करने के बाद उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए।

मिजोरम के पर्यटन मंत्री श्री रॉबर्ट रोमाविया रॉयटेन 14 नवंबर 2019 को नई दिल्ली में पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल से मुलाकात की।

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल और फिनलैंड के रोजगार मंत्री श्री तीमो हाराक्का ने 21 नवंबर, 2019 को नई दिल्ली में एक बैठक के दौरान भारत और फिनलैंड के बीच पर्यटन सहयोग पर एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर सचिव (पर्यटन) श्री योगेन्द्र त्रिपाठी भी उपस्थित थे।

पर्यटन मंत्रालय के सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी 19 दिसंबर 2019 को नई दिल्ली में भारतीय उद्योग परिसंघ (CII) के 15वें वार्षिक पर्यटन सम्मेलन को संबोधित करते हुए।

समझदारी से काम लें : स्वच्छता अभियान में सहयोग दें ।

प्रस्तुति- डॉ. विश्वरंजन
कंसलटेंट, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग
जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार, न्यू दिल्ली
ईमेल- vishwranjan@yahoo.com मो. 9852583535

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, 7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग, 36, जनपथ, नई दिल्ली–110011

ई–मेल : editor.atulyabharat@gmail.com

पर्यटक हैल्प लाइन 1800111363 लघु कोड 1363 24x7

Designed & Printed by : Current